सामुदायिक
GOONJ
RNI No. MPBIL/2022/84878
National News Magazine
वर्ष : 02 अंक : 02 दिसंबर 2023 मूल्य: ₹ 50 पृष्ठ : 52

नया संकल्प, नई सरकार

मोदी सरकार की गारंटी

लाभार्थियों तक योजनाओं की

नवंबर 2023 का अंक

ग्वालियर, दिसंबर 2023
(वर्ष 02, अंक 02, , पृष्ठ 52, मूल्य 50 रुपए)

प्रेरणास्रोत
श्रीमती संध्या सिकरवार

चेयरमैन
डॉ. जे. एस. सिकरवार
सम्पादक
कृति सिंह

उप संपादक
अंतिमा सिंह -कौस्तुभ सिंह
सहायक संपादक
अछेन्द्र सिंह कुशवाह
सलाहकार संपादक
राजीव तोमर, भूपेन्द्र तोमर
कार्यकारी संपादक
डॉ. आर. एन. एस. तोमर
सब एडिटर/एडिटिंग
इमरान गौरी
कानूनी सलाहकार
एड. अरविन्द दूदावत
एडिटोरियल प्रभारी
स्तुति सिंह
छायांकन/सिटी रिपोर्टर
अनिल सिंह सिकरवार
न्यूज एंकर
प्रिया शिन्दे, कल्पना पाल
संकलन
अभय बघेल, स्निग्ध तोमर

गूंज पत्रिका संपादकीय कार्यालय
ई-69/70, हरिशंकरपुरम लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश
(संपर्कः 7880075908)

Inside Story

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक कृति सिंह के लिए गूंज ई 69-70 हरिशंकर पुरम ग्वालियर मध्य प्रदेश से मुद्रित एवं ई 69-70 हरिशंकर पुरम ग्वालियर मध्य प्रदेश से प्रकाशित । संपादक-कृति सिंह **RNI.No-MPBIL/2022/84878**

IN THIS ISSUE...

MY POINT

नई उम्मीदें, नया साल

नया साल है नई उमंगें, नए जोश के साथ मिलकर काम करेंगे, हम लें हाथों में हाथ लेकर हम उम्मीद नई आगे बढ़ते जाएंगे प्रगति के पथ पर आगे ही चलते जाएंगे। इस नए साल के साथ हम उम्मीदों की फसल उगाएंगे, एक नई जिन्दगी की शुरुआत करेंगे,मंजिल की ओर उड़ान लगाएंगे। इस नए साल के साथ एक उम्मीद जुड़ी है के सबके सपने इस साल साकार हो जाएंगे। नए साल पर गूंज मीडिया ग्रुप के सभी सुधि पाठकों को नव वर्ष 2024 की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं, मेरी कामना यही है आने वाला यह साल आपके जीवन में सुख-समृद्धि खुशहाली लेकर आए। आने वाले नए साल में हम नए संकल्प लें और पुरानी गलतियों से सबक लें।

नया साल उन अधूरे संकल्पों को पूरा करने का समय भी है। ऐसे अधूरे संकल्प भी बहुत सारे हैं। हम साल 2024 में उन अधूरे संकल्पों को पूरा करने में जी-जान लगा दें। यह भी अपने आप में एक नई शुरुआत ही होगी। यकीन मानिए, जो बीत गया, उसमें भी बहुत कुछ अच्छा था, जिसे साथ लिए चलना होगा। जैसे, महामारी के दौर में हम जिस तरह मिलकर लड़े, जिस तरह से हमने एक-दूसरे की चिंता की, वह काबिले तारीफ है।

हर बार नया साल हर किसी के लिए एक नई उम्मीद बनकर आता है. लोगों नए साल से तरह-तरह की उम्मीदें बांध लेते हैं. उन्हें लगने लगता है कि यह साल उनके लिए गुड लक लेकर आएगा. खुशियां और तरक्की मिलेगी. नए-नए रास्ते और मंजिलें तय होंगी. साल की शुरुआत होती नहीं कि हमारे प्लान की लिस्ट पहले से ही तैयार हो जाती है. हालांकि जिंदगी में कुछ भी बिना मेहनत किए नहीं मिलता. हर चीज़ को पाने के लिए जी जान लगानी पड़ती है. जीवन में बुरे वर्तमान को बदलने के लिए प्रयास करने होते हैं. जैसे आप किसी काम को किसी भी हाल में करने के लिए दृढ़ संकल्प लेते हैं. ठीक उसी तरह आपको अपनी जिंदगी संवारने के लिए भी आने वाले नए साल पर कुछ अहम संकल्प लेने होंगे. वो भी ऐसे संकल्प जो आपकी जिंदगी में बदलाव लाने का काम करें और आपके दिशाहीन सपनों को एक नई मंजिल देने का काम करें. आइए यहां हम कुछ ऐसे ही संकल्पों के बारे में बताते हैं, जिन्हें आपको नए साल पर जरूर लेना चाहिए.

नए साल पर आप यह संकल्प जरूर लें. अगर आपको लगता है कि आपकी कोई आदत बहुत बुरी है तो उसे तुरंत बदल लें. हम सब में कई आदतें बुरी होती हैं, जिन्हें बदला जाना चाहिए. क्योंकि आगे चलकर हमारे लिए बड़ी परेशानी बन सकती है. जिंदगी के सफर को सिर्फ काटना नहीं होता बल्कि जीना भी होता है और जीने के लिए कुछ लक्ष्य निर्धारित करने होते हैं, जो हमारे जीवन के सफर को रोचक और खुशहाल बनाते हैं. इसलिए अगर आपने अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित नहीं किया है तो नए साल पर इसका संकल्प जरूर लें.

कृति सिंह

संपादक

"नया साल उन अधूरे संकल्पों को पूरा करने का समय भी है। ऐसे अधूरे संकल्प भी बहुत सारे हैं। हम साल 2024 में उन अधूरे संकल्पों को पूरा करने में जी-जान लगा दें। यह भी अपने आप में एक नई शुरुआत ही होगी। यकीन मानिए, जो बीत गया, उसमें भी बहुत कुछ अच्छा था, जिसे साथ लिए चलना होगा। जैसे, महामारी के दौर में हम जिस तरह मिलकर लड़े, जिस तरह से हमने एक-दूसरे की चिंता की, वह काबिले तारीफ है।

मोहन सरकार के 28 मंत्रियों ने ली शपथ

मध्य प्रदेश में 18 कैबिनेट मंत्री, 6 राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार और 4 राज्य मंत्रियों ने ली शपथ

मध्य प्रदेश में नए सीएम डॉ. मोहन यादव की कैबिनेट का चेहरा साफ हो गया है। शुरुआत में सोमवार को 28 मंत्रियों ने शपथ ली है। सीएम की कैबिनेट में ग्वालियर से सिंधिया गुट के नेता व शिवराज सरकार में ऊर्जा मंत्री रहे प्रद्युम्न सिंह तोमर और कुशवाह समाज से नारायण सिंह कुशवाह को जगह मिली है। यहां बता दें कि प्रद्युम्न सिंह तोमर अभी तक चार बार चुनाव जीत चुक हैं। मध्य प्रदेश के राज्यपाल मंगुभाई पटेल राजभवन में मंत्रियों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलवा रहे हैं। राज्यपाल ने सबसे पहले विजय शाह, कैलाश विजयवर्गीय, प्रहलाद सिंह पटेल, राकेश सिंह, करण सिंह वर्मा और राव उदय प्रताप सिंह को कैबीनेट मंत्री पद की शपथ दिलाई। इनके बाद संपतिया उइके, तुलसीराम सिलावट, एंदल सिंह कंसाना, निर्मला भूरिया, गोविंद सिंह राजपूत और विश्वास सारंग, नागर सिंह चौहान, नारायण सिंह कुशवाह, प्रद्युमन सिंह तोमर, राकेश शुक्ला, चेतन काश्यप और इंदर सिंह परमार को कैबीनेट मंत्री पद की शपथ दिलाई।

कैबिनेट में ग्वालियर से प्रद्युम्न और नारायण सिंह

प्रहलाद सिंह पटेल, कैलाश विजयवर्गीय, राकेश सिंह, तुलसीराम सिलावट, प्रद्युम्न सिंह तोमर, नारायण सिंह कुशवाह, एंदल सिंह कंसाना, निर्मला भूरिया, गोविंद सिंह राजपूत कैबिनेट मंत्री, पहली बार की विधायक कृष्णा गौर भी बनीं मंत्री

इन्हें मिला स्वतंत्र प्रभार

कृष्णा गौर, धर्मेंद्र लोधी, दिलीप जायसवाल, गौतम टेटवाल, लखन पटेल और नारायण सिंह पवार ने राज्य मंत्री स्वत्रंत प्रभार की शपथ ली।

ये बने राज्य मंत्री

नरेश शिवाजी पटेल, प्रतिमा बागड़ी, राधा सिंह और दिलीप अहिरवार को राज्यमंत्री पद की शपथ दिलाई। करण सिंह वर्मा और विजय शाह आठवीं बार चुनाव जीते हैं जबकि कैलाश विजयवर्गीय सात बार चुनाव जीते हैं, प्रहलाद सिंह पटेल पहली बार विधानसभा चुनाव जीते हैं। तुलसीराम सिलावट छठवीं, एंदल सिंह कंसाना और निर्मला भूरिया पांचवीं बार विधायक बने हैं। सीएम मोहन यादव ने कहा कि आज राज्यपाल मंगुभाई पटेल से मुलाकात हुई। उन्होंने कहा, महामहिम हमारे नए मंत्रीमंडल को शपथ दिलाएंगे। पीएम नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के नेतृत्व में और सभी वरिष्ठ नेताओं के मार्गदर्शन में नया मंत्रिमंडल गठन के साथ प्रदेश के बेहतरी के लिए काम करेगा।

विकसित भारत संकल्प यात्रा

स्वच्छता की लहर से स्वच्छता का संदेश दिया, गूंज मीडिया हाऊस द्वारा बनाए गए बधाई ग्वालियर गाने की लॉन्चिंग की गई

● गूंज न्यूज नेटवर्क, ग्वालियर

विकसित भारत संकल्प यात्रा के तहत नगर निगम बाल भवन में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत बाल कलाकारों

द्वारा गणेश वंदना से की गई जिसके बाद छात्राओं द्धारा राम स्तुति, स्वच्छता की लहर से स्वच्छता का संदेश दिया एवम् गूंज मीडिया हाऊस द्वारा बनाए गए बधाई ग्वालियर गाने की लॉन्चिंग की गई।

यह एक बहुत बडा अवसर है जिसमें केंद्र व प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ लेकर हम स्वयं जरूरतमंद, गरीब, शोषित एवं पीड़ित लोगों के बीच पहुंच रहे हैं। यह योजना केवल शासकीय अधिकारियों की जिम्मेदारी नहीं बल्कि हम सभी की जिम्मेदारी है। हम सभी को आज संकल्प लेना है कि शासन की योजनाओं का लाभ जन-जन तक पहुंचे।

इसके लिए हम लगातार कार्य करेंगे और हमारे मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव लगातार गरीबों और समाज के प्रत्येक वर्ग के विकास के लिए चिंता कर रहे हैं। उक्ताशय के विचार भितरवार विधायक मोहन सिंह राठौर ने बाल भवन में आयोजित विकसित भारत संकल्प यात्रा के शुभारंभ के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किए। कार्यक्रम के दौरान देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा मध्य प्रदेश में वर्चुअली विकसित भारत संकल्प यात्रा एवं हितग्राही मूलक शिविर का शुभारंभ किया गया। जिसका सीधा प्रसारण बाल भवन सभागार में किया गया। इस अवसर पर बीज विकास निगम के पूर्व अध्यक्ष मुन्नालाल गोयल, भारतीय जनता पार्टी ग्वालियर ग्रामीण के अध्यक्ष कौशल शर्मा, आयुक्त नगर निगम हर्ष सिंह, सीईओ जिला पंचायत विवेक कुमार, पार्षद श्रीमती रेखा त्रिपाठी, श्रीमती ममता शर्मा, श्रीमती अपर्णा पाटिल, श्रीमती अनीता रत्नाकर, श्रीमती अंजना हरीबाबू शिवहरे, विवेक त्रिपाठी, ब्रजेश श्रीवास, महेन्द्र आर्य, भगवान सिंह

कुशवाह, मनोज यादव, देवेन्द्र राठौर, गूँज मीडिया ग्रुप की डायेरक्टर कृति सिंह, भाजपा युवा मोर्चा के जिला अध्यक्ष प्रतीक शर्मा, भाजपा जिला महामंत्री विनोद शर्मा, विनय जैन, सुघर सिंह पवैया, राजू पलैया सहित अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत अपर आयुक्त आरके श्रीवास्तव एवं विजय राज द्वारा किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए आयुक्त नगर निगम हर्ष सिंह ने बताया कि विकसित भारत

संकल्प यात्रा शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में निकाली जा रही है। अतिथियों ने हरी झंडी दिखाकर यात्रा को किया रवाना विकसित भारत संकल्प यात्रा के लिए केन्द्र सरकार द्वारा विशेष रूप से तैयार किए गए रथों को अतिथियों द्वारा हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया गया। यह रथ शहर के सभी वार्डों, गली मोहल्लों में पहुंचकर आम नागरिकों को केन्द्र सरकार व राज्य सरकार की योजनाओं के बारे में जानकारी देगें एवं नागरिकों को योजनाओं का लाभ दिलाएगें। विशेष रूप से तैयार किए गए रथों में एलईडी स्क्रीन के माध्यम से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी आमजन को संबोधित करेगें। इसमें क्यूआर कोड के माध्यम से आम नागरिक क्विज प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। वेब कैमरे के माध्यम से आम नागरिक अपने अनुभव साझा कर सकते हैं एवं सेल्फी के माध्यम से आमजन विकसित भारत संकल्प यात्रा ब्रांड एंबेसडर बन सकते हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की हुई प्रस्तुति

विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति कलाकारों द्वारा दी गई। जिसमें गूंज रेडियो के निर्देशन में विभिन्न स्कूल के छात्र-छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुति दी।

इन योजनाओं का दिया गया लाभ

भारत विकसित संकल्प यात्रा के शुभारंभ के अवसर पर पीएम स्व निधि, पीएम आवास योजना, स्वच्छ भारत अभियान, अमृत योजना, पीएम मुद्रा लोन, पीएम विश्वकर्मा योजना, स्टार्टअप इंडिया, स्टैंड अप इंडिया, पीएम उज्जवला योजना, आयुष्मान भारत योजना, पीएम जन औषधि जन योजना, उजाला योजना, सौभाग्य योजना एवं खेलो इंडिया के तहत हितग्राहियों को हितलाभ प्रदान किया गया।

इन स्थानों पर आयोजित होंगे कैम्प

भारत विकसित संकल्प यात्रा के द्वारा आज इन स्थानों पर कैंप आयोजित किए जाएगें। जिसमें दिनांक 17 दिसम्बर 2023 को वार्ड 1,4 व 5 के लिए मोतीझील ग्वालियर एवं सेंट थॉमस स्कूल चन्द्र नगर, दिनांक 18 दिसम्बर 2023 को वार्ड 6, 9 व 10 के लिए बम भोले की बगिया एवं कैथ वाली बगिया में कैंप आयोजित किए जाएगें।

"सिटी ऑफ म्यूजिक" ग्वालियर में गूंजीं स्वर लहरियां

संगीतधानी ग्वालियर में विश्व संगीत समागम तानसेन समारोह का शुभारंभ

● गूंज न्यूज नेटवर्क, ग्वालियर

संगीतधानी ग्वालियर में रविवार की सांध्यबेला में विश्व संगीत समागम तानसेन समारोह की मुख्य सभाओं का शुभारंभ हुआ। जिला पंचायत की अध्यक्ष श्रीमती दुर्गेश कुंअर सिंह जाटव, राज्य शासन के संस्कृति विभाग के प्रमुख सचिव श्री शिवशेखर शुक्ला, संचालक संस्कृति विभाग श्री अदिति कुमार त्रिपाठी, निदेशक उस्ताद अलाउद्दीन खां कला एवं संगीत अकादमी श्री जयंत माधव भिसे एवं राजा मान सिंह तोमर संगीत एवं कला विश्व विद्यालय के कुलपति प्रो. साहित्य कुमार नाहर सहित अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर इस साल के तानसेन समारोह का शुभारंभ किया।

यहाँ हजीरा स्थित सुर सम्राट तानसेन की समाधि के समीप ग्वालियर दुर्ग के ऐतिहासिक मानसिंह महल की थीम पर बने भव्य एवं आकर्षक मंच पर शास्त्रीय संगीत के देश के सर्वाधिक प्रतिष्ठित महोत्सव तानसेन समारोह की संगीत सभाएँ सज रहीं हैं।

इस साल के तानसेन समारोह की पहली संगीत सभा की शुरूआत पारंपरिक रूप से स्थानीय माधव संगीत महाविद्यालय ग्वालियर के आचार्यों व विद्यार्थियों द्वारा

प्रस्तुत प्रशस्ति एवं ध्रुपद गायन के साथ हुई। डॉ. वीणा जोशी के निर्देशन में रागमाला (राग धनाश्री, गौरी, यमन व खमाज) में प्रस्तुत प्रशस्ति के बोल थे ध्रुव कंठ स्वरोदगार। इसके बाद राग शंकरा में एक ध्रुपद बंदिश पेश की, जिसके बोल थे ङ्क ÷शिव शंकर महेश्वर आदिदेव महादेव÷ । तबले पर डॉ. विनय बिन्दे व डॉ. प्रणव पराड़कर और वायोलिन पर श्री अंकुर धारकर व श्री अनिकेत तारलेकर ने संगत की। तानसेन समारोह के तहत अलंकरण समारोह 25 दिसम्बर को सायंकाल आयोजित होगा। शास्त्रीय संगीत के देश के मूर्धन्य गायक पं. गणपति भट्ट हासणगि धारवाड़ को वर्ष 2022 के तानसेन सम्मान से अलंकृत किया जायेगा। साथ ही वर्ष 2022 का राजा मानसिंह तोमर सम्मान उज्जैन के मालव लोक कला केन्द्र को प्रदान किया जायेगा। इस सभा का शुभारंभ राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय ग्वालियर के ध्रुपद गायन से होगा। सभा में श्री सुमित आनंद दिल्ली का ध्रुपद गायन, श्री ईशान घोष मुम्बई का तबला वादन, श्रीमती मधुमिता भट्टाचार्य उपाध्याय वाराणसी का गायन और उस्ताद लतीफ खाँ मुम्बई व उस्ताद सरवर हुसैन कोलकता की सारंगी जुगलबंदी की प्रस्तुति होगी।

GOONJ तानसेन समारोह-2023

रूहानी संगीत से महकी तानसेन की देहरी

सुविख्यात सूफ़ियाना गायिका ऋचा शर्मा ने बिखेरे संगीत के मनमोहक रंग

सूफियाना व भक्ति संगीत की सुविख्यात गायिका एवं प्रसिद्ध बॉलीवुड सिंगर सुश्री ऋचा शर्मा ने जब अपनी जादुई आवाज में सूफियाना कलाम व गीत सुनाए तो श्रोता झूमने को मजबूर हो गए। उनकी गायिकी के सूफियाना अंदाज ने सुधीय रसिकों से खूब तालियाँ बजबाईं और सुर सम्राट तानसेन की देहरी को मीठे-मीठे और मनमोहक रूहानी संगीत से निहाल कर दिया। मौका था तानसेन समारोह की पूर्व संध्या पर पूर्वरंग गमक के तहत यहाँ इंटक मैदान हजीरा पर सजी संगीत सभा का। सूफियाना अंदाज मुंबई से गमक में प्रस्तुति देने आईं सुश्री ऋचा शर्मा के गायन में ही नहीं बल्कि मिजाज में भी झलक रहा था। पंजाबी फोक सॉंग सोणी आबे माही आबे... को तेज रिदम में गुनगुनाते हुए सुश्री ऋचा शर्मा गमक के मंच पर अवतरित हुईं। इसके बाद उन्होंने सूफिज्म से बावस्ता अपना प्रसिद्ध गीत सजदा तेरा सजदा दिन रैन करूँ .. गाकर रसिकों में जोश भर दिया। इसी कड़ी में उन्होंने जब विरह गीत जिंदगी में कोई कभी न आए न रब्बा.. सुनाया तो संपूर्ण प्रांगण प्रेममय हो गया। आरंभ में सांसद श्री विवेक नारायण शेजवलकर, कलेक्टर श्री अक्षय कुमार सिंह, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री राजेश चंदेल व संचालक उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत एवं कला अकादमी के निदेशक श्री जयंत माधव भिसे सहित अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्जवलन कर गमक की सभा का शुभारंभ किया। इस अवसर पर श्री केशव पांडेय, स्मार्ट सिटी की सीईओ श्रीमती नीतू माथुर व अपर कलेक्टर श्री टी एन सिंह सहित अन्य अधिकारी और आयोजन समिति के सदस्य गणों सहित बड़ी संख्या में संगीत रसिक मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन श्री अशोक आनंद ने किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सांसद श्री विवेक नारायण शेजवलकर ने इस अवसर पर कहा दुनियाँ की कोई एक भाषा हो सकती है तो वह संगीत है। उन्होंने कहा संगीत का संबंध सीधे ईश्वर से होता है। इसीलिए कहा जाता है कि जो अच्छा संगीतज्ञ होता है वह अच्छा इंसान भी होता है।

संगीतधानी ग्वालियर में मना 'सुरों का उत्सव

● गूंज न्यूज नेटवर्क, ग्वालियर

संगीतधानी ग्वालियर की फिजाएँ शाम सुर-साज की मीठी संगत से महक गईं। मौका था विश्व संगीत समागम तानसेन समारोह के अंतर्गत पूर्व रंग कार्यक्रमों की श्रृंखला में संगीत की नगरी ग्वालियर में एक साथ सजीं तानसेन संगीत महफिलों का । जब शहर के पन्द्रह स्थानों पर विशिष्ट संगीत सभाएं सजी तो मानो सुरों का उत्सव साकार हो उठा। इन सभाओं में ग्वालियर के वरिष्ठ और उदयीमान कलाकारों ने ऐसे सुर छेड़े कि दिसम्बर की सर्द सांझ सुरों का संपर्क पाकर गर्माहट का अहसास करा गई। तानसेन समारोह के इतिहास में यह पहला अवसर था, जब सुरों की नगरी ग्वालियर में इतनी बड़ी संख्या में वह भी एक साथ संगीत सभाएं हुई हो। बैजाताल पर चल रहे तानसेन समारोह का शहर के प्रख्यात गायक संजय धूपर ने मंच संचालन किया है। इस मौके पर शिशिर श्रीवास्तव और वैशाली धूपर ने मंच की व्यवस्थायें संभाली।

गायन-वादन से बैजाताल में उठीं जल तरंगें

बैजाताल पर सजी तानसेन संगीत महफिल में उदयीमान गायक सुदीप भदौरिया का ध्रुपद गायन एवं राजेन्द्र विश्वरुप का सुरबहार वादन हुआ। सुदीप ने अपना गायन राग यमन में पेश किया। उनके गायन से रसिक मंत्रमुग्ध हो गए और एक बारगी ऐसा लगा कि बैजाताल के पानी में जल तरंगें उठ रही हैं। उन्होंने आलाप, मध्यलय, आलाप, द्रुतलय आलाप के बाद उन्होंने धमार में निबद्ध बंदिश पेश की, जिसके बोल थे-'केसर रंग घोर के बनो है। दूसरी बंदिश- गणपति गणेश- जलद सूलताल में निबद्ध थी। उनके साथ पखावज पर पं. संजय पंत आगले ने साथ दिया। तानपुरे पर साकेत कुमार एवं युक्ता सिंह तोमर ने साथ दिया। दूसरी प्रस्तुति में वरिष्ठ कलाकार श्री राजेन्द्र विश्वरुप ने सुमधुर सुरबहार वादन पेश किया।

सुमधुर गायन से गुंजायमान हुआ महाराज बाड़ा

तानसेन संगीत महफिल के तहत शहर के हृदय स्थल महाराज बाड़ा पर स्थित टाउनहॉल में खूब सुर सजे। यहा सभा की शुरूआत श्री हेमांग कोल्हरकर के गायन से हुई। हेमांग ने राग पूरिया धनाश्री में गायन की प्रस्तुति दी। एक ताल में निबद्ध विलंबित बंदिश के बोल थे-'लागी मोरी लगन'। उनके द्वारा प्रस्तुत तीन ताल में मध्यलय की बंदिश के बोल थे- 'काहे अब तुम आए हो।' उनके साथ तबले पर मनीष करवड़े एवं हारमोनियम पर डॉ. अनूप मोघे ने संगत की।

किले पर भी गूँजी स्वर लहरियाँ

तानसेन संगीत महफिल के तहत ग्वालियर किले पर सजी संगीत सभा की शुरुआत सुश्री मीरा वैष्णव के गायन से हुई। उन्होंने राग पुरिया कल्याण में दो बंदिशें पेश की। एक ताल में विलंबित बंदिश के बोल थे होवन लागी सांझ जबकि मध्यलय तीनतालकी बंदिश के बोल देह बहुत दिन बीते। आपने एक तराना भी पेश किया। इसके बाद इसी सभा में जनाब सलमान खान का सुमधुर सारंगी वादन भी हुआ।इन प्रस्तुतियों में हारमोनियम पर नवनीत कौशल एवं तबले पर शाहरुख खान ने साथ दिया।

जयविलास पैलेस में बिखरे राग मधुवंती के सुर

जयविलास पैलेस में सजी तानसेन संगीत महफिल में पं. श्रीराम उमड़ेकर का सितार वादन एवं पं. उमेश कंपूवाले का खयाल गायन हुआ। सभा की शुरूआत पं. उमेश कंपूवाले के गायन से हुई। उन्होंने राग मधुवंती में अपना गायन पेश किया। इस राग में उन्होंने दो बंदिशें पेश की। एक ताल में निबद्ध विलंबित बंदिश के बोल थे-'पिया घर नाहीं' जबकि तीन ताल में द्रुत बंदिश के बोल थे-'तुम्हारे दरस बिन बलमा'। इसी राग में आपने तराना भी पेश किया। इसके पश्चात् आपने महादजी सिंधिया द्वारा रचित भजन-'अरि गिरधर सौ कौन लरी' और माधवराव प्रथम पर लिखी गई स्तुति भी पेश की। गायन का समापन उन्होंने मराठी अभंग से किया। आपके साथ तबले पर पांडुरग तैलंग एवं हारमोनियम पर अक्षत मिश्रा ने साथ दिया। अगली प्रस्तुति में पं. श्रीराम उमड़ेकर का सितार वादन हुआ। उन्होंने राग चारुकेशी में अपने वादन की प्रस्तुति दी। आलाप, जोड़ से शुरू करके उन्होंने क्रमशः मत्त और तीन ताल में दो गतें पेश की। आपके साथ तबले पर श्री कुणाल मसूरकर ने साथ दिया।

तानसेन समारोह प्रसंगवशः जब बचपन में बिछुड़े मित्रों का फिर से हुआ मिलन..

(हितेन्द्र सिंह भदौरिया)

वल्लभ संप्रदाय के मूर्धन्य संत एवं कृष्ण भक्ति की गायकी में निपुण सूरदास जी और गान महर्षि तानसेन के बीच बचपन में ही घनिष्ठ मित्रता हो गई थी। दोनों ने अपने जन्म स्थान ग्वालियर में ध्रुपद गायकी का ककहरा सीखा। सूरदास जी ने ग्वालियर के तत्कालीन महान संगीतज्ञ बैजू बाबरा से गुरू-शिष्य परंपरा के तहत ध्रुपद गायकी सीखी थी। समय के साथ सूरदासजी ने बृज की राह पकड़ी तो तानसेन राजा रामचंद्र की राजसभा बांधवगढ़ होते हुए आगरा पहुँचे और मुगल बादशाह अकबर के दरबार में नवरत्न में शामिल होकर सुर सम्राट तानसेन के रूप में प्रतिष्ठित हुए। पावन बृज की धरा पर कृष्ण भक्ति में डूबे सूरदास को वल्लभाचार्य जी ने अष्टछाप में सम्मिलित कर प्रतिष्ठित स्थान दिया। कालान्तर में वृद्धावस्था को प्राप्त कर चुके सूरदासजी एक दिन खड़ाऊ से खटपट करते और हाथ में लकुटिया थामे फतेहपुर सीकरी में मुगल बादशाह अकबर के दरबार में पहुँचे। तानसेन के जरिए अकबर ने सूरदास जी की महिमा सुन रखी थी। अकबर ने उन्हें जागीर और प्रतिष्ठित राजकीय पद देने का आग्रह किया। पर सूरदासजी ने इस प्रस्ताव को विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया। सूरदास ने कृष्ण भक्ति के कुछ पद गाकर अकबर को सुनाए और यह बूढ़ा बाबा खटपट करता हुआ पुनः गोकुल पहुँच गया। तानसेन की बृज यात्रा के दौरान बचपन में बिछड़े मित्रों सूरदासजी और तानसेन का आत्मीय मिलन हुआ था। उस समय तानसेन ने भाव विभोर होकर सूरदास जी की प्रशंसा में एक दोहा सुनाया। जिसके बोल थे

किधौं सूर कौ सर लग्यौ, किधौं सूर की पीर ।
किधौं सूर कौ पद लग्यौ, तन-मन धुनत सरीर ॥

यह दोहा सुनकर सूरदासजी कहाँ रूकने वाले थे उन्होंने बड़े मार्मिक भाव से अपने बचपन के मित्र गान मनीषी तानसेन की प्रशंसा करते हुए कालजयी दोहा गाकर सुनाया। जिसके बोल हैं

विधना यह जिय जानिकै, सेसहिं दिए न कान ।
धरा मेरू सब डोलते, सुन तानसेन की तान ॥

तानसेन की बृज यात्रा के बारे में विन्सेण्ट स्मिथ ने अपनी पुस्तक अकबर द ग्रेट मुगल में उल्लेख किया है। साथ ही डॉ. हरिहर निवास द्विवेदी द्वारा रचित तानसेन पुस्तक में भी सूरदास जी और सुर सम्राट तानसेन की मित्रता का उल्लेख मिलता है।

भव्य राम मंदिर में श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी 2024 को...

अंततः वह घड़ी भी बहुत करीब आ पहुंची है, जिसका इंतजार हिंदू धर्मावलंबी पिछले लगभग 500 वर्षों से कर रहे हैं। भव्य राम मंदिर में श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी को हिन्दुस्तान के इतिहास में एक और नई इबारत जुड़ने जा रही है। अगले साल 22 जनवरी 2024 को जब अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि के नवनिर्मित आलीशान मंदिर में प्रभु श्री रामलला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा होगी तो उसी के साथ पांच सौ साल का विवाद भी इतिहास के पन्नों में सिमट जायेगा। प्राण प्रतिष्ठा की खबर से रामभक्त प्रसन्न हैं।

5 अगस्त 2020 को भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पूजनीय संत मंडल एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के परम पूजनीय सर संघचालक मोहन जी भागवत के सानिध्य में प्रभु श्रीराम के भव्य मंदिर के निर्माण की आधारशिला रखी थी। अब दिनांक 22 जनवरी 2024 को भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ही पूज्य संत मंडल एवं परम पूजनीय सर संघचालक मोहन जी भागवत की उपस्थिति में अयोध्या में नव निर्मित प्रभु श्रीराम के भव्य मंदिर का उद्घाटन करने जा रहे हैं। भारत ही क्या बल्कि पूरे विश्व में ही हिंदू धर्मावलंबी अति उत्साहित हैं एवं पूरे भारत में वातावरण राममय होने जा रहा है।

अयोध्या में निर्माणरत श्रीराम मंदिर पूरे विश्व में निवासरत हिंदू धर्मावलम्बियों के लिए न केवल विशाल आस्था के एक केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है बल्कि यह देश में धार्मिक पर्यटन को भी बढ़ावा देगा और इससे भारतीय अर्थव्यवस्था को जबरदस्त लाभ होने की सम्भावना व्यक्त की जा रही है। हाल ही में सम्पन्न दीपावली त्यौहार के शुभ अवसर पर अयोध्या में 22.23 लाख दिए जलाए गए थे, यह अपने आप में एक गिनीज विश्व रिकार्ड के रूप में माना जा रहा है। वर्तमान में 2.5 करोड़ पर्यटक प्रतिवर्ष अयोध्या में पहुंचते हैं। प्रभु श्रीराम के भव्य मंदिर का निर्माण हो जाने के पश्चात पर्यटकों

की यह संख्या 10 गुना तक बढ़ सकती है अर्थात 25 करोड़ पर्यटक प्रतिवर्ष अयोध्या में आ सकते हैं। एक पर्यटक यदि अयोध्या में रहते हुए 2000 रुपए का खर्च भी करता है तो 50,000 करोड़ रुपए का व्यापार अकेले अयोध्या में प्रतिवर्ष होने की सम्भावना व्यक्त की जा रही है। धार्मिक पर्यटन के साथ ही पूरे वर्ष भर कई सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं कई प्रकार के भव्य समारोह भी अयोध्या में आयोजित होने लगेंगे, इससे कुल मिलाकर यह अनुमान लगाया जा रहा है कि प्रतिवर्ष एक लाख करोड़ रुपए का व्यापार केवल अयोध्या में ही होने लगेगा। अयोध्या में होटल और रिजोर्ट का निर्माण करने हेतु 20 प्रस्ताव उत्तर प्रदेश सरकार को प्राप्त हो चुके हैं, इनमे कई फाइव स्टार होटल भी शामिल हैं। अयोध्या में अंतरराष्ट्रीय स्तर का आधारभूत ढांचा एवं अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा भी विकसित किया जा रहा है। अयोध्या रेल्वे स्टेशन को विकसित कर लिया गया है। उक्त वर्णित व्यवस्थाओं के विकसित होने के पश्चात अयोध्या में बढ़ने वाले धार्मिक पर्यटन से लाखों की संख्या में नए रोजगार के अवसर निर्मित होने जा रहे हैं।

पूज्य भगवान श्रीराम हमें सदैव ही मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में दिखाई देते रहे हैं। पूरे विश्व में भारतीय नागरिकों को प्रभु श्रीराम के वंशज के रूप में जानने के कारण, आज पूरे विश्व में हर भारतीय की यही पहचान भी बन पड़ी है। लगभग हर भारतीय न केवल ÷वसुधैव कुटुंबकम÷, अर्थात इस धरा पर निवास करने वाला प्रत्येक प्राणी हमारा परिवार है, के सिद्धांत में विश्वास करता है बल्कि आज लगभग हर भारतीय बहुत बड़ी हद तक अपने धर्म सम्बंधी मर्यादाओं का पालन करते हुए भी दिखाई दे रहा है। भारत में भगवान श्रीराम धर्म एवं मर्यादाओं के पालन करने के मामले में मूर्तिमंत स्वरूप माने जाते हैं। इस प्रकार वे भारत की आत्मा हैं।

अयोध्या में 22 जनवरी 2024 को भगवान श्रीराम के मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के बाद उनकी चरण पादुकाएं भी रखी जाएंगी। फिलहाल ये पादुकाएं देशभर में घुमाई जा रही हैं। पादुकाएं प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव से पहले 19 जनवरी को अयोध्या पहुंचेंगी। ये चरण पादुकाएं एक किलो सोने और सात किलो चांदी से बनाई गई हैं। इन्हें हैदराबाद के श्रीचल्ला श्रीनिवास शास्त्री ने बनाया है। 17 दिसंबर को इन्हें रामेश्वर धाम से अहमदाबाद लाया गया था। यहां से

यह सोमनाथ ज्योतिर्लिंग धाम, द्वारकाधीश नगरी और इसके बाद बद्रीनाथ ले जाई जाएंगी। श्रीचल्ला श्रीनिवास इन पादुकाओं को हाथ में लेकर अयोध्या में निर्माणाधीन मंदिर की 41 दिन की परिक्रमा भी कर चुके हैं।

अंततः 5 अगस्त 2020 को सदियों के स्वप्न-संकल्प सिद्धि का वह अलौकिक मुहूर्त उपस्थित हुआ। जब पूज्य महंत नृत्य गोपाल दास जी सहित देश भर की विभिन्न आध्यात्मिक धाराओं के प्रतिनिधि पूज्य आचार्यों, संतो, एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के परम पूजनीय सर संघचालक डॉ. मोहन भागवत जी के पावन सान्निध्य में भारत के जनप्रिय एवं यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने भूमि पूजन कर मंदिर निर्माण का सूत्रपात किया। इस शुभ मुहूर्त में देश के 3000 से भी अधिक पवित्र नदियों एवं तीर्थों का जल, विभिन्न जाति, जन जाति, श्रद्धा केंद्रों तथा बलिदानी कार सेवकों के घर से लायी गई रज (मिट्टी) ने सम्पूर्ण भारत वर्ष को आध्यात्मिक रूप से ÷भूमि पूजन÷ में उपस्थित कर दिया था। आज, प्रभु श्रीराम का भव्य मंदिर बनकर अब अपनी सम्पूर्णता की ओर तेजी से अग्रसर है और इस विशाल एवं भव्य मंदिर का शुभारम्भ भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी 22 जनवरी 2024 को परम पूज्य संत मंडल एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के परम पूजनीय सर संघचालक श्री मोहन जी भागवत के सान्निध्य में करने जा रहे हैं।

15 जनवरी से हर महीने 6 लाख लोगों को भोजन कराने की तैयारी है। सुबह 9 बजे से रात 9 बजे तक चलने वाली राम रसोई अयोध्या में बिहार की खास पहचान बनेगी। वहीं श्रीराम मंदिर परिसर में 10 हजार स्क्वॉयर फीट में राम रसोई बनाने का प्लान भी है। अभी राम लला के सामने स्वर्णिम दीपक भी महावीर मंदिर से भेजे गए गाय के घी से जलाया जाएगा। वहीं सात समुंदर पार अमेरिका में रह रहे हिंदू समुदाय ने वॉशिंगटन डीसी में फ्रेडरिक सिटी मैरीलैंड में एक कार रैली का आयोजन किया। इसके साथ ही यहां एक महीने तक राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा तक चलने वाले उत्सव की शुरुआत की हो

गयी है। रैली के लिए सभी श्री भक्त अंजनेय मंदिर में इकट्ठा हुए। कुल मिलाकर लोकसभा चुनाव में जीत की हैट्रिक के लिए अयोध्या और हिन्दुत्व को फिर से बीजेपी ने अपने एजेंडे में शामिल कर लिया है। भारत में सनातन धर्म का गौरवशाली इतिहास पूरे विश्व में सबसे पुराना माना जाता है। कहते हैं कि लगभग 14,000 विक्रम सम्वत् पूर्व भगवान नील वराह ने अवतार लिया था। नील वराह काल के बाद आदि वराह काल और फिर श्वेत वराह काल हुए। इस काल में भगवान वराह ने धरती पर से जल को हटाया और उसे इंसानों के रहने लायक बनाया था। उसके बाद ब्रह्मा ने इंसानों की जाति का विस्तार किया और शिव ने सम्पूर्ण धरती पर धर्म और न्याय का राज्य कायम किया। सभ्यता की शुरुआत यहीं से मानी जाती है। सनातन धर्म की यह कहानी वराह कल्प से ही शुरू होती है। जबकि इससे पहले का इतिहास भी भारतीय पुराणों में दर्ज है जिसे मुख्य 5 कल्पों के माध्यम से बताया गया है। यदि भारत के

इतने प्राचीन एवं महान सनातन धर्म के इतिहास पर नजर डालते हैं तो पता चलता है कि हिन्दू सनातन संस्कृति एवं सनातन वैदिक ज्ञान वैश्विक आधुनिक विज्ञान का आधार रहा है। इसे कई उदाहरणों के माध्यम से, हिन्दू मान्यताओं एवं धार्मिक ग्रंथों का हवाला देते हुए, समय समय पर सिद्ध किया जा चुका है। सनातन वैदिक ज्ञान इतना विकसित था, जिसके मूल का उपयोग कर आज के आधुनिक विज्ञान के नाम पर पश्चिमी देशों द्वारा वैश्विक स्तर पर फैलाया गया है।

सत्ता के सेमीफाइनल में महाविजय

'मोदी की गारंटी' जनता का विश्वास 'मोदी है तो मुमकिन है'

लोकसभा चुनावों से पहले सत्ता के सेमीफाइनल कहे जाने वाले पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस के हाथ से राजस्थान और छत्तीसगढ़ निकल गए जबकि मध्य प्रदेश में भी कांग्रेस काफी अच्छी स्थिति में थी लेकिन परिणाम कुछ और बता रहे हैं। अब सवाल यह उठता है कि कांग्रेस की रणनीति में कहां चूक हो गई। कहां मात खा गए अशोक गहलोत, कमलनाथ और भूपेश बघेल? आखिर कैसे बाजी पलट गई इस पर मंथन की जरूरत है। मध्य प्रदेश की बात करें तो मध्य प्रदेश में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के द्वारा शुरू की गई लाड़ली बहना योजना गेम चेंजर साबित हुई और बीजेपी ने शानदार जीत दर्ज की है।

तीन राज्यों में प्रचंड बहुमत के साथ भाजपा की सरकार बनी है। भाजपा ने राजस्थान व छत्तीसगढ़ राज्य कांग्रेस पार्टी से छीनकर के सरकार बनाने का कार्य किया है और मध्यप्रदेश राज्य को अपने पास बरकरार रखने कार्य बखूबी किया, वहीं तेलंगाना राज्य में भी भाजपा के वोट प्रतिशत में रिकार्ड वृद्धि हुई है। हालांकि इन तीनों राज्यों में मतदान से कुछ माह पूर्व तक आलम यह था कि वहां पर कांग्रेस पार्टी की सरकार बनती हुई नज़र आ रही थी। लेकिन चुनावी रणभूमि में जहां

एक तरफ कांग्रेस पार्टी के चंद राजनेताओं ने जीती हुई बाजी को दिन-रात मेहनत करके पार्टी को हारने का काम बखूबी किया। वहीं भाजपा के शीर्ष नेतृत्व ने समय रहते ही स्थिति को भांप करके पूरे चुनाव को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नाम के इर्द-गिर्द करते हुए मोदी की गारंटी के दम पर हारी-बाजी को जीत में बदलने का काम किया है।

चुनाव परिणाम आने के बाद से ही भाजपा में जबरदस्त जश्न का माहौल जारी है, वहीं देश के अन्य विपक्षी राजनीतिक दलों में बैठकों का दौर चल रहा है। लेकिन मुझे लगता नहीं यह सभी विपक्षी दल अभी भी विधानसभा चुनावों की हार का निष्पक्ष रूप से आंकलन करते हुए अपने-अपने गिरेबान में झांकने के लिए तैयार हैं, वह तो अभी भी अपनी हार का ठीकरा ईवीएम पर फोड़ कर के अपनी जिम्मेदारियों से पल्ला झाड़ने के मूड में नज़र आ रहे हैं। मोदी के विपक्ष में खड़े राजनीतिक दलों में से यह कोई भी दल समझने के लिए तैयार नहीं है कि अब उन्हें आत्ममंथन करने की जरूरत है। लेकिन वह आत्ममंथन की जगह ईवीएम को ढाल बनाकर उसके पीछे छिपने का कार्य कर रहे हैं।

हालांकि इन विधानसभा के चुनावों में जनता ने विपक्षी दलों

के साथ-साथ भाजपा के शीर्ष नेतृत्व, संघ व एनडीए गठबंधन के अन्य सहयोगियों को भी स्पष्ट संदेश दे दिया है कि मोदी की गारंटी आज चुनावी जीत का सबसे कारगर मंत्र है, जनता को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की नीति, नियत, नेतृत्व व काम करने की शैली बेहद पसंद है।

वैसे देखा जाए तो प्रधानमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी के बहुत सारे ऐसे निर्णय हैं जोकि इतिहास के पन्नों में हमेशा के लिए दर्ज हो गए हैं, जनता को भी मोदी के निर्णय बेहद पसंद आते हैं, क्योंकि नरेन्द्र मोदी ने लोगों के दशकों से इंतजार कर रहे बहुत सारे सपनों को अपने कार्यकाल में धरातल पर अमलीजामा पहना कर साकार करके दिखा दिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने फैसलों से देश की दुनिया में तस्वीर बदलने व भारत के आम व खास जनमानस की तकदीर को बदलने का काम बखूबी किया है।

वैसे भी आज देश में एक ऐसा बड़ा वर्ग है जिनका मानना है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बहुत तेजी के साथ अत्याधुनिक मजबूत भारत की नींव रखते हुए बुलंद इमारत बनाने का कार्य बखूबी कर रहे हैं, जिसके चलते ही देश और विदेश के निवेशकों को अब भारत मैं व्यापार के नये-नये अवसर दिखाई दे रहे हैं, जिससे ही देश की आर्थिक ताकत तेजी बढ रही है, वहीं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस आर्थिक ताकत के दम देश की अर्थव्यवस्था को फाइव ट्रिलियन डॉलर की बनाने में जुटे हुए हैं, साथ ही मोदी अर्थव्यवस्था को केवल आंकड़ों तक सीमित ना रखकर के देशवासियों के रोजमर्रा के जीवन में धरातल पर आमूलचूल सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए उपयोग कर रहे हैं, देश के आम जनमानस को उनके हितों के कार्य धरातल पर होते हुए नज़र आ रहे हैं, यही मोदी

की गारंटी है और मोदी है तो मुमकिन है नारे का जनता की अदालत में वास्तविक अर्थ है, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर जनता का यह विश्वास ही भाजपा की जीत का मूल मंत्र है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के रूप में भाजपा के पास भारत का सबसे लोकप्रिय और विश्वसनीय राजनेता है। भाजपा के चुनाव अभियानों का नेतृत्व करते हुए वो न केवल मौजूदा भाजपा सरकारों के खिलाफ निराशा दूर करने में सहायक हैं, बल्कि पार्टी के समर्थन आधार को भी विस्तृत और गहरा कर रहे हैं। एक मजबूत वैचारिक आधार भाजपा को अडिग समर्थकों का ऐसा समूह देता है जिस पर वह भरोसा कर सकती है। लेकिन लगातार चुनाव जीतने के लिए उसे इस मूल आधार को मजबूत करना होता है। भारत के कुछ सबसे गरीब राज्यों में इसकी बार-बार मिली सफलताएं दिखाती हैं कि इसका समर्थन आधार सभी सामाजिक समूहों में फैला हुआ है, खासकर हिंदी भाषी राज्यों में। यही कारण है कि भले ही जाति एक ज्वलंत सामाजिक मुद्दा बनी हुई है, लेकिन 1990 के दशक की तुलना में अब इसके राजनीतिक प्रभाव बहुत अलग हैं। अगले साल होने वाले लोकसभा चुनावों का सेमीफाइनल कहे जा रहे विधानसभा चुनावों के नतीजों ने कुछ बातें बिल्कुल साफ कर दी हैं। पहली, बीजेपी उत्तर भारत में बेहद ताकतवर है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता का कोई जवाब फिलहाल किसी के पास नहीं है। इन चुनावों में कांग्रेस ने प्रदेश नेताओं को तरजीह देने की रणनीति अपनाई थी, जबकि बीजेपी सभी राज्यों में कलेक्टिव लीडरशिप के आधार पर पीएम मोदी के चेहरे के भरोसे मैदान में उतरी थी। चुनाव नतीजों ने स्पष्ट कर दिया है कि आम वोटरों के बीच पीएम मोदी के नाम और चेहरे का सिक्का आज भी

3 राज्यों में मुख्यमंत्री के चेहरों के माध्यम से भाजपा ने दिये हैं बड़े राजनीतिक संकेत

पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में तीन प्रमुख राज्यों में भाजपा को अप्रत्याशित विजय मिली। भाजपा ने ये चुनाव प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में लड़ा था और राज्य में किसी भी नेता को मुख्यमंत्री के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया था। विपक्ष के लिए ये भी हैरान करने वाली बात थी कि कई सांसदों को भी जिनमें कुछ तो मंत्री थे पार्टी ने विधानसभा का चुनाव लड़ने का आदेश दिया था। कई बड़े चेहरे जीते तो मुख्यमंत्री कौन होगा ? भाजपा की विजय के साथ ही मुख्य धारा और सोशल मीडिया के सूत्र अटकलें लगाने लगे। मुख्यमंत्री चयन की प्रक्रिया में देरी, राजस्थान में वसुंधरा के घर हलचल और मध्य प्रदेश में शिवराज जी की दिल्ली न जाने की घोषणा ने राजनैतिक विश्लेषकों और भविष्यवक्ताओं को काम पर लगा रखा था। मीडिया के सूत्र प्रतिदिन सुबह से शाम तक चार-पांच नाम चलाते और पीछे करते रहते थे। इन्हीं

अटकलों के बीच जब भाजपा ने तीनों प्रान्तों के लिए पर्यवेक्षकों की घोषणा की तो मीडिया उसमें भी कथा कहानी ढूँढ़ने लगा किन्तु उनका भी कोई आधार नहीं था। तीनों राज्यों में बने नये मुख्यमंत्रियों के नाम कहीं भी किसी भी चर्चा में दूर दूर तक नहीं आए थे। उनके विषय में बताने के लिए टीवी चैनल गूगल का सहारा ले रहे थे। विपक्षी खेमे में हड़कंप मचा हुआ है कि बिना किसी गुटबाजी के भाजपा अपने नये चेहरे कैसे चुन रही है। सभी टीवी चैनलों पर कौन बनेगा मुख्यमंत्री पर तरह तरह के विश्लेषण चल रहे थे किंतु अब सभी विश्लेषक हैरान हो गये और यह भी चर्चा करने लग गये कि वो लोग टीवी पर जिस भी चेहरे को आगे कर देते हैं भाजपा में वह चेहरा पीछे छूट जाता है और फिर एकदम नया चेहरा सामने आ जाता है। अब देश के मीडिया जगत के बड़े नामों को यह बात समझ में आ जानी चाहिए कि वर्तमान समय की भारतीय राजनीति में यदि कोई सबसे बड़ा चुनावी सर्वे करने वाला और राजनीतिक भविष्यावाणी करने व्यक्ति है तो वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ही हैं। बेहद विपरीत परिस्थितियों के बाद भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व व उनके धुआंधार प्रचार की बदौलत ही भाजपा की तीनों राज्यों में जोरदार वापसी हुई है।

मध्य प्रदेश

विधानसभा चुनावों में ऐतिहासिक विजय के बाद भारतीय जनता पार्टी ने भाजपा ने पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के स्थान पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक रहे उज्जैन दक्षिण के विधायक डॉ. मोहन यादव को मुख्यमंत्री बनाकर सभी को हैरान कर दिया। मध्य प्रदेश में यह माना जा रहा था कि चुनाव प्रचार के दौरान पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को उनके परिश्रम का प्रतिफल दिया जा सकता है और संभवतः वे लोकसभा चुनावों तक मुख्यमंत्री बने रहेंगे किंतु ऐसा कुछ नहीं हुआ और मामा जी को एक नए चेहरे के लिए अपनी दावेदारी से पीछे हटना ही पड़ा। मध्य प्रदेश में विरोधी प्रचार करने में जुट गये थे कि भाजपा में गुटबाजी के कारण नेता चयन में देरी हो रही है किंतु जब मोहन यादव के नाम का ऐलान हुआ तो सभी लोग हैरान रह गये। उत्तर प्रदेश और बिहार में यादव समाज के बड़े नेता परेशान हैं कि अब आगामी लोकसभा चुनावों में भाजपा एक यादव मुख्यमंत्री के सहारे अपनी राजनीति को आगे बढ़ाने जा रही है। मोहन यादव को मुख्यमंत्री बनाकर भाजपा ने एक तीर से कई निशाने साधे हैं जिसमें पहला यह है कि अब मध्य प्रदेश में बीजेपी को एक नया चेहरा मिल चुका है। विगत चुनावों के दौरान कांग्रेस मामा जी पर भ्रष्टाचार व घोटालों के आरोप लगा रही थी और चुनाव प्रचार के दौरान 40 प्रतिशत कमीशन खाने वाली सरकार कहकर बीजेपी को घेरने का प्रयास कर रही थी अतः अब ऐसे सभी आरोपों से फिलहाल राहत मिल गयी है।

दूसरा भाजपा ने मोहन यादव को मुख्यमंत्री बनाकर उत्तर प्रदेश व बिहार के यादव मतदाताओं को साधने का जोरदार प्रयास किया है। राजनैतिक विश्लेषकों का अनुमान है कि मोहन यादव को मुख्यमंत्री बनाये जाने के कारण यूपी में सपा के लिए चुनौती बढ़ने जा रही है। यह बात तो समाजवादी नेता भी मान रहे हैं कि यूपी, बिहार व हरियाणा के यादव मतदाताओं को लुभाने की रणनीति के तहत ही मोहन यादव को मध्य प्रदेश का मुख्यमंत्री बनाया गया है। उत्तर प्रदेश में 10-12 प्रशित और बिहार में इनकी संख्या 14.26 प्रतिशत और हरियाणा में 10 प्रतिशत के आसपास है। अभी तक यूपी में अखिलेश यादव और बिहार में लालू यादव ही अपने आपको यादवों का एकमात्र बड़ा नेता घोषित करते आ रहे थे किंतु अब भाजपा के पास भी एक यादव नेता मिल गया है और वह है मोहन यादव। मोहन यादव को मुख्यमंत्री बनाकर व उनके साथ दो उपमुख्यमंत्री बनाकर भाजपा ने राज्य के मतदाताओं के बीच गजब की सोशल इंजीनियरिंग की है। पिछली सरकार में जहां नरोत्तम मिश्रा जो ब्राह्मण चेहरा थे वहीं अब मोहन यादव की सरकार में राजेंद्र शुक्ला ब्राह्मण चेहरा बनकर उभरे हैं। वहीं जगदीश देवड़ा को उपमुख्यमंत्री बनाया गया जबकि पूर्व केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर मध्य प्रदेश के विधानसभा अध्यक्ष बनाये गये हैं।

मोहन यादव काफी पढ़े लिखे हैं और उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले से उनका सम्बंध है। जब मोहन के नाम की घोषणा हुई तब उनके ससुराल सुल्तानपुर में भी जश्न मनाया गया। मोहन यादव प्रख्यात संत एवं रामघाट स्थित सीताराम आश्रम के संस्थापक स्वामी आत्मानंददास उर्फ नेपाली बाबा के शिष्य हैं। 2016 में उज्जैन महाकुंभ के दौरान नेपाली बाबा ने मोहन यादव को मुख्यमंत्री बनने का आशीर्वाद दिया था।

छत्तीसगढ़

भारतीय जनता पार्टी ने सबसे पहले छत्तीसगढ़ में एक बड़े आदिवासी नेता विष्णुदेव साय को मुख्यमंत्री बनाकर चौंकाया और फिर अरूण साव और विजय शर्मा को उपमुख्यमंत्री बनाने का प्रस्ताव रखा गया। वहीं पूर्व मुख्यमंत्री रमन सिंह को विधानसभा अध्यक्ष बनाने का प्रस्ताव करके सभी प्रकार की अटकलों पर विराम लगा दिया गया। आदिवासी समाज का प्रतिनिधित्व करने वाली आदरणीय द्रौपदी मुर्मू जी को राष्ट्रपति बनाने का लाभ भाजपा को छत्तीसगढ़ में मिला और वहां की आदिवासी बहुल क्षेत्रों की अधिकांश सीटों पर भाजपा को विजयश्री प्राप्त हुई। सबसे बड़ी बात यह है कि आदिवासी बहुल राज्य छत्तीसगढ़ में राज्य का गठन होने के बाद से एक आदिवासी मुख्यमंत्री की मांग की जा रही थी जिसे अब भाजपा ने विष्णुदेव साय को मुख्यमंत्री बनाकर पूरा कर दिया है। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय आदिवासी हैं और किसान परिवार से हैं। वह कुनकुरी विधानसभा

सीट से जीते हैं वहीं वह 1999 से 2014 तक रायगढ़ लोकसभा सीट से सांसद भी रहे। वह पूर्व में प्रदेश भाजपा अध्यक्ष भी रहे हैं। चुनाव प्रचार के दौरान गृहमंत्री अमित शाह ने जनता से अपील की थी कि आप साय को जितायें तो हम उन्हें बड़ा आदमी बना देंगे। अब साय मुख्यमंत्री बन गये हैं। यदि समग्र दृष्टि डाली जाये तो यह पता चलता है कि बिना किसी चेहरे को आगे किये चुनाव लड़ रही भाजपा ने प्रचार के दौरान ही यह तय कर लिया था कि अगर सरकार बनती है वह राज्य की कमान किसे सौंपेगी। साय का नाम भी किसी टीवी चैनल की डिबेट में नहीं चल रहा था। यहां पर भाजपा ने बिना किसी विशेष तैयारी के चुनाव लड़ा फिर भी शानदार विजय प्राप्त की और चुनावों के बाद रमन सिंह के प्रभाव से मुक्ति भी पा ली है हालांकि भाजपा ने रमन सिंह को दरकिनार नहीं किया है और उन्हें विधानसभा अध्यक्ष जैसा पद देकर उनका सम्मान बनाए रखा है। दूसरी सबसे बड़ी बात यह है कि साय का परिवार संघ से जुड़ा रहा है। उनके पिता और दादा भी संघ के स्वयंसेवक रहे हैं तथा राम मंदिर आंदोलन के आरंभिक दिनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

राजस्थान

लंबी बैठकों और तरह-तरह के कयासों के बाद आखिरकार राजस्थान को भी नया चेहरा मिल गया है और वहां भी महारानी वसुधंरा राजे का राज अब समाप्त हो चुका है तथा वहां पर एक ब्राह्मण चेहरे भजन लाल शर्मा को मुख्यमंत्री बनाकर भाजपा ने सभी राजनैतिक पंडितों को बुरी तरह से चौंका दिया है और अब वह सभी लोग टीवी चैनलों पर बैठकर केवल अपना सिर खुजला रहे हैं कि आखिर भजन लाल शर्मा का नाम कैसे दौड़ में आ गया और वह पहली बार विधायक बने तथा पहली बार ही राज्य के मुख्यमंत्री बन गये। भजन लाल शर्मा के बारे में कहा जा रहा है कि वह संघ के करीबी हैं और चार बार महामंत्री रहे तथा संगठन में काफी सक्रिय रहे हैं। भजन लाल एक ब्राह्मण चेहरा हैं और बहुत दिनों बाद राजस्थान को एक ब्राह्मण मुख्यमंत्री मिला है। राजस्थान में करीब 12 प्रतिशत ब्राह्मण आबादी है और संपूर्ण राज्य में फैली है वह एक शांत मतदाता माना जाता रहा है। राजस्थान की राजनीति में अभी तक केवल जाट, गुर्जर, दलित, मीणा आदि को लेकर ही चर्चाएं होती थीं किंतु अब बहुत दिनों बाद भाजपा ने ब्राह्मण को मुख्यमंत्री बनाकर सवर्ण समाज को संदेश दे दिया है क्योंकि उत्तर भारत की

राजनीति में सवर्ण मतदाता भी एक अहम भूमिका अदा करते हैं। वहीं राजस्थान में दीया कुमारी और प्रेमचंद बैरवा को उपमुख्यमंत्री बनाया है वहीं वासुदेव देवनानी जो चार बार के विधायक रहे हैं, उन्हें विधानसभा अध्यक्ष बनाकर राज्य के सिंधी और मारवाड़ी समाज को भी साधने का सफल प्रयस किया है।

एक प्रकार से यदि देखा जाये तो भाजपा ने तीनों ही राज्यों में एक नया चेहरा देकर दूसरी पीढ़ी के नेताओं को पार्टी की बागडोर सौंपने की शुरुआत कर दी है। भाजपा ने यह भी बता दिया है उनके यहां जो भी कार्यकर्ता शांत रहकर केवल कार्य करता रहेगा, संगठन उन सभी का ध्यान रखता है और कोई भी साधारण से साधारण व्यक्ति ऊंचे पद पर बैठाया जा सकता है। संगठन में अब किसी भी स्तर पर गुटबाजी का दौर नहीं चलने वाला है। टीवी चैनलों पर सोशल मीडिया के माध्यम से जो लोग अपना प्रचार करते रहते थे वह सभी लोग मुख्यमंत्री पद की दौड़ से बाहर हो गये हैं। भाजपा ने जातिवाद की राजनीति को ध्वस्त करने के लिए जोरदार सोशल इंजीनियरिंग की है और विपक्ष हिंदू समाज को बांटने के लिए जातिगत जनगणना की जो रट लगाये था उस पर भी ब्रेक लगाने का सफल प्रयास किया है। भाजपा ने लोकसभा चुनावों के लिए तीन राज्यों में अपनी एकदम नई टीम बना ली है और अब समय आ गया है कि यह टीम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सभी गारंटी को पूरा करेगी ओर मोदी जी तीसरी बार प्रधानमंत्री बनेंगे।

कांग्रेस का मिशन लोकसभा 2024

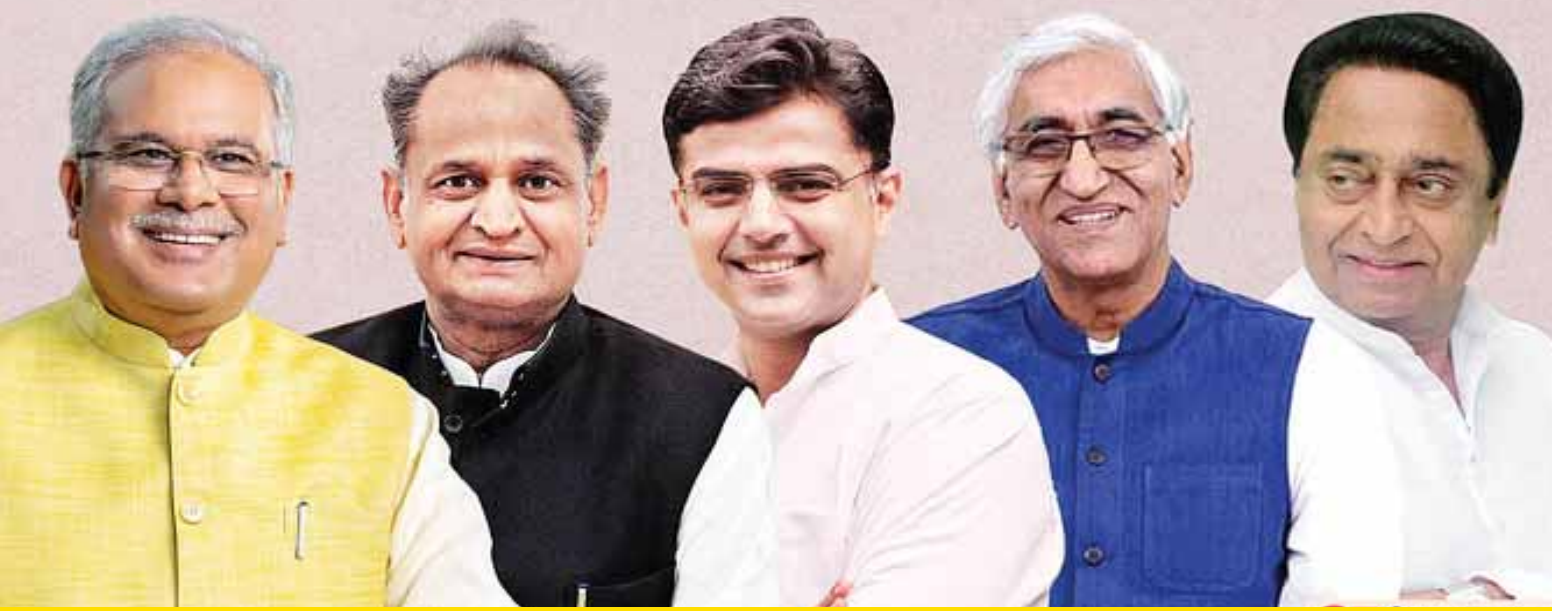

तीन राज्यों में हारने वाले कांग्रेसी क्षत्रपों को अब आराम नहीं, अब 2024 के चुनावी दंगल की तैयारी

पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में से चार प्रदेशों में हार के बाद कांग्रेस पार्टी अब 2024 के लोकसभा चुनाव की तैयारी में जुट गई है। मध्यप्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में कांग्रेसी क्षत्रपों के साथ बैठकों का शेड्यूल तैयार कर लिया गया है। पार्टी की केंद्रीय इकाई से जुड़े सूत्रों का कहना है कि तीन राज्यों में मिली हार के बाद कांग्रेस उन कारणों का भी पता लगा रही है, जिसके चलते पार्टी को हार का सामना करना पड़ा।

पार्टी के शीर्ष नेतृत्व तक कुछ ऐसी बातें भी पहुंची हैं, जिनमें किसी एक राज्य में चुनाव प्रचार के दौरान एकजुटता और तालमेल के साथ काम नहीं हुआ। पार्टी नेता, किस तरह से अति उत्साह और अति आत्मविश्वास का शिकार हुए। दूसरे प्रदेशों से आए नेताओं की जनसभा का शेड्यूल तय करने में अनावश्यक देरी हुई। अब पार्टी का शीर्ष नेतृत्व, इन तीनों राज्यों की लोकसभा सीटों पर हैवीवेट उम्मीदवारों को उतारने पर विचार करेगा। इसके लिए पूर्व मुख्यमंत्री, पूर्व केंद्रीय मंत्री, पूर्व उप मुख्यमंत्री एवं राज्यों में वरिष्ठ मंत्री रहे कांग्रेस नेताओं की सूची तैयार की जा रही है।

मध्यप्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ के चुनावी नतीजे आने के बाद कांग्रेस पार्टी ने कहा था कि जुड़ेगा भारत, जीतेगा इंडिया। कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा था कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पर विश्वास और भरोसा जताने के लिए मैं तेलंगाना के मतदाताओं का धन्यवाद करता हूं। मैं उन सभी का भी धन्यवाद करता हूं जिन्होंने हमें छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश एवं राजस्थान में वोट दिया। ये चुनाव परिणाम हमारी अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं रहे हैं, परंतु हमें विश्वास है कि हम मेहनत एवं दृढ़निश्चय से मजबूती से वापसी करेंगे। कांग्रेस पार्टी ने पूरे दम खम के साथ इन चार राज्यों के चुनाव में भाग लिया। मैं अपने अनगिनत कार्यकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त करता हूं। हमें इस हार से हताश हुए बगैर इंडिया दलों के साथ, दोगुने जोश से लोकसभा चुनाव की तैयारी

में लग जाना है।

कांग्रेस पार्टी के पूर्व अध्यक्ष और स्टार प्रचारक राहुल गांधी ने तीन राज्यों में हुई पार्टी की हार के बाद कहा, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ व राजस्थान का जनादेश हम विनम्रतापूर्वक स्वीकार करते हैं। विचारधारा की लड़ाई जारी रहेगी। तेलंगाना के लोगों को मेरा बहुत धन्यवाद। प्रजालु तेलंगाना बनाने का वादा हम जरूर पूरा करेंगे। सभी कार्यकर्ताओं को उनकी मेहनत और समर्थन के लिए दिल से शुक्रिया। राहुल गांधी ने इस हार के बावजूद यह स्पष्ट कर दिया है कि कांग्रेस, अपनी विचारधारा से दूर नहीं जाएगी। इतना ही नहीं, कांग्रेस पार्टी ने कार्यकर्ताओं का मनोबल बनाए रखने के लिए वह डेटा भी जारी कर दिया, जिसमें कहा गया है कि चार राज्यों में उसे भाजपा के मुकाबले, 10 लाख ज्यादा वोट मिले हैं। भले ही मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में भाजपा ने प्रचंड बहुमत से जीत दर्ज कराई है, लेकिन कांग्रेस पर लोगों का भरोसा कम नहीं हुआ है। पार्टी प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने कहा, इसलिए लड़ाई लड़नी जरूरी है। जिन राज्यों में भाजपा जीती है, वहां भी कांग्रेस को औसतन 40 प्रतिशत से ऊपर लोगों ने अपना वोट दिया है। चार राज्यों में कांग्रेस के वोट 4 करोड़ 90 लाख से ऊपर रहे हैं। वहीं भाजपा को 4 करोड़ 81 लाख से ऊपर मत मिले हैं। तेलंगाना में कांग्रेस का वोट प्रतिशत 39.40 रहा हैं, जबकि भाजपा का प्रतिशत 13.90 रहा हे। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस का वोट प्रतिशत 42.23 रहा है। वहीं भाजपा का वोट प्रतिशत 46.27 है। राजस्थान में कांग्रेस का वोट प्रतिशत 39.53 है। भाजपा का वोट प्रतिशत 41.69 है। मध्यप्रदेश में कांग्रेस का वोट प्रतिशत 40.40 है, जबकि भाजपा का वोट प्रतिशत 48.55 रहा है। पार्टी को इस बात से कोई मतलब नहीं है कि कौन उम्मीदवार हारा है और कौन जीता है। पार्टी का शीर्ष नेतृत्व पहले ही कह चुका है कि अब 2024 की तैयारी करनी है। केवल यही राज्य ही नहीं, बल्कि दूसरे प्रदेशों में भी इसी तरह से 2024 के लिए दिग्गजों की लिस्ट बन रही है।

श्रमिकों को सम्मान और वंचितों को मान दिलाना हमारी प्राथमिकताः प्रधानमंत्री मोदी

मैं मजदूर का बेटा हूं, श्रमिक वर्ग के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध रहूंगाः मुख्यमंत्री डॉ. यादव

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की वर्चुअली सहभागिता में पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती सुशासन दिवस पर इंदौर में हुए मजदूरों के हित-मजदूरों को समर्पित कार्यक्रम में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने बटन दबाकर श्रमिकों को हितलाभ वितरण की प्रक्रिया का शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रधानमंत्री श्री मोदी का अभिवादन किया तथा हुकुमचंद मिल के मजदूरों को वितरित होने वाले हितलाभ का चेक श्रमिक यूनियन के प्रतिनिधियों और लिक्विडेटर को सौंपा। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री श्री मोदी ने ग्रीन बॉन्ड से अर्जित धनराशि से बनने वाले 60 मेगावाट सौर ऊर्जा प्लांट परियोजना का शिलान्यास किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लगभग 429 करोड़ के जन कल्याणकारी विकास कार्यों का भूमिपूजन-लोकार्पण किया तथा 175 दिव्यांगजनों को रेट्रोफिटेड स्कूटी वितरित की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इंदौर के जनप्रतिनिधियों का अभिवादन करते हुए कहा कि इंदौर नगर निगम ने स्वच्छता के क्षेत्र में वर्ष दर वर्ष उपलब्धियां अर्जित की हैं। जनप्रतिनिधियों, श्रमिक संगठनों के प्रतिनिधियों के निरंतर संघर्ष से ही हुकुमचंद मिल मजदूरों की समस्या के समाधान की उपलब्धि अर्जित हुई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पूर्व प्रधानमंत्री स्व. वाजपेयी की जयंती पर उनका स्मरण करते हुए कहा कि वाजपेयी अद्भुत व्यक्तित्व के धनी थे, सभी को साथ लेकर चलने का उनका स्नेहमयी स्वभाव सदैव स्मरणीय रहेगा। उन्होंने उज्जैन की बड़नगर तहसील में अपनी प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की। उन्हें इंदौर की छप्पन दुकान की चाट प्रिय थी। वे कहते थी कि मैं मालवी व्यक्ति हूँ। दुनिया के सबसे तेज गति से बढ़ने वाले नगरों में शामिल है लोकमाता अहिल्या बाई की नगरी इंदौर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यह प्रसन्नता और गर्व का विषय है कि दुनिया के सबसे तेज गति से बढ़ने वाले नगरों में लोकमाता अहिल्या बाई की नगरी इंदौर शामिल है। लोकमाता अहिल्या बाई ने अपना पूरा राज्य महादेव को समर्पित कर एक सेविका बन आदर्श जीवन व्यतीत किया।

तीन दशकों के संघर्ष को मिला विराम, हुकुमचंद मिल के 4 हजार 800 से अधिक मजदूरों को राज्य शासन ने दी राहत

308 करोड़ की लागत से बन रहे सोलर पावर प्लांट परियोजना का हुआ शिलान्यास

प्रधानमंत्री श्री मोदी की वर्चुअली उपस्थिति में इंदौर में आयोजित 'मजदूरों का हित मजदूरों को समर्पित कार्यक्रम' में शामिल हुए मुख्यमंत्री डॉ. यादव

वे होलकर वंश की सम्राज्ञी थीं, लेकिन उन्होंने पूरे देश में धार्मिक स्थानों का जीर्णोद्धार कराया, केदारनाथ, जमुनोत्री, गंगोत्री, रामेश्वरम, द्वारका, बनारस आदि तीर्थ स्थानों पर उनका योगदान आज भी दिखाई देता है। महाकाल की सवारी के लिए मुखौटों का उपहार देकर उज्जैन का भी विशेष मान बढ़ाया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के शासनकाल में गरीब मजदूरों की कठिनाइयां कम हुई हैं। श्रमिक परिवारों की चुनौतियों से मैं भलीभांति परिचित हूँ। प्राय- उद्योग स्थापित करने के लिए राज्य सरकार द्वारा कई प्रकार की सहायता उपलब्ध कराई जाती है, और यह उद्योग रोजगार उपलब्ध कराने का प्रभावी माध्यम भी बनते हैं।

जीतू पटवारी के हाथों में मप्र की कमान

मध्य प्रदेश कांग्रेस के नव नियुक्त प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने पदभार ग्रहण करने के साथ ही नेताओं से मुलाकात शुरू कर दी है। चार माह बाद लोकसभा चुनाव हैं। जिसे नव निर्वाचित कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष की परीक्षा के रूप में लिया जा रहा है। इसके रास्ते में उनके सामने पांच बड़े ब्रेकर हैं। इसमें पार्टी की गुटबाजी, दिग्गजों से सामंजस्य, कार्यकर्ताओं का सक्रिय करने जैसी बड़ी चुनौतियां हैं। कांग्रेस में विधानसभा चुनाव की हार के बाद तेजी से गुटबाजी सामने आई है। यह पहली बार नहीं है, कांग्रेस में गुटबाजी लंबे समय से है। इसे ही कांग्रेस की हार का कारण भी माना जाता रहा है। अब नव नियुक्त अध्यक्ष के सामने पार्टी के अंदर की गुटबाजी को खत्म करना सबसे बड़ी चुनौती है। आगामी लोकसभा चुनाव से पहले पार्टी को एकजुट कर तैयार करना होगा।

दिग्गजों में सामंजस्य बैठाना

प्रदेश कांग्रेस में कई बड़े दिग्गज को छोड़ युवा जीतू पटवारी को प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया है। पटवारी के सामने अब उन दिग्गजों को साथ लेकर और उनके साथ सामंजस्य बैठाना मुश्किल हो सकता है। हालांकि जीतू पटवारी ने पदभार ग्रहण करते ही वरिष्ठ नेताओं से मुलाकात करना शुरू कर दिया है। यह देखना होगा कि दिग्विजय सिंह और कमलनाथ जैसे नेताओं के साथ सामंजस्य बैठाने में कितने सफल होते हैं।

जमीनी संगठन मजबूत करना

2018 में कांग्रेस के सत्ता में आने पर नेता उसको संभाल नहीं सके और ना ही कार्यकर्ताओं को लाभ दिया। अब विधानसभा में हार से कार्यकर्ताओं का मनोबल टूटा हुआ है और निराश है। बिना सत्ता के कांग्रेस का झंडा उठाने में कार्यकर्ता मुश्किल से राजी होगा। जीतू के सामने जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाने से लेकर संगठन को मजबूत करने की चुनौती होगी।

कांग्रेस की एकमात्र सीट बचाना

कांग्रेस के पास लोकसभा की 29 में से एकमात्र छिंदवाड़ा सीट है। यहां से कमलनाथ के बेटे नकुलनाथ सांसद हैं। इस सीट को आगामी लोकसभा चुनाव में जीतने के लिए भाजपा जुट गई है। प्रदेश अध्यक्ष के रूप में जीतू के सामने छिंदवाड़ा की सीट को बचाने के साथ ही प्रदेश की दूसरी सीट पर जीत दर्ज करने की भी होगी।

दिल्ली में केंद्रीय नेतृत्व के साथ चलना

पूर्व सीएम कमलनाथ दिल्ली के नेताओं के साथ नहीं चले। बताया जा रहा है कि उन्होंने अपने अनुसार सब किया।

अब जीतू पटवारी को केंद्रीय नेतृत्व ने जिम्मेदारी सौंपी है। ऐसे में उनके सामने यह भी चुनौती होगी कि वह प्रदेश के नेताओं के साथ ही दिल्ली के नेताओं के भी निर्देशों का पालन करने और उसे प्रदेश में लागू कराएं।

मैरी क्रिसमस...

बचपन से हम हम सभी सेंटा के बारे में सुनते हुए आये हैं। कहा जाता है कि 'जिंगल बेल जिंगल बेलज' की धुन ठंड के मौसम में हवा से घुल जाती है और इन्ही सर्द रात में के महीने में क्रिसमस का त्यौहार मनाया जाता है। अमेरिका, नार्वे, ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में तो दिसंबर का पूरा महीने क्रिसमस मनाया जाता है। कुछ उसी तरह जब हम दशहरे से लेकर दिवाली तक के पीरियड को एंजोय करते हैं। लेकिन आज हम बात दिसंबर महीने की और क्रिसमस की करेंगे। क्रिसमस से जुड़े कई सवाल है जो कई बार लोगों के जहन में आते हैं जैसे- क्रिसमस 25 दिसंबर के दिन ही क्यों मनाते हैं? क्रिसमस के दिन एक बुजुर्ग शख्स क्यों तोहफे बांटता है, आखिर सीक्रेट सेंटा कौन होते हैं? क्रिसमस के अवसर पर हम आपको इन सवालों के जावाव देते हैं।

क्रिसमस ईसा मसीह के जन्म की याद में मनाया जाने वाला एक वार्षिक त्यौहार है, जिसे मुख्य रूप से 25 दिसंबर को दुनियाभर के अरबों लोगों के बीच एक धार्मिक और सांस्कृतिक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। क्रिसमस डे कई देशों में एक सार्वजनिक अवकाश है। इस त्यौहार को अधिकांश ईसाइयों द्वारा धार्मिक रूप से मनाया जाता है, साथ ही सांस्कृतिक रूप से कई गैर-ईसाइयों द्वारा मनाया जाता है। और एक इसके आसपास आयोजित छुट्टियों को भी लोग जमकर एंजोय करते हैं। यीशु के जन्म की तारीख के बारे में अलग-अलग परिकल्पनाएं हैं और चौथी शताब्दी की शुरुआत में चर्च ने 25 दिसंबर की तारीख तय की थी। रोमन कैलेंडर में यह शीतकालीन संक्रांति की पारंपरिक तारीख से मेल खाती है। यह 25 मार्च को घोषणा के ठीक नौ महीने बाद है आता है। अधिकांश ईसाई 25 दिसंबर को ग्रेगोरियन कैलेंडर में मनाते हैं, जिसे दुनिया भर के देशों में उपयोग किए जाने वाले नागरिक कैलेंडर में लगभग

सार्वभौमिक रूप से अपनाया गया है। हालाँकि, पूर्वी ईसाई चर्चों का हिस्सा पुराने जूलियन कैलेंडर के 25 दिसंबर को क्रिसमस मनाता है, जो वर्तमान में ग्रेगोरियन कैलेंडर में 7 जनवरी से मेल खाता है। ईसाइयों के लिए, यह मानना कि ईश्वर मानवता के पापों का प्रायश्चित करने के लिए मनुष्य के रूप में दुनिया में आए, न कि यीशु की सही जन्मतिथि जानने के लिए, क्रिसमस मनाने का प्राथमिक उद्देश्य यहीं माना जाता है।सीक्रेट सेंटा कौन होते हैं?

जैसे-जैसे दिन छोटे होते हैं और छुट्टियों का मौसम करीब आता है, लोग हमेशा परिवार और दोस्तों के साथ एकजुटता और खुशी में इकट्ठा होते हैं। क्रिसमस में अपनी जड़ों के साथ, छुट्टियों की भावना में परिवार, दोस्तों और सहकर्मियों के साथ मनाने के लिए गुप्त सांता सबसे लोकप्रिय परंपराओं में से एक बन गया है। लेकिन छुट्टियां तो ठीक है पर सीक्रेट सैंटा क्या है और यह कैसे आया? ये बड़ा सवाल है। सीक्रेट सेंटा एक पश्चिमी क्रिसमस परंपरा है जिसमें एक समूह या समुदाय के सदस्यों को यादृच्छिक रूप से एक व्यक्ति सौंपा जाता है जिसे वे उपहार देते हैं। सीक्रेट सांता एक उपहार एक्सचेंज परंपरा है जो क्रिसमस की शुरुआती परंपराओं में अपनी जड़ें रखती है। उपहार देने वाले की पहचान गुप्त रखनी है और उसे प्रकट नहीं करना चाहिए। सीक्रेट सांता एक उपहार विनिमय परंपरा है जिसकी जड़ें क्रिसमस की शुरुआती परंपराओं में हैं। मूल सीक्रेट सैंटस सेंट निक के उपहार देने वाले मददगार थे। आज इसे एक उपहार विनिमय अवसर के रूप में मनाया जाता है जो परिवार और दोस्तों के बीच संबंधों को नवीनीकृत करता है, और आम तौर पर व्यस्त सहकर्मियों के बीच संबंधों को मजबूत करने के क्षण के रूप में मनाया जाता है। एक गुप्त सांता उपहार विनिमय बनाने का अर्थ है एकता और प्रसन्नता का क्षण बनाना। मेरा गुप्त सांता कौन होगा? यह हमेशा एक मजेदार आश्चर्य होता है!

इतिहास, संस्कृति की झलक दिखाता ग्वालियर मेला

● गूंज न्यूज नेटवर्क, ग्वालियर

मध्य प्रदेश के ग्वालियर व्यापार मेले की शुरुआत 1905 में तत्कालीन शासक कैलाशवासी माधवराव सिंधिया जी ने की थी। खास बात यह है इतने साल गुजर जाने के बाद भी यह मेला जवान है। इसके चेहरे का नूर हर साल बढ़ता ही जा रहा है, क्योंकि यहां पहुंचने वाले सैलानियों को सौगातें देने के लिए सरकार निरंतर प्रयासरत रहती है। ग्वालियर व्यापार मेला परिसर 104 एकड़ में फैला हुआ है। इसमें बनी कच्ची-पक्की दुकानों में ग्वालियर के अलावा अन्य राज्यों से आए व्यापारी अपने उत्पादों को सजाते हैं। कुछ चबूतरे भी हैं, जिन पर बैठकर खाने-पीने वाले अपने सामान का विक्रय करते हैं। रेसक्रास स्थित व्यापार मेला मैदान को मध्यप्रदेश का प्रगति मैदान भी कहा जाता है। व्यापारिक दृष्टिकोण से ग्वालियर व्यापार मेला काफी महात्वपूर्ण है। खरीदार और व्यापारियों के लिए शुरू किए आफर पूरे मप्र में लागू हो जाते हैं। अगर व्यापार मेले के आटोमोबाइल सेक्टर में सजे किसी कंपनी के शोरूम पर डिस्काउंट दिया जा रहा है तो वह आफर प्रदेश के हर शोरूम पर शुरू किया जाता है। इतना ही यहां लगने वाली प्रदर्शनी में सरकार की योजनाएं भी सामने आती हैं। इसका फायदा अंचल के ग्रामीण क्षेत्रों से आए किसानों को मिलता है। वे योजनाओं को जान पाते हैं और फिर फायदा भी लेते हैं।

इस साल के ग्वालियर व्यापार मेले में विभिन्न व्यवस्थाओं को अंजाम देने के लिये कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी अक्षय कुमार सिंह ने वरिष्ठ अधिकारियों को जिम्मेदारियाँ सौंपी हैं। उन्होंने सभी अधिकारियों से चैकलिस्ट बनाकर व्यवस्थाओं को मूर्तरूप देने के लिये कहा है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक राजेश चंदेल व अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ऋषिकेश मीणा को मेला परिसर में पार्किंग स्थल और उसके आस-पास के क्षेत्र पर मेला अवधि के दौरान समुचित पुलिस व्यवस्था लगाने और यातायात व्यवस्था सुचारू करने का दायित्व सौंपा गया है। इसी तरह अपर जिला दण्डाधिकारी टी एन सिंह को मेला अवधि के दौरान कानून व्यवस्था बनाए रखने और जांच दल गठित करने की जिम्मेदारी दी गई है। मेला सचिव निरंजनलाल श्रीवास्तव स्टॉल आवंटन व टेंट व्यवस्था की जिम्मेदारी निभायेंगे। ऐतिहासिक श्रीमंत माधवराव सिंधिया ग्वालियर व्यापार मेला के आयोजन की तैयारियाँ जारी हैं। मेले से संबंधित सभी व्यवस्थाओं को सुव्यवस्थित ढंग से अंजाम देने के लिये 10 समितियाँ गठित की गई हैं। मेला सचिव एन एल श्रीवास्तव ने बताया कि मेला प्राधिकरण संचालक मण्डल की बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार इस साल 25 दिसम्बर से 25 फरवरी तक लगेगा। उन्होंने बताया कि मेले की व्यवस्थाओं को अंजाम देने के लिये सांस्कृतिक समिति, बाजार व्यवस्था समिति, झूला जाँच समिति, विद्युत समिति, प्रचार-प्रसार समिति, दंगल समिति, साफ-सफाई (जन सुविधा समिति), पार्किंग व्यवस्था समिति, विभागीय प्रदर्शनी समिति एवं सुरक्षा

अटलजी की कवितायें युवाओं को देती हैं प्रेरणा और मार्गदर्शन

भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के जीवन का क्षण-क्षण भारत को परम वैभव के शिखर पर ले जाने हेतु समर्पित रहा। अटल जी जैसे बहुआयामी व्यक्तित्व वाले जननेता को पाकर भारतीय राजनीति धन्य हुई है। उनका मूल्यों व आदर्शों आधारित जीवन हम करोड़ों कार्यकर्ताओं के लिए एक अनमोल धरोहर है। अटल बिहारी वाजपेयी, बिहारी का जन्म 25 दिसंबर, 1924, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत में हुआ था और वह भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता थे और 1996 में और फिर 1998 से 2004 तक भारत के दो बार प्रधान मंत्री रहे।

वाजपेयी पहली बार 1957 में भारतीय जनसंघ (बीजेएस) के सदस्य के रूप में संसद के लिए चुने गए थे, जो भाजपा के अग्रदूत थे। 1977 में बीजेएस जनता पार्टी बनाने के लिए तीन अन्य दलों में शामिल हो गया, जिसने जुलाई 1979 तक सरकार का नेतृत्व किया। जनता सरकार में विदेश मंत्री के रूप में, वाजपेयी ने पाकिस्तान और चीन के साथ संबंधों में सुधार के लिए प्रतिष्ठा अर्जित की। 1980 में, जनता पार्टी में विभाजन के बाद, वाजपेयी ने बीजेएस को खुद को भाजपा के रूप में पुनर्गठित करने में मदद की।

भारत माँ के सच्चे सपूत, राष्ट्र पुरुष, राष्ट्र मार्गदर्शक, सच्चे देशभक्त ना जाने कितनी उपाधियों से पुकार जाता था भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी को वो सही मायने में भारत रत्न थे। इन सबसे भी बढ़कर पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी एक अच्छे इंसान थे। जिन्होंने जमीन से जुड़े रहकर राजनीति की और ''जनता के प्रधानमंत्री'' के रूप में लोगों के दिलों में अपनी खास जगह बनायी थी। एक ऐसे इंसान जो बच्चे, युवाओं, महिलाओं, बुजुर्गों सभी के बीच में लोकप्रिय थे। देश का हर युवा, बच्चा उन्हें अपना

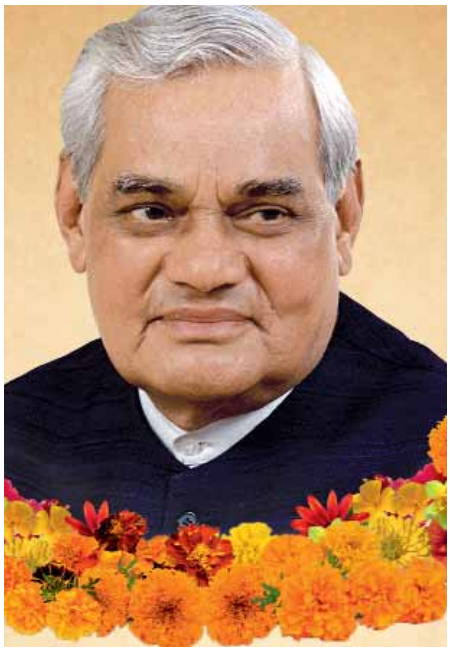

आदर्श मानता था। अटल बिहारी वाजपेयी जी ने आजीवन अविवाहित रहने का निर्णय लिया और जिसका उन्होंने अपने अंतिम समय तक निर्वहन किया। बेशक अटल बिहारी वाजपेयी जी कुंवारे थे लेकिन देश का हर युवा उनकी संतान की तरह था। देश के करोडो बच्चे और युवा उनकी संतान थे। पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी का बच्चों और युवाओं के प्रति खास लगाव था। इसी लगाव के कारण पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी बच्चों और युवाओं के दिल में खास जगह बनाते थे।

देश का हर युवा, बच्चा उन्हें अपना आदर्श मानता था। अटल बिहारी वाजपेयी जी ने आजीवन अविवाहित रहने का निर्णय लिया और जिसका उन्होंने अपने अंतिम समय तक निर्वहन किया। बेशक अटल बिहारी वाजपेयी जी कुंवारे थे लेकिन देश का हर युवा उनकी संतान की तरह था। देश के करोडो बच्चे और युवा उनकी संतान थे। पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी का बच्चों और युवाओं के प्रति खास लगाव था। इसी लगाव के कारण पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी बच्चों और युवाओं के दिल में खास जगह बनाते थे। भारत की राजनीति में मूल्यों और आदर्शों को स्थापित करने वाले राजनेता और प्रधानमंत्री के रूप में पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी का काम बहुत शानदार रहा। उनके कार्यों की बदौलत ही उन्हें भारत के ढांचागत विकास का दूरदृष्टा कहा जाता है। सब के चहेते और विरोधियों का भी दिल जीत लेने वाले बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी पंडित अटल बिहारी वाजपेयी का सार्वजनिक जीवन बहुत ही बेदाग और साफ सुथरा था इसी बेदाग छवि और साफ सुथरे सार्वजनिक जीवन की वजह से अटल बिहारी वाजपेयी जी का हर कोई सम्मान करता था। उनके विरोधी भी उनके प्रशंसक थे। पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी के लिए राष्ट्रहित सदा सर्वोपरि रहा। तभी उन्हें राष्ट्रपुरुष कहा जाता था। पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी की बातें और विचार सदां तर्कपूर्ण होते थे और उनके विचारों में जवान सोच झलकती थी। यही झलक उन्हें युवाओं में लोकप्रिय बनाती थी।

ग्वालियर शहर के नजदीक उदयपुर का नीम पर्वत ले रहा है पर्यटन स्थल का आकार

पर्यटकों को नीम पर्वत के नजदीक 'होम-स्टे' की सुविधा दिलाने के प्रयास

● गूंज न्यूज नेटवर्क, ग्वालियर

हरितिमा की चादर ओढ़े खड़ीं ग्राम उदयपुर की पहाड़ियाँ पर्यटन स्थल व पिकनिक स्पॉट का रूप ले रही है। जिले में नीम व शीशम पर्वत के नाम से ये पहाड़ियाँ जानी जाती हैं। जिला प्रशासन एवं जिला पंचायत द्वारा उदयपुर ग्राम पंचायत व वीर नारी स्व-सहायता समूह की मदद से ग्वालियर शहर के नजदीक ग्राम उदयपुर में स्थित इन पहाड़ियों पर उन तमाम सुविधाओं को जुटाया जा रहा है, जिससे यह क्षेत्र पिकनिक स्पॉट के रूप में विकसित हो सके। कलेक्टर श्री अक्षय कुमार सिंह, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री राजेश चंदेल व जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री विवेक कुमार ने रविवार को नीम पर्वत पहुँचकर यहाँ अब तक हुए कार्यों का जायजा लिया। साथ ही पर्यटन सुविधाओं से संबंधित सभी कार्यों को जल्द से जल्द धरातल पर लाने के निर्देश दिए।

कलेक्टर श्री सिंह ने कहा कि उदयपुर के नीम व शीशम पर्वत को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के साथ-साथ यहाँ पर्यटकों को होम स्टे की सुविधा उपलब्ध कराने के प्रयास भी किए जायेंगे। इसके लिये जल्द ही पंजीयन का काम शुरू किया जायेगा। उन्होंने कार्यों का जायजा लेने के दौरान कहा कि सभी सुविधाओं को इस प्रकार से मूर्तरूप दें, जिससे यहाँ की स्थानीयता की झलक साफ नजर आए। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री राजेश चंदेल ने कहा कि उदयपुर में पर्यटकों की सुरक्षा के लिहाज से पर्याप्त कदम उठाए जायेंगे। उन्होंने भरोसा दिलाया कि नीम पर्वत को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने में पुलिस हर संभव सहयोग करेगी। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री विवेक कुमार ने बताया कि नीम पर्वत को इस प्रकार से पर्यटन व पिकनिक स्पॉट के रूप में विकसित किया जा रहा है, जिससे शहर से आने वाले पर्यटक यहाँ पर्वतीय एवं वनांचल क्षेत्र का अनुभव कर सुकून के पल गुजार सकें। उन्होंने बताया कि नीम पर्वत पर कैन्टीन, जन सुविधा केन्द्र, पर्यटकों के बैठने के लिये कलात्मक आकर्षक बैंच व टेंट की सुविधा मूर्तरूप ले रही है। साथ ही सुरक्षा को ध्यान में रखकर सम्पूर्ण नीम पर्वत के चारों ओर ऊँची बाउण्ड्रीवॉल बनाई गई है। ज्ञात हो महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) के तहत ग्वालियर शहर के समीप जनपद पंचायत मुरार के ग्राम उदयपुर में नीम व शीशम पर्वत विकसित किए गए हैं। नीम पर्वत पर वर्ष 2011 में लगभग 20 हजार व शीशम पर्वत पर लगभग 15 हजार पौधे रोपे गए थे, जो अब पेड़ का आकार ले चुके हैं। इस क्षेत्र से गुजरने वाले लोगों को नीम व शीशम पर्वत की हरीतिमा दूर से ही आकर्षित करती है। नीम व शीशम पर्वत के निरीक्षण के दौरान जिला पंचायत के परियोजना अधिकारी श्री अनुपम शर्मा तथा अन्य संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

कलेक्टर, एसएसपी एवं जिला पंचायत सीईओ ने लिया कार्यों का जायजा

सीएम बोले- प्रदेश की कोई योजना बंद नहीं होगी, भाजपा का संकल्प पत्र रामायण-गीता की तरह

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि मध्य प्रदेश की कोई योजना बंद नहीं होगी। मध्य प्रदेश में पैसे की कोई कमी नहीं है। लाडली बहना के लिए जो तारीख नियत है उसी पर राशि डाली जा रही है। सीएम ने राज्यपाल के अभिभाषण पर कृतज्ञता प्रकट करते हुए अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि भाजपा का संकल्प पत्र धर्म ग्रंथ रामायण-गीता की तरह है। संकल्प पत्र के वादे को अक्षरशः पूरा किया जाएगा। 5 साल की सरकार में हर वादे पूरे होंगे। ये एक दिन की सरकार नहीं है, न ही 15 महीने की सरकार है। हम पांच साल बाद बात करेंगे। उन्होंने कहा कि पश्चिम के लोगों ने भारतीय संस्कृति को लज्जित करने का काम किया है। कुछ लोग सूर्य उदय से दिन की शुरुआत करते हैं, जबकि कुछ सूर्यास्त के बाद जागते हैं। सीएम ने कहा कि मोदी ने दुनिया में देश का मान बढ़ाया है।

सीएम यादव ने कहा कि कांग्रेस के कारण विक्रम संवत की परंपरा खत्म हुई है। आदित्यनाथजी ने कोट किया 2 हजार साल पहले विक्रमादित्य ने अयोध्या का मंदिर बनाया। दुनिया में तीन भाई प्रसिद्ध हैं राम-लक्ष्मण, कृष्ण-बलराम और विक्रमादित्य-भर्तृहरि। नई शिक्षा नीति लागू कर गलती सुधारी गई है। उन्होंने कहा कि 55 एक्सीलेंस कॉलेज खोले जाएंगे। रजिस्ट्री के साथ नामांतरण होगा। सुप्रीम कोर्ट के तीन तलाक का फैसला कांग्रेस ने लोकसभा में बदला। कांग्रेस ने राम मंदिर के मामले को भी अटकाया।

सरकार कराएगी अयोध्या दर्शन

सीएम ने कहा कि जो यात्री अयोध्या जाना चाहेंगे उन्हें तीर्थ दर्शन योजना से अयोध्या भेजा जाएगा। ट्रेन, बस से मध्य प्रदेश की जनता को सरकार राम लला के दर्शन के लिए अयोध्या भेजेगी। हम राम भक्तों का स्वागत करेंगे। राम भक्तों के लिए मध्य प्रदेश की सरकार फूल बिछाएगी।

राम के बाद कृष्ण पर फोकस

सीएम ने सदन में एलान किया कि मध्य प्रदेश में कृष्णजी ने जहां-जहां लीलाएं की हैं। प्रदेश सरकार उन स्थानों को विकसित करेगी। कांग्रेस को पहले राम पर आपत्ति थी अब कृष्ण से हो रही है। सीएम ने कहा कि अब जो सिंहस्थ होगा वो पुराने सिंहस्थ से और अच्छा होगा। सिंहस्थ में किसी भी प्रकार की कमी नहीं होगी।

सिंहस्थ-2028 के लिये उज्जैन शहर का ट्रैफिक मैनेजमेंट प्लान तैयार करें

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उज्जैन में शहर विकास के कार्यों की समीक्षा करते हुए निर्देशित किया कि सिंहस्थ-2028 को दृष्टिगत रखते हुए अभी से उज्जैन शहर का ट्रैफिक मैनेजमेंट प्लान जिला प्रशासन तैयार करें। यह प्रयास करें कि श्रद्धालु कम से कम समय में महाकाल मन्दिर पहुंच जायें, उन्हें अनावश्यक रूप से दो-तीन किमी न चलना पड़े। प्रशासन यह व्यवस्था सुनिश्चित करें कि श्रद्धालुओं को तिरूपति बालाजी मन्दिर की तरह महाकाल मन्दिर में कम समय में दर्शन हो जाये। एक टीम तिरूपति बालाजी मन्दिर जाकर वहां की वस्था का अवलोकन कर कार्य योजना बनाये।

छात्र संघ की राजनीति से की शुरुआत मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने

उज्जैन दक्षिण के विधायक और अब तक कैबिनेट मंत्री (उच्च शिक्षा विभाग) रहे डा. मोहन यादव मप्र के मुख्यमंत्री बनाए गए हैं। स्थानीय माधव विज्ञान कालेज में 1982 से छात्र संघ से राजनीति की शुरुआत करने वाले मोहन यादव 2013 में पहली बार विधायक बने और 2018 का चुनाव जीतने और कमल नाथ सरकार गिरने के बाद कैबिनेट मंत्री बने। हाल में संपन्न हुए चुनाव में उन्होंने निकटतम प्रत्याशी कांग्रेस के चेतन यादव को 12 हजार 941 मतों से हराया। इसके बाद उनके फिर से मंत्री बनने की चर्चा थी, इस बीच सोमवार शाम आई खबर ने उज्जैन भाजपा में खुशी की लहर दौड़ा दी। डा. मोहन यादव पुत्र पूनमचंद यादव 58 वर्ष के हैं। उनके परिवार में पत्नी और तीन बच्चे (दो बेटे और एक बेटी) हैं। दो बच्चे डाक्टर हैं। मुंज मार्ग, फ्रीगंज निवासी डा. यादव ने अपने राजनीतिक करियर की शुरुआत 1982 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में शामिल होकर की। 1982 में माधव विज्ञान महाविद्यालय छात्रसंघ के सह-सचिव एवं 1984 में अध्यक्ष बने। 1984 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद उज्जैन के नगर मंत्री एवं 1986 में विभाग प्रमुख बने। 1991-92 में विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय मंत्री बने। फिर 1993-95 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, उज्जैन नगर के सह खंड कार्यवाह, 1996 में खंड कार्यवाह और नगर कार्यवाह रहे। फिर 1999 में भाजयुमो के उज्जैन संभाग प्रभारी, 2000-2003 में विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन की कार्यपरिषद के सदस्य, 2000-2003 में भाजपा के नगर जिला महामंत्री एवं 2004 में भाजपा की प्रदेश कार्य समिति के सदस्य रहे।2004 में सिंहस्थ, मध्य प्रदेश की केंद्रीय समिति के सदस्य, 2004-2010 में उज्जैन विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष (राज्य मंत्री दर्जा), 2008 से भारत स्काउट एंड गाइड के जिलाध्यक्ष, 2011-2013 में मध्य प्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम, भोपाल के अध्यक्ष (कैबिनेट मंत्री दर्जा) रहे। इसके बाद 2013. 2018 और फिर 2023 विधानसभा चुनाव लड़े और जीते। डा. मोहन यादव ने बीएससी, एलएलबी, एमए, एमबीए, पीएचडी की डिग्री हासिल की है। भारतीय संस्कृति, विज्ञान, धर्मग्रंथ पर भी डा. यादव की अच्छी पकड़ है। विकास कार्यों को लेकर उनका अपना विजन है। उज्जैन में मेडिकल कालेज, हवाई अड्डा, अंतरराष्ट्रीय खेल स्टेडियम के लिए यादव लगातार प्रयासरत रहे। सिंहस्थ-2028 को लेकर भी उनकी योजना तैयार है।

नरेंद्र सिंह तोमर निर्विरोध चुने गए मध्य प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष

जनहित के मुद्दों पर सार्थक बहस की प्राथमिकता

मध्य प्रदेश की 16वीं विधानसभा के अध्यक्षनरेंद्र सिंह तोमर को निर्विरोध चुन लिए गए। सदन के नेता डा.मोहन यादव, शिवराज सिंह चौहान, कैलाश विजयवर्गीय, डा. राजेन्द्र कुमार सिंह, भूपेन्द्र सिंह और जयवर्द्धन सिंह ने प्रस्ताव रखा गया, जिसका अन्य सदस्यों ने समर्थन किया। विधानसभा लोकतंत्र का मंदिर है। हम सब इसी आशा के साथ यहां आते हैं कि जनहित की बातों को उठाकर उनका समाधान निकालने का प्रयास करें। इस मंच का सकारात्मक उपयोग हो, जनहित के मुद्दों पर सार्थक बहस हो, यह मेरी प्राथमिकता रहेगी। यह बात बुधवार को सर्वसम्मति से विधानसभा अध्यक्ष चुने जाने के बाद नरेंद्र सिंह तोमर ने कही। वरिष्ठ नेता उन्हें आसंदी तक लेकर आए और फिर उन्होंने सदन की कार्यवाही का संचालन किया। सदस्यों ने तोमर के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए नए दायित्व के लिए बधाई और शुभकामनाएं दीं।सर्वसम्मति से चुने जाने के बाद उन्होंने सदन के वरिष्ठतम सदस्य गोपाल भार्गव द्वारा सामयिक अध्यक्ष के रूप कार्यवाही के सफल संचालन को लेकर आभार प्रकट जताया। तोमर ने कहा कि पंडित कुंजीलाल दुबे से लेकर गिरीश गौतम तक इस लंबी यात्रा में मेरे से पूर्व अध्यक्षों ने अनेक प्रकार के मानदंड, परंपराएं स्थापित की हैं। तोमर ने कहा कि अध्यक्ष के रूप में मेरी ईमानदार प्रयास होगा कि मैं आपकी अपेक्षा के अनुसार अपने दायित्व का निर्वहन कर सकूं। आप सबने मेरे बारे में अपने विचार व्यक्त किए। मुझे नहीं मालूम कि मैं उन विचारों के योग्य हूं या नहीं लेकिन मैं इतना जरूर जानता हूं कि मेरी यह जवाबदेही है कि आपने जो भाव मेरे लिए प्रकट किए हैं उनका सम्मान करूं और उसको निभाने की पूरी कोशिश करूं। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र की यह खूबसूरती है कि पक्ष है तो विपक्ष है और पक्ष के बिना विपक्ष अधूरा है और विपक्ष के बिना पक्ष अधूरा है। पक्ष-विपक्ष लोकतंत्र के दो पाहिए हैं और दोनों के मजबूती के साथ कदम से कदम, कंधे से कंधा मिलाकर चलने से हम सभी लक्ष्य तक पहुंच सकते हैं। तोमर ने कहा कि आसंदी पर रहते हुए मेरा प्रयास होगा कि मेरी नजर हर सदस्य पर रहे और जो अधिकार उसे मिलना चाहिए, वह उससे वंचित न हो। इस बार विधान सभा में बहुत सारे नए सदस्य चुनकर आए हैं। वरिष्ठ सदस्यों उन्हें अपने अनुभव का लाभ दें। सामान्य तौर पर, जो वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य है, उस पर भौतिक भूमिका ज्यादा है और इसलिए कई बार अध्ययन का पक्ष ओझल हो जाता है और जो अध्ययन की शून्यता है, वह निश्चित रूप से किसी भी मनुष्य को शार्टकट ढूंढ़ने के लिए विवश करती है इसलिए पुस्तकालय का उपयोग नए सदस्यों को करना ही चाहिए। पुराने सदस्यों को भी यह नहीं मानकर चलना चाहिए कि वह सब सीख गए हैं।

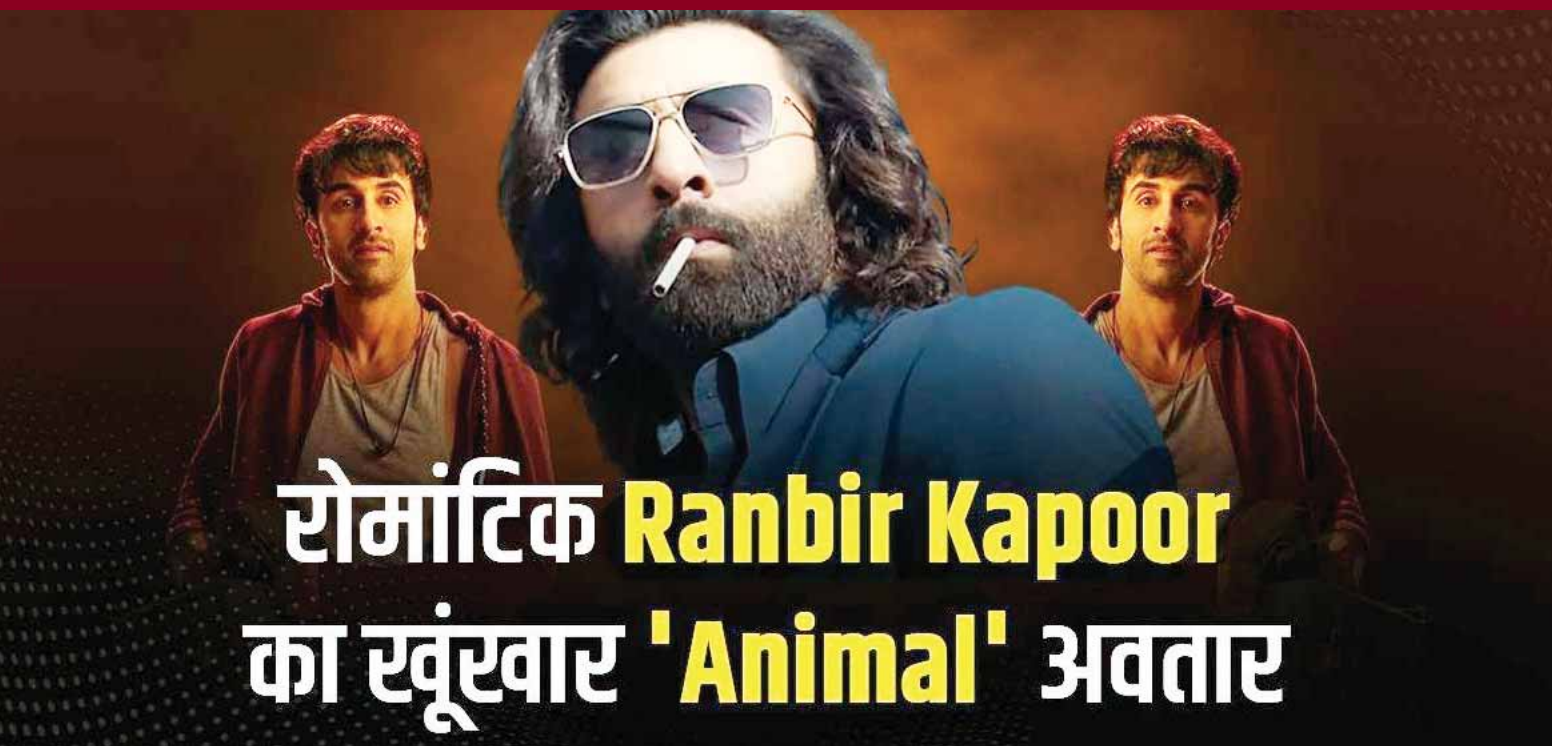

रोमांटिक Ranbir Kapoor का खूंखार 'Animal' अवतार

बी टाउन के सावरिया रणबीर कपूर अब खूंखार एनिमल बनकर सिल्वर स्क्रीन के विलेन को टक्कर देने आ रहे हैं। रणबीर ने साल 2007 में फिल्मी दुनिया में कदम रखा था और इन 13 सालों में हमने उन्हें एक रोमांटिक हीरो के रूप में बहुत पसंद किया।पर्दे पर चाहे सावरिया बनना हो, ऑटिस्टिक लड़की पर दिल हार बैठने वाला बर्फी या फिर दिल टूटा आशिक अयान..., रणबीर कपूर ने हर किरदार में जान फूंकी है। पर्दे पर उनकी हर प्रेम कहानी हिट साबित हुई। वह बॉलीवुड के रोमांटिक हीरो कहलाये जाते हैं। मगर शायद फिल्म एनिमल के बाद उनकी ये छवि हमेशा के लिए बदल जाए। एनिमल से पहले रणबीर कपूर ने बड़े पर्दे पर खूब रोमांस किया। दीपिका पादुकोण से लेकर कटरीना कैफ और श्रद्धा कपूर तक, बड़ी-बड़ी अभिनेत्री के साथ रणबीर कपूर की ऑन-स्क्रीन लव स्टोरी ने लाखों दिलों को जीता। कभी वह गूंगे-बहरे बर्फी बनकर रोमांस करते दिखे, तो कभी एक तरफे प्यार में दीवाने हो गए। संदीप रेड्डी वांगा द्वारा निर्देशित एनिमल रणबीर की मच अवेटेड फिल्म है, जिसमें वह पहली बार एक वॉयलेंट किरदार में दिखाई देंगे। हाल ही में रिलीज हुए%एनिमल के ट्रेलर ने फैंस के रोंगटे खड़े कर दिए। रणबीर के डरावने किरदार ने फैंस के होश उड़ा दिए हैं। यूं तो आपने रणबीर कपूर को हमेशा हीरोइनों के लिए बगावत करते हुए देखा होगा, लेकिन पहली बार वह अपने पिता के लिए पागलपन करते दिखेंगे। पिता के प्यार के लिए पागल रणबीर सारी हदें पार करते हुए दिखाई देंगे। एनिमल में अर्जुन सिंह बने रणबीर कपूर का एक-एक एक्शन सीन देख फैंस की आंखें फटी की फटी रह गईं। ट्रेलर में रणबीर का ये रूप देख अब लोग बड़े पर्दे पर इसे देखने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। रणबीर कपूर के अलावा फिल्म में अनिल कपूर (बलवीर सिंह), बॉबी देओल और रश्मिका मंदाना हैं। रश्मिका फिल्म में रणबीर की पत्नी की भूमिका निभा रही हैं, जबकि अनिल पिता का। बॉबी देओल विलेन बनकर धूम मचाते दिखेंगे। फिल्म 1 दिसंबर 2023 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

वहीं दूसरी ओर फिल्म एनिमल को लेकर बॉबी देओल के नाम की चर्चा काफी हो रही है। इस मूवी में जिस तरह की एक्टिंग बॉबी ने की है उसकी जितनी तारीफ की जा उतनी कम है। एनिमल में कम सीन होने के बावजूद बॉबी ने महफिल लूट ली है। इस बीच हम आपको बताएंगे की

बॉबी देओल ने बॉलीवुड में कमबैक को लेकर क्या कहा था। सुपरस्टार रणबीर कपूर की फिल्म एनिमल का नाम इस समय लगातार सुर्खियां बटोर रहा है। इस मूवी में जितनी शानदार एक्टिंग रणबीर कपूर ने की है, ठीक उसी तरह बॉबी देओल ने भी अपने अभिनय से समा बांध दिया है। एनिमल में कम सीन होने के बावजूद बॉबी देओल ने अपने एक्सप्रेशन से हर किसी दिल जीत लिया है, जिसके चलते एक्टर की जमकर तारीफ हो रही है। इस बीच हम आपको बताएंगे कि हिंदी सिनेमा में कमबैक को लेकर बॉबी देओल ने एक बार क्या कहा था। 90 के दशक के सुपरस्टार के बारे में जिक्र किया जाए तो उसमें बॉबी देओल का नाम जरूर शामिल होगा। दमदार एक्टिंग के लिए बॉबी काफी जाने जाते हैं। लेकिन एक वक्त बॉबी देओल के करियर में ऐसा आया, जबकि उनका फिल्मी करियर खत्म होने की कगार पर रहा। लंबे समय तक फिल्मी दुनिया से गायब रहने के बाद बॉबी देओल ने साल 2018 में सलमान खान की मूवी रेस 3 से कमबैक किया।हालांकि इससे उनको कुछ खास सफलता हाथ नहीं लगी, लेकिन क्लास 83 और आश्रम जैसी वेब सीरीज से बॉबी देओल ने अपनी छाप छोड़ी। 2022 में बॉबी देओल ने बीबीसी को एक इंटरव्यू दिया, जिसमें उन्होंने बताया-बेव सीरीज आश्रम, क्लॉस 83 और फिल्म हाउसफुल 4 और लव हॉस्टल से बॉबी देओल ने अपनी शानदार एक्टिंग का लोहा मनवाया। लेकिन मगर सही मायने में बॉबी देओल के कमबैक की चर्चा की जाए तो वो फिल्म एनिमल है। हाल ही में आई फिल्म एनिमल में विलेन अबरार के किरदार में बॉबी देओल ने बिना एक शब्द कहे जो दमखम दिखाया है, वो वाकई काबिल ए तारीफ है।

Pankaj Tripathi Success Story

पिता करते थे किसान, बिहार के एक छोटे से गांव में रहने वाले पंकज त्रिपाठी कैसे बनें आज के दिग्गज अभिनेता

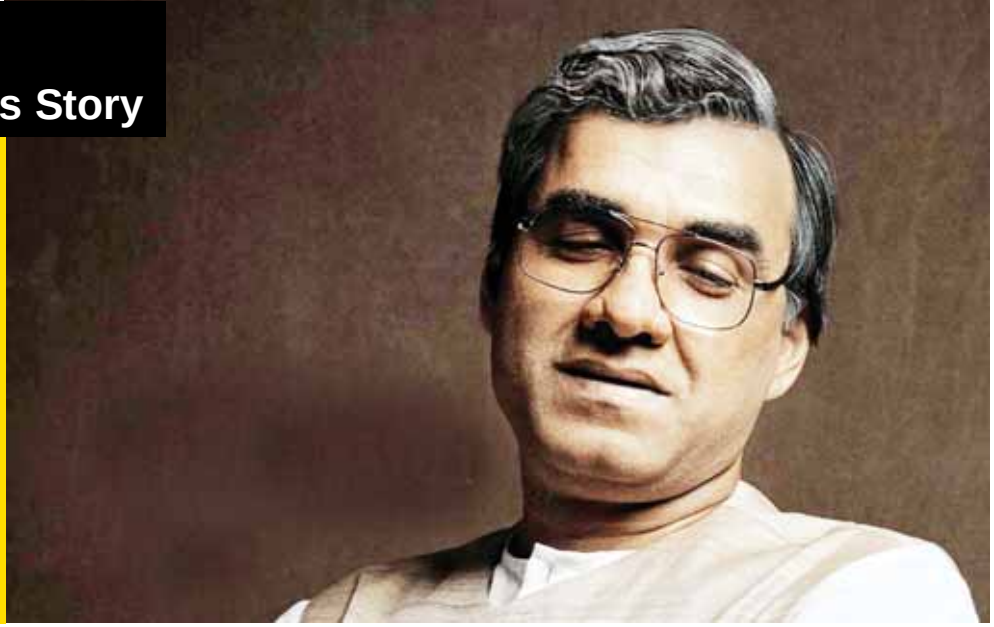

अभिनेता पंकज त्रिपाठी ने घोषणा की है कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जीवन पर आधारित उनकी आगामी फिल्म मैं अटल हूं 19 जनवरी, 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित अभिनेता त्रिपाठी ने सोशल मीडिया मंच इंस्टाग्राम पर यह घोषणा करते हुए फिल्म के एक नए पोस्टर का भी अनावरण किया। त्रिपाठी ने लिखा, दिलदार, फौलादी, एक बहुमुखी कवि, नए भारत का स्वप्नदृष्टादूरदर्शी व्यक्ति।श्री अटल बिहारी वाजपेयी की कहानी मैं अटल हूं 19 जनवरी, 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। फिल्म निर्माता रवि जाधव ने इस फिल्म का निर्देशन किया है जो 'नटरंग' और 'बालगंधर्व' जैसी राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्मों के लिए जाने जाते हैं। इसकी पटकथा उत्कर्ष नैथानी ने लिखी है। मैं अटल हूं फिल्म का निर्माण विनोद भानुशाली, संदीप सिंह और कमलेश भानुशाली ने किया है। वहीं, भावेश भानुशाली और सैम खान फिल्म के सह-निर्माता हैं। मिर्ज़ापुर की प्रसिद्ध हस्ती और प्रतिष्ठित बॉलीवुड एक्टर पंकज त्रिपाठी बिहार के एक ब्राह्मण परिवार से हैं। मध्यम आयु में साधारण शुरुआत और छोटी भूमिकाओं से शुरू हुई उनकी यात्रा ने उन्हें बॉलीवुड के सबसे प्रमुख सितारों में से एक में बदल दिया है - एक ऐसी कहानी जिसे साझा किया जाना चाहिए। 5 सितंबर 1976 को बिहार के एक गांव में पंडित बनारस और हेमवंती त्रिपाठी की चार संतानों में सबसे छोटे के रूप में जन्मे पंकज त्रिपाठी को वित्तीय चुनौतियों का सामना करना पड़ा। उनके पिता, जो कृषि में लगे हुए थे और एक पुजारी के रूप में काम करते थे, ने पंकज में एक मजबूत कार्य नीति पैदा की, जिन्होंने 17 साल की उम्र तक पारिवारिक खेती में भी योगदान दिया।

अपरिहार्य प्रश्न उठता है- इस ग्रामीण परिवेश में अभिनय की चिंगारी उन्हें कैसे मिली? ग्रामीण जीवन से गहराई से जुड़े पंकज स्थानीय उत्सव कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। अपनी किशोरावस्था के दौरान, उन्होंने नाटकों और नाटकों में एक लड़की की भूमिका निभाते हुए ग्रामीणों को मोहित करने वाली भूमिकाएँ निभाईं। इन शुरुआती प्रदर्शनों ने अभिनय में करियर बनाने के लिए उनके आत्मविश्वास को बढ़ाया।

10+2 की पढ़ाई पूरी करने के बाद, पंकज होटल प्रबंधन संस्थान में आगे की शिक्षा के लिए पटना चले

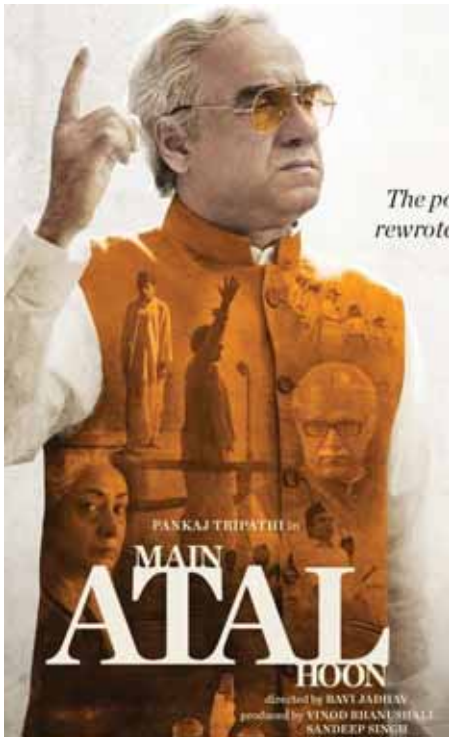

गए। अभिनय के प्रति अपने जुनून के साथ शिक्षाविदों को संतुलित करते हुए, उन्होंने थिएटर में काम किया और कॉलेज की राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लिया। विभिन्न प्रकार के स्ट्रीट शो के प्रदर्शन के माध्यम से नाटकों के प्रति उनका आकर्षण विकसित हुआ।

अभिनय के प्रति दृढ़ निश्चय के बावजूद असफलता के डर के कारण पंकज को एक होटल में नौकरी करनी पड़ी। इसके साथ ही, उन्होंने नाटकीय क्षेत्र में अपने प्रयास जारी रखे- दिन के दौरान होटल में काम करना और रात के दौरान थिएटर में खुद को डुबोना उनकी कठिन यात्रा की शुरुआत थी।पटना में सात चुनौतीपूर्ण महीनों को सहने के बाद, पंकज ने दिल्ली जाने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया। सफलतापूर्वक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उन्होंने प्रतिष्ठित राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एनएसडी) में दाखिला लिया। एनएसडी को तीन साल समर्पित करके, पंकज ने अपना स्नातक प्रमाणपत्र हासिल किया और स्ट्रीट शो में भाग लेने के लिए पटना लौट आए। हालाँकि, यह एहसास हुआ कि अकेले सड़क शो उन्हें जीवन भर बनाए नहीं रख सकते। नतीजतन, अक्टूबर 2004 में, पंकज अपनी पत्नी मृदुला के साथ सपनों के शहर-मुंबई की यात्रा पर निकल पड़े।

2004 से 2011 तक की अवधि ने पंकज से अटूट धैर्य और अथक परिश्रम की मांग की। इन वर्षों के दौरान, उन्होंने कई ऑडिशन में भाग लिया और विज्ञापनों, टीवी शो और फिल्मों में विभिन्न छोटी भूमिकाएँ निभाईं। अपने काम को कभी कमतर न आंकते हुए पंकज डटे रहे। उन्हें सफलता 2012 में गैंग्स ऑफ वासेपुर श्रृंखला की रिलीज के साथ मिली, जहां सुल्तान के उनके विरोधी चरित्र ने दर्शकों पर एक अमिट छाप छोड़ी। तब से, उन्होंने 60 से अधिक फिल्मों में अभिनय किया, कई प्रशंसाएँ प्राप्त कीं और खुद को बॉलीवुड में एक प्रमुख आलोचक के रूप में स्थापित किया। अभी हाल ही में उनकी आने वाली फिल्म मैं अटल हूं काफी चर्चाओं में हैं जिसमें उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का किरदार निभाया है।

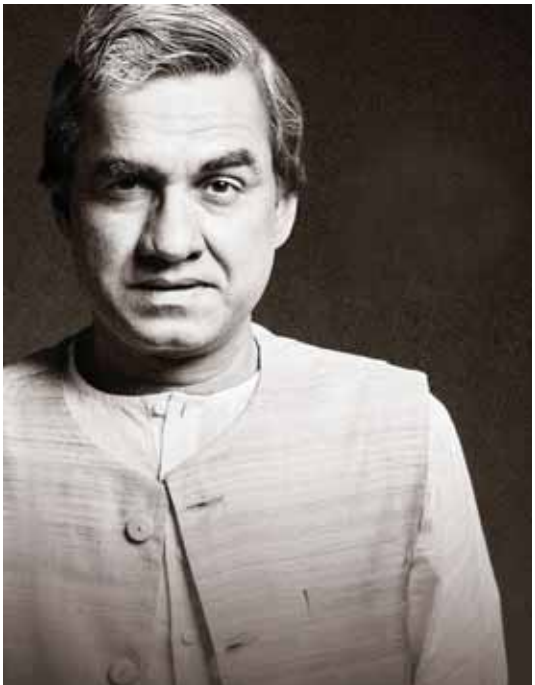

मानव अधिकारों के साथ ना हो खिलवाड़

विश्व युद्ध, आतंकवाद एवं असंतुलित समाज रचना की विभीषिका से झुलस रहे लोगों के दर्द को समझ कर और उसको महसूस करने की दृष्टि से संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा ने विश्व मानवाधिकार दिवस घोषित किया। प्रत्येक वर्ष 10 दिसम्बर को यह दिवस दुनियाभर में मनाया जाता है। दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण वैश्विक प्रतिज्ञाओं में से एक 'मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा है, इस वर्ष उसकी 75वीं वर्षगांठ है। इस वर्ष मानवाधिकार दिवस की थीम 'सभी के लिए स्वतंत्रता, समानता और न्याय' है, जो मानव के अस्तित्व एवं अस्मिता को अक्षुण्ण रखने के संकल्प को बल देता है। किसी भी इंसान की जिंदगी, आजादी, बराबरी और सम्मान का अधिकार है- मानवाधिकार। यह दिवस एक मील का पत्थर है, जिसमें समृद्धि, प्रतिष्ठा, न्याय एवं शांतिपूर्ण सह अस्तित्व के प्रति मानव की आकांक्षा प्रतिबिंबित होती है।

तमाम प्रयासों के बावजूद मानव अधिकारों के हनन में हमारा देश पीछे नहीं है। आजादी के इतने सालों बाद भी बंधुआ मजदूरी को पूरी तरह से खत्म नहीं किया जा सका है। बाल मजदूरी जो एक मासूम की जिंदगी के साथ खिलवाड़ है, वह भी खुलेआम होता है। गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी आज भी मुंह बाए खड़ी हैं। रोटी, कपड़ा और मकान जो लोगों की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं वे भी हमारी सरकार पूरी नहीं कर पा रही हैं। शिक्षा का अधिकार, भोजन का अधिकार, रोजगार का अधिकार, स्वच्छ जीवन का अधिकार- ये सभी बुनियादी अधिकारों का हनन होना आज के तिथि में एक घिनौना पाप है, त्रासदी है, विडम्बना है। अगर आज भी हमारे देश के लोगों को जाति के नाम पर, धर्म के नाम पर, संप्रदाय के नाम पर, भाषा के नाम पर, क्षेत्र के नाम पर भेदभाव का शिकार होना पड़ता है तो लानत है इस देश के लोगों पर और यहाँ की सरकार पर। सरकारें यदि ईमानदारी से प्रयत्न करती तो इन समस्याओं को सालों पूर्व खत्म कर सकती थी लेकिन नहीं, सरकार और सरकार में बैठे उनके अफसर इनके अधिकारों की रक्षा नहीं करते बल्कि अधिकतर मामलों में अत्याचारियों, बाहुबलियों, अमीरों का साथ देकर बेबस और लाचार लोगों पर बर्बर व्यवहार करते हैं। आज भी देश में बहुत सारे ऐसे जगह हैं जहाँ लोग खुलकर साँस भी नहीं ले पा रहे हैं। दिल्ली में प्रदूषण की समस्या एक मानवाधिकार की बड़ी समस्या है। इलाज के नाम पर एवं शिक्षा के नाम पर जो लूट-खसोट सरेआम होती है, वह भी मानवाधिकार का खुला उल्लंघन है। जनता हर दिन राज्य के पुलिस और सैनिकों के मनमाने उपद्रवों की शिकार हो रही हैं।

युद्ध हमेशा मानवता के खिलाफ होता है। रूस और यूक्रेन, इजरायल एवं हमास के युद्ध के दौरान मानव व्यक्तित्व और मानवाधिकार का जो उल्लंघन हो रहा है, उसने संपूर्ण विश्व के शांतिवादियों को आन्दोलित कर दिया और यह सर्वत्र अनुभव किया जाने लगा कि यदि मानव के अधिकारों की सुरक्षा के लिए कोई कारगर कदम नहीं उठाया गया, तो मानवाधिकार महज एक मजाक बनकर रह जाएगा। मानवाधिकार दिवस एक प्रेरणा है, एक संकल्प है मानव को सम्मानजनक, सुरक्षित, सुशिक्षित एवं भयमुक्त जीवन का। जीवन के चौराहे पर खड़े होकर कोई यह सोचे कि मैं सबके लिये क्यों जीऊं? तो यह स्वार्थ-चेतना मानवाधिकार की सबसे बड़ी बाधा है। हम सबके लिये जीयें तो फिर न युद्ध का भय होगा, न असुरक्षा की आशंका, न अविश्वास, न हिंसा, न शोषण, न संग्रह, न शत्रुता का भाव, न किसी को नीचा दिखाने की कोशिश, न किसी की अस्मिता को लूटने का प्रयत्न। मानव जीवन के मूलभूत अधिकारों का हनन को रोकना एवं सारे निषेधात्मक भावों की अस्वीकृति का निर्माण ही नया मानव जीवन निर्मित कर सकेंगे और यही मानवाधिकार दिवस की सार्थकता होगी।

लगातार बढ़ रही है भारतीय नौसेना की ताकत

प्रतिवर्ष 4 दिसम्बर को भारतीय नौसेना के जांबाजों को याद करते हुए 'भारतीय नौसेना दिवस' मनाया जाता है। यह दिवस 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में भारतीय नौसेना की शानदार जीत के जश्न के रूप में मनाया जाता है। दरअसल 3 दिसम्बर 1971 को पाकिस्तानी सेना ने हमारे हवाई और सीमावर्ती क्षेत्र में हमला कर दिया था। दुष्ट पाकिस्तान को उस हमले का मुहतोड़ जवाब देने के लिए पाकिस्तानी नौसेना के कराची स्थित मुख्यालय को निशाने पर लेकर 'ऑपरेशन ट्राइडेंट' चलाया गया था और भारतीय नौसेना की मिसाइल नाव तथा दो युद्धपोतों के आक्रमणकारी समूह ने कराची के तट पर जहाजों के समूह पर हमला कर दिया था। हमले में पाकिस्तान के कई जहाज और ऑयल टैंकर तबाह कर दिए गए थे।

भारतीय नौसेना का वह हमला इतना आक्रामक था कि कराची बंदरगाह पूरी तरह बर्बाद हो गया था और कराची तेल डिपो पूरे सात दिनों तक धू-धूकर जलता रहा था। तेल टैंकरों में लगी आग की लपटों को 60 किलोमीटर दूर से भी देखा जा सकता था। उस हमले में कराची हार्बर फ्यूल स्टोरेज तबाह होने के कारण पाकिस्तानी नौसेना की कमर टूट गई थी। भारतीय नौसेना द्वारा किए गए हमले में तीन विद्युत क्लास मिसाइल बोट, दो एंटी-सबमरीन और एक टैंकर शामिल थे और युद्ध में भारतीय नौसेना ने पहली बार जहाज पर मार करने वाली एंटी शिप मिसाइल से हमला किया था। ऑपरेशन ट्राइडेंट की सफलता के बाद भारत-पाकिस्तान युद्ध में जीत हासिल करने वाली भारतीय नौसेना की शक्ति और बहादुरी को सलाम करने के लिए 4 दिसम्बर को भारतीय नौसेना दिवस मनाने की शुरूआत हुई। नौसेना दिवस हर साल एक खास थीम के साथ मनाया जाता है और 2023 के नौसेना दिवस का विषय है 'समुद्री क्षेत्र में परिचालन दक्षता, तत्परता और मिशन उपलब्धि', जो समुद्री क्षेत्र में परिचालन दक्षता, तैयारियों और मिशन की उपलब्धि को बनाए रखने, देश की सुरक्षा सुनिश्चित करने और समुद्री खतरों के खिलाफ सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए भारतीय नौसेना के समर्पण पर प्रकाश डालता है।

नौसेना दिवस समारोह में आयोजित किए जाने वाले

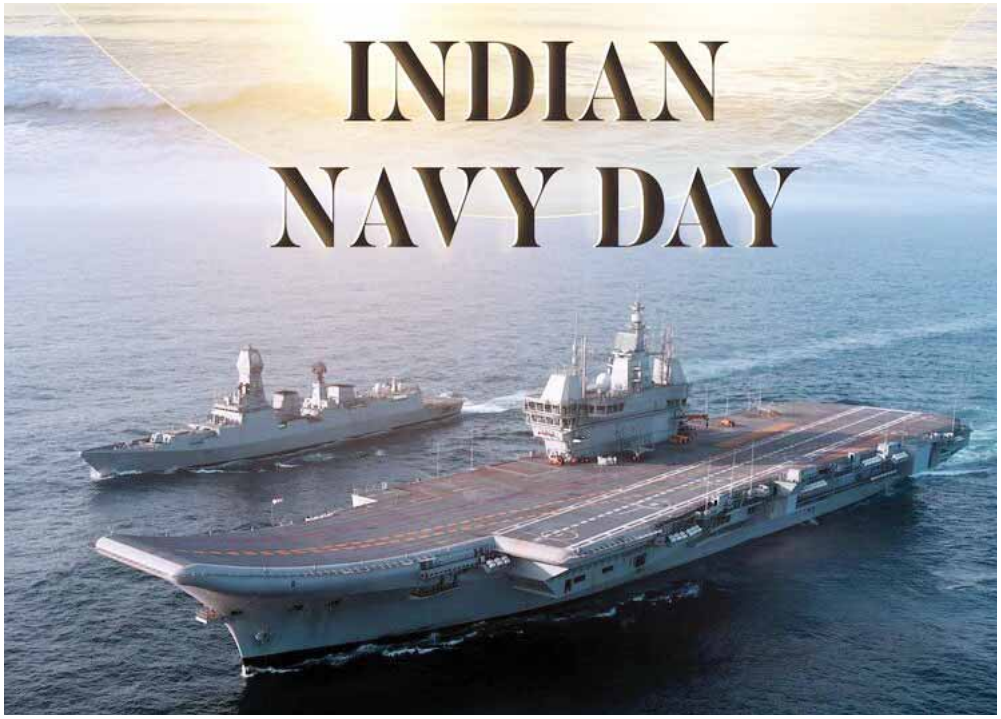

कार्यक्रमों की योजना विशाखापट्टनम स्थित भारतीय नौसेना कमान द्वारा तैयार की जाती है। समारोह की शुरुआत युद्ध स्मारक पर पुष्प अर्पित करके की जाती है, उसके बाद नौसेना की पनडुब्बियों, जहाजों, विमानों आदि की ताकत और कौशल का प्रदर्शन किया जाता है। नौसेना के मुंबई स्थित मुख्यालय में इस अवसर पर नौसैनिक अपने शौर्य का प्रदर्शन करते हैं और गेटवे ऑफ इंडिया बीटिंग रीट्रिट सेरेमनी का आयोजन किया जाता है। भारतीय नौसेना मुख्य रुप से तीन भागों (वेस्टर्न नेवल कमांड, ईस्टर्न नेवल कमांड तथा दक्षिणी नेवल कमांड) में बंटी है। वेस्टर्न नेवल कमांड का मुख्यालय मुंबई में, ईस्टर्न नेवल कमांड का विशाखापत्तनम में और दक्षिणी नेवल कमांड का कोच्चि में है। वेस्टर्न तथा ईस्टर्न कमांड ऑपरेशनल कमांड है, जो अरब सागर और बंगाल की खाड़ी को संभालती है जबकि दक्षिणी नेवल कमांड ट्रेनिंग कमांड है। केरल स्थित एझिमाला नौसेना अकादमी एशिया की सबसे बड़ी नौसेना अकादमी है। भारत के राष्ट्रपति भारतीय नौसेना के सुप्रीम कमांडर हैं। वॉइस एडमिरल राम दास कटारी 22 अप्रैल 1958 को भारतीय वायुसेना के पहले भारतीय चीफ बने थे। भारतीय नौसेना का नीति वाक्य है 'शं नो वरूणः' अर्थात् जल के देवता वरूण हमारे लिए मंगलकारी रहें।

महिला अग्निवीरों से और सशक्त हुई भारतीय नौसेना

नौसेना बलों की उपलब्धियां और राष्ट्र में उनके योगदान का वर्णन जितना किया जाए, उतना कम होगा। इसलिए भारत में ही नहीं, पूरे वर्ल्ड में हमारी नौसेना की वाहवाही होती है। इसलिए क्योंकि वह दिनों दिन अपने नए-नए प्रयोगों से नित नई ऊंचाइयां छू रही है। इस कड़ी में अब एक और नया अध्याय जुड़ गया है। नौसेना में आधी आबादी ने दस्तक दे दी है। इसी सीजन में एक हजार 'अग्निवीर महिला सैनिक' नौसेना में शामिल हुई हैं जिससे इस टुकडी की न सिर्फ ताकत बढ़ी, बल्कि उनके अनुशासन कार्यान्वयन में भी क्रांतिकारी परिवर्तन आना शुरू हुआ। आज'नौसेना दिवस'है इस बार ये दिन इसलिए भी खास है क्योंकि इसमें अब महिलाओं की भी सहभागिता सुनिश्चित हो गई है। नौसेना में पहली मर्तबा 'नौसेनिक पोत' पर महिला कमांडिंग अधिकारी को नियुक्त किया गया। सरकार का ये कदम निश्चित रूप से अकल्पनीय और सराहनीय है। महिला सशक्तिकरण में भारत ने एक और कदम आगे बढ़ा दिया है।

बहरहाल, आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण और जलीय निगरानी तंत्र में स्वदेशी जहाज, पनडुब्बी, आईएनएस विक्रांत, जलीय विमान, यूएवी यानी मानव रहित हवाई वाहन, हमारी नौसेना की ताकत हैं। उनकी सुरक्षा अभेद है। पलक झपकते ही दुश्मन को पानी में डुबोने की हिम्मत रखती है। नौसेना के इतिहास और आज के खास दिवस की बात करें, तो उसका एक सुनहरा युग हमने व्यतीत किया है। सन् 1971 के इंडो-पाक युद्ध के दौरान 'ऑपरेशन ट्राइडेंट' के शुरू होने कीं याद में हमारी सेना प्रत्येक वर्ष 4 दिसंबर को 'नौसेना दिवस' का पर्व मनाती है। इंडियन नेवी की पूर्ण स्थापना की जहां तक बात है तो श्रीगणेश 1612 में हुआ। जब ईस्ट इंडिया कंपनी ने 'रायल इंडियन नेवी' नाम से अपनी सेना बनाई थी। उस वक्त ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपने कमर्शियल शिपों की सुरक्षा को ध्यान में रखकर इस सैन्य का गठन किया था। पर, आजादी मिलने के बाद स्वतंत्र व्यवस्था ने 1950 में भारतीय नौसेना के रूप में पुनर्गठित कर दिया।

नेवी डे समुद्री सीमाओं को सुरक्षित सहजने और जलीय

ऑपरेशन व मिशनों को मुकम्मल करने के तौर पर भी याद किया जाता है। बंदरगाह की यात्राओं, विभिन्न देशों की नौसेनाओं के साथ संयुक्त अभ्यास, परोपकारी मिशनों, समुद्री किनारों को सुरक्षा देना और अंतरराष्ट्रीय संबंधों को बनाए रखने की जिम्मेदारी भी इन्हीं कंधों पर होती है। नौसेना की अकल्पनीय भूमिका पर तो चर्चाएं होती ही है, उनकी देश भक्त निष्ठा जनमानस को सेना के प्रति आदर-सम्मान करना भी सिखाती है। देश का कोई ऐसा शख्स नहीं जिसे अपनी सेना पर गर्व न होता हो। नौसेना भारतीय सशस्त्र बलों की समुद्री प्रभाग है, जिसमें राष्ट्रपति कमांडर-इन-चीफ के रूप में कार्य करता है।

बहरहाल, नौसेना के समझ इस वक्त कुछ चुनौतियां खड़ी हुई है। वो चुनौती चीन दे रहा है। दरअसल, चीन हमारे समुद्री क्षेत्र में घुसपैठ करने की फिराक में कई समय से घात लगाए बैठा हुआ है। ये सच है कि सेना से वास्ता रखने वाली ज्यादातर सूचनाएं सार्वजनिक नहीं की जाती, इसलिए कि इंटरनल सुरक्षा का ख्याल रखा जाता है। फिर भी अगर कोई सूचना सेना द्वारा देशवासियों को दी जाए, तो समझ लेना चाहिए, मामला गंभीर है। नौसेना को सूचना मिली है कि हिंद प्रशांत में चीन कभी भी कोई बड़ी गड़बड़ी कर सकता है। ये बात पिछले ही सप्ताह खुद नौसेना प्रमुख एडमिरल आर हरि कुमार ने बताई। मसला वास्तव में गंभीर है, हल्के में नहीं लिया जा सकता। चीन हिंद महासागर में अपनी सैन्य शक्तियों के माध्यम से भारतीय जलीय परिक्षेत्र में आक्रमण करने के मूड में है। हालांकि, कुछ एशिया देशों ने तो घुटने टेक भी दिए हैं। पाकिस्तान के जल क्षेत्र में वो खुलकर मनमानी कर रहा है। लेकिन उसकी भारतीय क्षेत्र में हिम्मत नहीं हो रही। उनको पता है भारतीय नौसेना उनका बुरा हाल कर देगी।

मानव-एकता को बल दें, मानवता की करें रक्षा

आज समूची दुनिया में मानवीय एकता एवं चेतना के साथ खिलवाड़ करने वाली त्रासद एवं विडम्बनापूर्ण परिस्थितियां सर्वत्र परिव्याप्त हैं-जिनमें आतंकवाद सबसे प्रमुख है। जातिवाद, अस्पृश्यता, सांप्रदायिकता, महंगाई, गरीबी, भीखमंगी, विलासिता, अमीरी, अनुशासनहीनता, पदलिप्सा, महत्वाकांक्षा, उत्पीड़न और चरित्रहीनता आदि अनेक परिस्थितियों से मानवता पीड़ित एवं प्रभावित है। उक्त समस्याएं किसी युग में अलग-अलग समय में प्रभावशाली रहीं होंगी, इस युग में इनका आक्रमण समग्रता से हो रहा है। आक्रमण जब समग्रता से होता है तो उसका समाधान भी समग्रता से ही खोजना पड़ता है। हिंसक परिस्थितियां जिस समय प्रबल हों, अहिंसा का मूल्य स्वयं बढ़ जाता है। महात्मा गांधी ने कहा है कि आपको मानवता में विश्वास खोना नहीं चाहिए। मानवता एक महासागर है। यदि महासागर की कुछ बूंदें गंदी हैं, तो भी महासागर गंदा नहीं होता है।' ऐसे ही विश्वास को जागृत करने के लिये ही विश्व मानव एकता दिवस की आयोजना की गई है।

देश और दुनिया में निर्दोष लोगों की हत्याएं, हिंसक वारदातें, आतंकी हमले, अपहरण, जिन्दा जला देने की रक्तरंजित सूचनाएं, महिलाओं के साथ व्यभिचार-बलात्कार की वारदातें पढ़ते-देखते हैं पर मन इतना आदती बन गया कि यूं लगता है कि यह सब तो रोजमर्रा का काम है। न आंखों में आंसू छलकते हैं, न पीड़ित मानवता के साथ सहानुभूति जुड़ती है। न सहयोग की भावना जागती है और न नृशंस क्रूरता पर खून खौलता हैं। हमें सिर्फ स्वयं को बचाने की चिन्ता है। तभी औरों का शोषण करते हुए नहीं सकुचाते। हमें संवेदना को जगाना होगा। तभी जे.के. राउलिंग ने कहा भी है कि हमें दुनिया को बदलने के लिये जादू की आवश्यकता नहीं है। हम बस मानव की सेवा करके ऐसा आसानी से कर सकते हैं।' इसी मानव-सेवा की मूल भावना मानव एकता दिवस का

हार्द है।

विविधता में एकता दर्शाने, मानवीय मूल्यों को बल देने, विभिन्न सरकारों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हुए समझौतों को याद दिलाने, लोगों के बीच एकजुटता के महत्व को बताने, सतत विकास के लिए लोगों, सरकारों को प्रेरित करने, गरीबी को मिटाने के नए रास्ते खोजने एवं लोगों को गरीबी, भुखमरी, बीमारियों से बाहर निकालने के लिए अंतरराष्ट्रीय मानव एकता दिवस हर साल 20 दिसंबर को मनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य लोगों के बीच मानवीय एकता के महत्व को बताने के लिए, गरीबी पर अंकुश लगाना और विकासशील देशों में मानव और सामाजिक विकास को बढ़ावा देना है। संयुक्त राष्ट्र ने 22 दिसंबर 2005 को यह दिवस मनाने की घोषणा की थी। इस दिवस को विश्व एकजुटता कोष और संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा बढ़ावा दिया जाता है, जो दुनियाभर में गरीबी उन्मूलन के लिए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने पर केंद्रित हैं। यह दिवस एक बेहतर दुनिया के निर्माण में साझा जिम्मेदारी की एक शक्तिशाली अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है। एकता, समानता और करुणा को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों के माध्यम से, यह दिन भविष्य के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में कार्य करता है जहां एकजुटता गरीबी उन्मूलन और वैश्विक कल्याण को बढ़ावा देने के पीछे प्रेरक शक्ति बन जाती है।

दिव्यांगों को नया आयाम एवं जीवन-मुस्कान दें

हर वर्ष 3 दिसंबर का दिन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विकलांग व्यक्तियों को समर्पित है। विकलांग भी किसी से कम नहीं, उन्हें आत्मनिर्भर बनने के लिए थोड़े से सहयोग एवं समतामूलक दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है। इसका मुख्य उद्देश्य विश्वभर में विकलांगता और विकलांग लोगों के साथ सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक भागीदारी को बढ़ावा देना है और उनके अधिकारों, समर्थन, और समाज में उनके साथ सौहार्द्र बनाए रखना है। वर्ष 2023 की विकलांग दिवस की थीम है एक समावेशी समाज का निर्माण और समान अवसरों का सृजन है। वर्ष 1976 में संयुक्त राष्ट्र आम सभा के द्वारा ÷विकलांगजनों के अंतरराष्ट्रीय वर्ष÷ के रूप में मनाया गया और वर्ष 1981 से अन्तर्राष्ट्रीय विकलांग दिवस मनाने की विधिवत शुरुआत हुई। विकलांगों के प्रति सामाजिक सोच को बदलने और उनके जीवन के तौर-तरीकों को और बेहतर बनाने के लिये एवं उनके कल्याण की योजनाओं को लागू करने के लिये इस दिवस की महत्वपूर्ण भूमिका है।

समाज में दिव्यांगता को एक सामाजिक कलंक के रूप में देखा जाता है। जिसे सुधारने की आवश्यकता है। इसीलिए हर साल 3 दिसंबर के दिन विश्व विकलांग दिवस मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 1992 में हर वर्ष 3 दिसम्बर को अंतर्राष्ट्रीय विकलांग दिवस के रूप में मनाने घोषणा की गयी। इसका उद्देश्य समाज के सभी क्षेत्रों में दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों को बढ़ावा देना और राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में दिव्यांग लोगों के बारे में जागरूकता बढ़ाना था। मगर आज भी लोगों को तो इस बात का भी पता ही नहीं होता है कि हमारे आस-पास कितने दिव्यांग रहतें हैं। उन्हे समाज में बराबरी का अधिकार मिल रहा है कि नहीं। किसी को इस बात की कोई फिकर नहीं हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 27 दिसंबर 2015 को अपने रेडियो संबोधन 'मन की बात' में कहा था कि शारीरिक रूप से अशक्त लोगों के पास एक 'दिव्य क्षमता' है और उनके लिए 'विकलांग' शब्द की जगह दिव्यांग शब्द का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विकलांगों को दिव्यांग कहने की अपील की थी। जिसके पीछे उनका तर्क था कि शरीर के किसी अंग से लाचार व्यक्तियों में ईश्वर प्रदत्त कुछ खास विशेषताएं होती हैं। विकलांग शब्द उन्हे हतोत्साहित करता है। प्रधानमंत्री मोदी के आह्वान पर देश के लोगों ने विकलांगो को दिव्यांग तो कहना शुरू कर दिया लेकिन लोगों का उनके प्रति नजरिया आज भी नहीं बदल पाया है। आज भी समाज के लोगों द्धारा दिव्यांगों को दयनीय दृष्टि से ही देखा जाता है। भले ही देश में अनेको दिव्यांगों ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया हो मगर लोगों का उनके प्रति वहीं पुराना नजरिया बरकरार है।

छोटी बातों पर झुंझला उठता है तो जरा सोचिये उन बदकिस्मत लोगों का जिनका खुद का शरीर उनका साथ छोड़ देता है, फिर भी जीना कैसे है, कोई इनसे सीखे। कई लोग ऐसे हैं जिन्होंने विकलांगता को अपनी कमजोरी नहीं, बल्कि अपनी ताकत बनाया है। ऐसे लोगों ने विकलांगता को अभिशाप नहीं, वरदान साबित किया है।

यह दिवस विकलांग लोगों के अलग-अलग मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करता है और जीवन के हर क्षेत्र में चाहे वह राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कोई भी हो, सभी विकलांग लोगों को शामिल करने और उन्हें अपने प्रतिभा प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विकलांगों को विकलांग नहीं कहकर दिव्यांग कहने का प्रचलन शुरू कर न केवल उनके आत्म-विश्वास को जगाया है बल्कि एक नयी सोच को जन्म दिया है। हमें इस बिरादरी को जीवन की मुस्कुराहट देनी है, न कि हेय समझना है। विकलांगता एक ऐसी परिस्थिति है जिससे हम चाह कर भी पीछा नहीं छुड़ा सकते। एक आम आदमी छोटी-

दुनिया में बहुत से ऐसे दिव्यांग भी हुए हैं जिन्होंने अपने साहस संकल्प और उत्साह से विश्व के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अपना नाम लिखवाया है। शक्तिशाली शासक तैमूर लंग हाथ और पैर से शक्तिहीन था। मेवाड़ के राणा सांगा तो बचपन में ही एक आंख गवाने तथा युद्ध में एक हाथ एक पैर तथा 80 घावों के बावजूद कई युद्धों में विजेता रहे थे। सिख राज्य की स्थापना करने वाले महाराजा रणजीत सिंह की एक आंख बचपन से ही खराब थी। सुप्रसिद्ध नृत्यांगना सुधा चंद्रन के दाई टांग नहीं थी। फिल्मी गीतकार कृष्ण चंद्र डे तथा संगीतकार रविंद्र जैन देख नहीं सकते थे। पूर्व क्रिकेटर अंजन भट्टाचार्य मूकबधिर थे। वर्ल्ड पैरा चैम्पियनशिप खेलों में झुंझुनू जिले के दिव्यांग खिलाड़ी संदीप कुमार व जयपुर के सुन्दर गुर्जर ने भाला फेंक प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीत कर भारत का मान बढ़ाया है।

'एड्स' न केवल भारत में बल्कि समस्त विश्व में लोगों के लिए आज भी एक भयावह शब्द है, जिसे सुनते ही भय के मारे पसीना छूटने लगता है। एड्स (एक्वायर्ड इम्यूनो डेफिशिएंसी सिन्ड्रोम) का अर्थ है शरीर में रोगों से लड़ने की क्षमता कम होने से अप्राकृतिक रोगों के अनेक लक्षण प्रकट होना। एच.आई.वी. संक्रमण के बाद एक ऐसी स्थिति बन जाती है कि इससे संक्रमित व्यक्ति की मामूली से मामूली बीमारियों का इलाज भी दूभर हो जाता है और रोगी मृत्यु की ओर खिंचा चला जाता है। आज भी यह खतरनाक बीमारी दुनियाभर के करोड़ों लोगों के शरीर में पल रही है। एड्स महामारी के कारण अफ्रीका के तो कई गांव के गांव नष्ट हो चुके हैं। 'रॉयटर्स' की एक रिपोर्ट के मुताबिक 1980 के दशक में एड्स महामारी शुरू होने के बाद से 77 मिलियन से भी अधिक लोगों में इसका वायरस फैल चुका है। वर्ष 2017 में विश्वभर में करीब 40 मिलियन लोग एचआईवी संक्रमित थे। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की रिपोर्ट के अनुसार वैश्विक स्तर पर 2022 के अंत तक 3.9 करोड़ से भी ज्यादा लोग एचआईवी के साथ जी रहे थे। एड्स को लेकर जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 1 दिसंबर को एक विशेष थीम के साथ 'विश्व एड्स दिवस' मनाया जाता है।

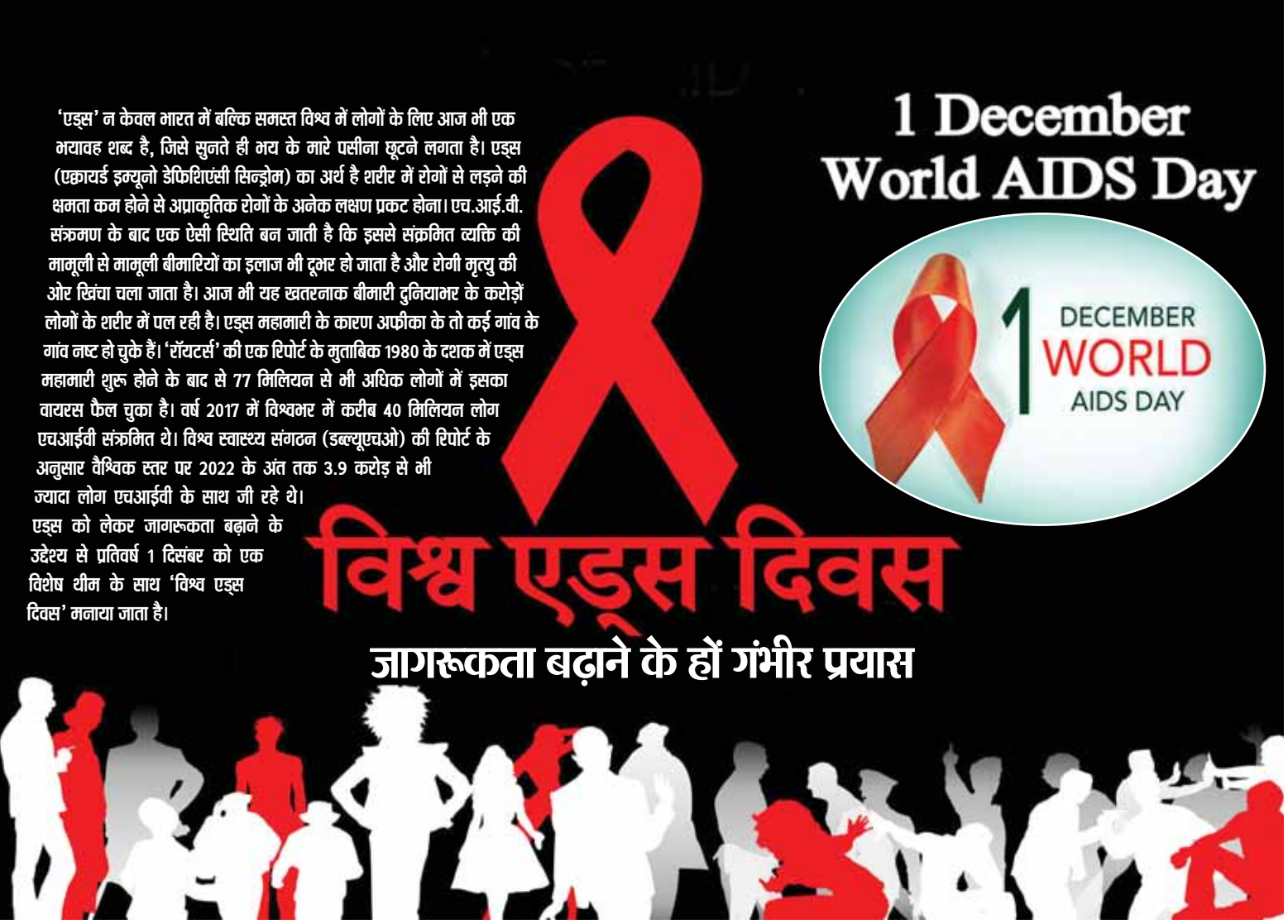

विश्व एड्स दिवस

जागरूकता बढ़ाने के हों गंभीर प्रयास

वैसे एड्स का इतिहास काफी दिलचस्प है। दरअसल 1981 में न्यूयार्क तथा कैलिफोर्निया में न्यूमोसिस्टिस न्यूमोनिया, कपोसी सार्कोमा तथा चमड़ी रोग जैसी असाधारण बीमारी का इलाज करा रहे पांच समलैंगिक युवकों में एड्स के लक्षण पहली बार मिले थे। चूंकि जिन मरीजों में एड्स के लक्षण देखे गए थे, वे सभी समलैंगिक थे, इसलिए उस समय इस बीमारी को समलैंगिकों की ही कोई गंभीर बीमारी मानकर इसे 'गे रिलेटेड इम्यून डेफिशिएंसी' (ग्रिड) नाम दिया गया था। इन मरीजों की शारीरिक प्रतिरोधक क्षमता असाधारण रूप से कम होती जा रही थी लेकिन कुछ समय पश्चात् जब दक्षिण अफ्रीका की कुछ महिलाओं और बच्चों में भी इस बीमारी के लक्षण देखे जाने लगे, तब जाकर यह धारणा समाप्त हुई कि यह बीमारी समलैंगिकों की ही बीमारी है। तब गहन अध्ययन के बाद पता चला कि यह बीमारी एक सूक्ष्म विषाणु के जरिये होती है, जो रक्त एवं यौन संबंधों के जरिये एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुंचती है। तत्पश्चात् इस बीमारी को एड्स नाम दिया गया, जो एचआईवी नामक वायरस द्वारा फैलती है। विश्व एड्स दिवस के मौके पर कुछ बातों पर मंथन करना जरूरी हो जाता है। वैसे, विश्व स्तर पर डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट पर गौर करें, तो एड्स संक्रमण की इस वक्त दर प्रति 17 हजार व्यक्तियों पर है। जबकि, हिंदुस्तान में ये दर 5 प्रतिशत के ही आसपास बताई गई है। भारत में एड्स-वायरस से सर्वाधिक संक्रमित व्यक्ति महाराष्ट्र में रहे हैं। वहीं, तमिलनाडु दूसरे पायदान पर रहा। वैसे, हमारे यहां सन् 1985 से 1995 के बीच एड्स-विषाणु का संक्रमण बहुत तेज था। पर, उसके बाद हुकूमतों ने रोकथाम पर अच्छा कर बढ़ती दर को थाम लिया। प्रयास तब तक कम नहीं होने चाहिए, जब तक इस बीमारी का नामोनिशान न मिट जाए। एड्स को लेकर कुछ अति-जरूरी सावधानियां केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा बताई गई हैं, उन्हें सभी को फॉलो करते रहना हैं। बहरहाल, एड्स बीमारी भी मात्र एक वायरस जैसी ही है, जो एकदम गंभीर नहीं होती? धीरे-धीरे अपना असर दिखाती है। अगर, शुरूआती दिनों में इलाज मिल जाए और पीड़ित जरूरी सावधानियां बरत लें, तो स्थिति एकाएक गंभीर नहीं बनती, काबू पा लिया जाता है। हिंदुस्तान में इस वक्त लाखों एड्स रोगी हैं जो सामान्य और लंबा जीवन जी रहे हैं। लेकिन फिर भी एड्स समाज की सबसे बड़ी कलंकित बीमारियों में से है। कलंकित इसलिए क्योंकि इसको लेकर नकारात्मक बातें बहुत फैली हुई हैं। ऐसी बातें कि एड्स रोगियों के छूने या हाथ मिलाने मात्र से रोग फैलता है, जो सरासर तथ्यहीन है। दरअसल, ये रोग समाज में स्वीकार्य है। यही कारण है, एचआईवी के पता होने पर पॉजिटिव व्यक्ति से समाज दूरी बना लेता है, नकार देता है। यहां तक कि पारिवारिकजन, सगे-संबंधी मुंह मोड़ लेते हैं। तब, पीड़ित न चाहते हुए भी एकांत जीवन जीने को मजबूर हो जाता है।

यह वायरस मानव शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली पर हमला करके मानव रक्त में पाई जाने वाली श्वेत रक्त कणिकाओं को नष्ट करता है और धीरे-धीरे ऐसे व्यक्ति के शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता पूरी तरह नष्ट हो जाती है। यही स्थिति 'एड्स' कहलाती है। अगर एड्स के कारणों पर नजर डालें तो मानव शरीर में एचआईवी का वायरस फैलने का मुख्य कारण हालांकि असुरक्षित सेक्स तथा अधिक पार्टनरों के साथ शारीरिक संबंध बनाना ही है लेकिन कई बार कुछ अन्य कारण भी एचआईवी संक्रमण के लिए जिम्मेदार होते हैं। शारीरिक संबंधों द्वारा 70-80 फीसदी, संक्रमित इंजेक्शन या सुईयों द्वारा 5-10 फीसदी, संक्रमित रक्त उत्पादों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया के जरिये 3-5 फीसदी तथा गर्भवती मां के जरिये बच्चे को 5-10 फीसदी तक एचआईवी संक्रमण की संभावना रहती है।

डब्ल्यूएचओ तथा भारत सरकार के सतत प्रयासों के चलते हालांकि एचआईवी संक्रमण तथा एड्स के संबंध में जागरूकता बढ़ाने के अभियानों का कुछ असर दिखा है और संक्रमण दर घटी है। रिपोर्ट के मुताबिक भारत में 2010 से अभी तक एचआईवी संक्रमण की दर में करीब 42 फीसदी की कमी आई है। फिर भी भारत में एड्स के प्रसार के कारणों में आज भी सरकारी व गैर सरकारी स्तर पर स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता एवं जिम्मेदारी का अभाव, अशिक्षा, निर्धनता, अज्ञानता और बेरोजगारी प्रमुख कारण हैं। अधिकांशतः लोग एड्स के लक्षण उभरने पर भी बदनामी के डर से न केवल एच.आई.वी. परीक्षण कराने से कतराते हैं बल्कि एचआईवी संक्रमित किसी व्यक्ति की पहचान होने पर उससे होने वाला व्यवहार तो बहुत चिंतनीय एवं निंदनीय होता है। इस दिशा में लोगों में जागरूकता पैदा करने के संबंध में सरकारी अथवा गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा भले ही कितने भी दावे किए जाएं पर एड्स पीड़ितों के साथ भेदभाव के सामने आने वाले मामले विभिन्न राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटियों एवं सरकारी तथा गैर सरकारी प्रयासों की पोल खोलते नजर आते हैं। देशभर में ऐसे बहुत से एचआईवी संक्रमित व्यक्ति और उनके परिवार हैं, जिन्हें एचआईवी संक्रमण का खुलासा होने के बाद समाज और अपने ही लोग हिकारत भरी नजरों से देखते थे।

एड्स पर नियंत्रण पाने के लिए जरूरत है प्रत्येक गांव, शहर में इस संबंध में गोष्ठियां, नुक्कड़ नाटक, प्रदर्शनियां इत्यादि के आयोजनों की ताकि लोगों को सरल एवं मनोरंजक तरीकों से ही इसके बारे में पूरी जानकारी मिल सके। एड्स जैसे विषयों पर सार्वजनिक चर्चा करने से बचने की प्रवृत्ति तथा एड्स पीड़ितों के प्रति बेरूखी व संवेदनहीनता की प्रवृत्ति अब हमें त्यागनी ही होगी। इसके अलावा प्रचार एवं प्रसार माध्यमों को भी इस दिशा में अहम भूमिका निभानी होगी। विश्व भर में एड्स की महामारी पर अंकुश लगाने के लिए लोगों को सुरक्षित सैक्स एवं अन्य आवश्यक सावधानियों के लिए भी प्रेरित करना होगा।

वास्तविकता यही है कि लोगों में एड्स के संबंध में जागरूकता पैदा करने के लिए उस स्तर पर प्रयास नहीं हो रहे, जिस स्तर पर होने चाहिएं। लोगों को जागरूक करने के लिए हमारी भूमिका अभी भी सिर्फ चंद पोस्टर चिपकाने और टीवी चैनलों या पत्र-पत्रिकाओं में कुछ विज्ञापन प्रसारित-प्रकाशित कराने तक ही सीमित है और शायद यही कारण है कि 21वीं सदी में जी रहे भारत के बहुत से पिछड़े ग्रामीण अंचलों में खासतौर से महिलाओं ने तो एचआईवी संक्रमण जैसे शब्द के बारे में कभी सुना तक नहीं। तमाम प्रचार-प्रसार के बावजूद आज भी बहुत से लोग इसे छूआछूत की बीमारी ही मानते हैं और इसीलिए वे ऐसे रोगी के पास जाने से भी घबराते हैं। तमाम दावों के बावजूद आज भी समाज में एड्स रोगियों को बहुत सी जगहों पर तिरस्कृत नजरों से ही देखा जाता है।

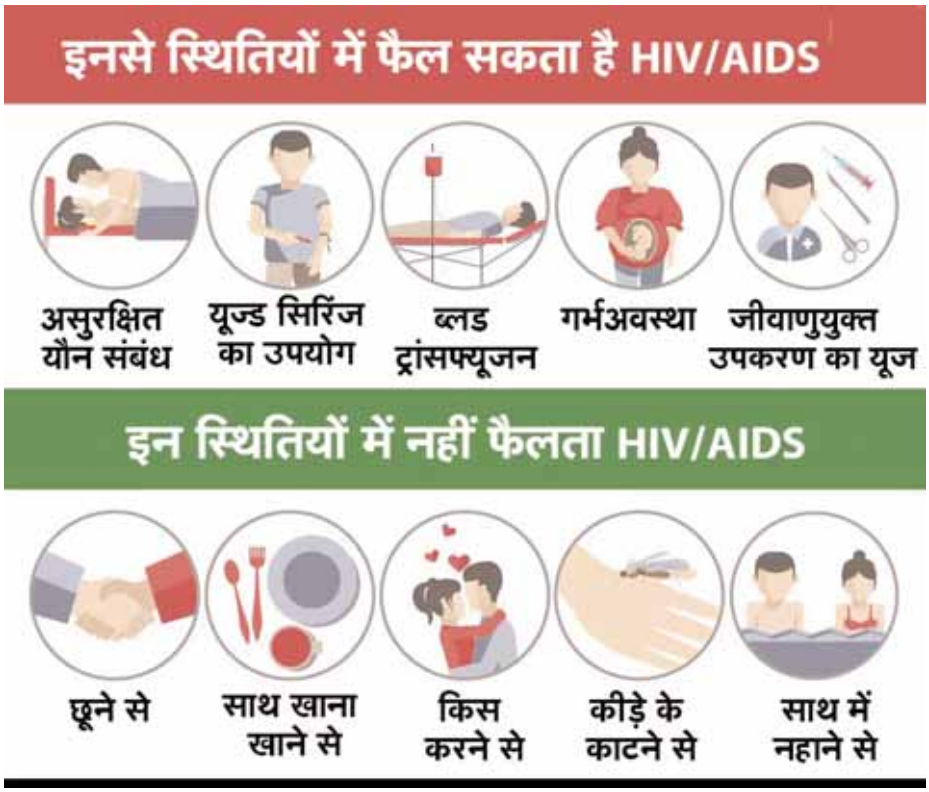

यूं हीं नहीं कहते हारे का सहारा बाबा खाटू श्याम हमारा

राजस्थान का खाटू श्याम मंदिर भारत के प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है। भारत के अन्य राज्यों से भी लोग यहां अपनी मनोकामनाएं लेकर आते हैं। खाटू श्याम मंदिर के अस्तित्व में आने के पीछे एक बहुत ही रोचक कथा है। खाटू श्याम को भगवान श्री कृष्ण के कलयुगी अवतार के रूप में जाना जाता है। ऐसा कहे जाने के पीछे एक पौराणिक कथा हाथ है। राजस्थान के सीकर जिले में इनका भव्य मंदिर स्थित जहां हर साल बड़ी संख्या में श्रद्धालु आते हैं। लोगों का विश्वास है कि बाबा श्याम सभी की मुरादें पूर करते हैं और रंक को भी राजा बना सकते हैं।

कौन हैं बाबा खाटू श्याम

बाबा खाटू श्याम का संबंध महाभारत काल से माना जाता है। यह पांडुपुत्र भीम के पौत्र थे। ऐसी कथा है कि खाटू श्याम की अपार शक्ति और क्षमता से प्रभावित होकर श्रीकृष्ण ने इन्हें कलियुग में अपने नाम से पूजे जाने का वरदान दिया।

हर साल लगता है खाटूश्याम मेला

प्रत्येक वर्ष होली के दौरान खाटू श्यामजी का मेला लगता है। इस मेले में देश-विदेश से भक्तजन बाबा खाटू श्याम जी के दर्शन के लिए आते हैं। इस मंदिर में भक्तों की गहरी आस्था है। बाबा श्याम, हारे का सहारा, लखदातार, खाटूश्याम जी, मोर्विनंदन, खाटू का नरेश और शीश का दानी इन सभी नामों से खाटू श्याम को उनके भक्त पुकारते हैं। खाटूश्याम जी मेले का आकर्षण यहां होने वाली मानव सेवा भी है। बड़े से बड़े घराने के लोग आम आदमी की तरह यहां आकर श्रद्धालुओं की सेवा करते हैं। कहा जाता है ऐसा करने से पुण्य की प्राप्ति होती है।

खाटूश्याम जी के चमत्कार

भक्तों की इस मंदिर में इतनी आस्था है कि वह अपने सुखों का श्रेय उन्हीं को देते हैं। भक्त बताते हैं कि बाबा खाटू श्याम सभी की मुरादें पूरी करते हैं। खाटूधाम में आस लगाने वालों की झोली बाबा खाली नहीं रखते हैं।

दिसंबर में बर्फबारी का लुत्फ उठाने के लिए घूमें ये फेमस हिल स्टेशन, जन्नत में आने का होगा एहसास

साल का आखिरी महीना दिसंबर एक ऐसा महीना है, जब देश के कई हिस्सों में ठंड पड़ने लगती है। ठंड में कई जगहों की खूबसूरती देखने लायक होती है। वहीं इस महीने देश के कई हिस्सों में बर्फबारी भी शुरू हो जाती है। देश और विदेश के लाखों सैलानी बर्फबारी का मनमोहक नजारा और एडवेंचर एक्टिविटीज करने के लिए इन जगहों पर पहुंचते हैं।ऐसे में अगर आप भी दिसंबर के महीने में बर्फबारी का मजा लेना चाहते हैं। तो यह आर्टिकल के लिए है। इस आर्टिकल के जरिए हम आपको भारत की उन हसीन जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं। जहां पर आप अपने पार्टनर, दोस्तों और परिवार के साथ घूमने के लिए जा सकते हैं।

कुफरी

जब भी हिमाचल प्रदेश घूमने की बात होती है, तो इसमें शिमला का नाम सबसे पहले आता है। लेकिन आपको बता दें कि शिमला से कुछ ही दूरी पर कुफरी नामक एक हसीन जगह है। जहां पर आप बर्फबारी का खुलकर मजा ले सकते हैं। शिमला से कुफरी की दूरी सिर्फ 14 किमी दूर है और दिसंबर के महीने में यहां पर बर्फबारी होती है। कुफरी में बर्फबारी के दौरान देवदार के पेड़, पहाड़ और सेब के बागान आदि बर्फ की सफेद चादर से ढक जाती है। ऐसे में आप यहां पर एडवेंचर का भी लुत्फ उठा सकते हैं।

औली

उत्तराखंड की हसीन वादियों में औली एक बेहतरीन और खूबसूरत जगह है। ऐसे में आप दिसंबर के महीने में औली घूमने के लिए जा सकते हैं। औली समुद्र तल से करीब 3 हजार मीटर की ऊंचाई पर मौजूद है। यहां पर हर साल लाखों देशी-विदेशी पर्यटक आते हैं। दिसंबर के महीने में आप यहां की खूबसूरती को निहारते ही रह जाएंगे।

नारकंडा

हिमाचल प्रदेश की हसीन वादियों में मौजूद नारकंडा भी बेहद खूबसूरत जगह है। इस जगह को एक बार एक्सप्लोर करने के बाद आपका यहां पर बार-बार जाने का मन करेगा। बता दें कि कई कपल्स हनीमून के लिए नारकंडा पहुंचते हैं। ऐसे में आप भी बर्फबारी का लुत्फ उठाने के लिए अपने दोस्तों या परिवार के साथ नारकंडा पहुंच सकते हैं। यहां पर आने के बाद आपको जन्नत में होने का एहसास होगा।

पटनीटॉप

बर्फबारी का लुत्फ उठाने के लिए आप जम्मू-कश्मीर घूम सकते हैं। कई लोग जम्मू-कश्मीर में गुलमर्ग, सोनमर्ग, पहलगाम या श्रीनगर एक्सप्लोर करते हैं। लेकिन जम्मू-कश्मीर में आप पटनीटॉप घूमने के लिए जा सकते हैं। अपनी प्राकृतिक सुंदरता के साथ आप स्कीइंग, पैराग्लाइडिंग और ट्रेकिंग जैसी एक्टिविटीज का लुत्फ उठा सकते हैं। इसके अलावा आप यहां पर पटनीटॉप पार्क, तन्नी झुब्बर झील और स्काईव्यू पटनीटॉप जैसी कई बेहतरीन जगहों को एक्सप्लोर कर सकते हैं।

सर्दियों में फिट रहने के लिए करें इन जादुई काढ़ों का सेवन

सर्दियों के मौसम में हम सभी को अपनी सेहत का खास ख्याल रखना होता है। क्योंकि इस मौसम में सर्दी-खांसी और जुकाम की समस्या अक्सर लोगों को परेशान करती है। वहीं सर्दियों में पाचन की समस्या भी हो जाती है। ऐसे में अगर आप भी सर्दियों में फिट और हेल्दी रहना चाहते हैं। तो कुछ घरेलू उपचार की मदद ले सकते हैं। आपको बता दें कि काढ़ा एक तरह का आयुर्वेदिक उपचार है। बचपन में कभी हम बीमार पड़ते थे, तो दादी-नानी काढ़ा बनाकर देती हैं।

हर भारतीय घरों में बहुत से ऐसे मसाले पाए जाते हैं, जो औषधीय गुणों से भरपूर होते हैं। ऐसे में आप भी सर्दी-खांसी और जुकाम और अन्य बीमारियों से बचने के लिए विभिन्न प्रकार के साबुत मसालों और किचन में इस्तेमाल आने वाली तरह-तरह की सामग्रियों से काढ़ा बनाकर तैयार कर सकते हैं। यह सेहत के लिए काफी अच्छा होता है। तो आज हम आपको इस आर्टिकल के जरिए आपको कुछ काढ़ा की रेसिपी बताने जा रहे हैं, जिसे आप आसानी से घर पर बना सकती हैं।

तुलसी का काढ़ा

तुलसी का काढ़ा बनाने के लिए सबसे पहले पैन में पानी उबाल लें, फिर इसमें तुलसी के पत्ते, 1 छोटा चम्मच दालचीनी पाउडर, 1 छोटा चम्मच काली मिर्च और 1 छोटा चम्मच कसा हुआ अदरक डालें। अब इस सारे मिश्रण को 10-15 मिनट तक उबालें। इसके बाद इसको छानकर ठंडा होने के लिए रख दें। जब यह ठंडा हो जाए,

तो इसका सेवन करें। इस काढ़े को पीने से आपकी इम्यूनिटी बूस्ट होती है और आप सर्दी-जुकाम से भी बच सकते हैं।

गिलोय काढ़ा

गिलोय का काढ़ा बनाने के लिए 1 चम्मच गिलोय गुडूची को अच्छे से पीस लें। पीसने के बाद इसको पानी में अच्छे से मिक्स कर उबाल लें और फिर ठंडा होने पर इसका सेवन करें। यह काढ़ा सेहत के लिए फायदेमंद होने के साथ ही फ्लू से लड़ने में आपकी मदद करता है।

दालचीनी का काढ़ा

दालचीनी का काढ़ा बनाना भी काफी ज्यादा आसान है। इसको बनाने के लिए एक पैन में 1 कप पानी डालें। फिर इसमें दालचीनी पाउडर मिलाएं। जब यह अच्छे से उबल जाए। तो आप इसमें एक चम्मच शहद डाल लें। इस तरह से दालचीनी का काढ़ा बनकर तैयार हो जाएगा। यह काढ़ा न सिर्फ शरीर की ताकत बढ़ाता है, बल्कि मौसमी बीमारियों से भी बचाता है।

अजवाइन का काढ़ा

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि अजवाइन में औषधीय गुण पाए जाते हैं। जो हमारे शरीर को कई तरह की बीमारियों से बचाने में मदद करता है। बता दें कि अजवाइन में कई पोषक तत्व जैसे प्रोटीन, फाइबर, कार्बोहाइड्रेट, वसा, आयोडीन, मैंगनीज आदि पाया जाता है। कुछ लोग सर्दियों में गर्म पानी के साथ अजवाइन का सेवन करते हैं। वहीं आप चाहें तो अजवाइन का काढ़ा भी बना सकते हैं। काढ़ा बनाने के लिए पैन में पानी और 2 चम्मच अजवाइन डालकर उबाल लें। इस काढ़े को पीने से रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और यह पाचन के लिए भी काफी फायदेमंद होता है।

स्वादिष्ट और पोषण से भरपूर केले की ये रेसिपीज, बेहद आसान हैं इसे बनाना

सभी जिम जाने वालों की केला पहली पसंद होता है। वेट बढ़ाना हो या वेट लॉस करना हो या फिर फैट लॉस, सभी जिम जाने वाले लोग केले को अपनी डाइट में शामिल करते हैं। यह सभी तरह की डाइट में फिट हो जाता है। बस इसको सही तरीके से अपनी डाइट में शामिल करने की जरूरत होती है। ना सिर्फ फिटनेस के लिहाज से बल्कि केले का सेवन पूरे स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होती है। केला पोषण से भरपूर होता है। एक मीडियम साइज केले में करीब 110 कैलोरी पायी जाती है। केले में 3 ग्राम फाइबर, 1 ग्राम प्रोटीन, 28 ग्राम कार्बोहाइड्रेट और फैट की मात्रा 0 होती है। इसके अलावा केले में पोटेशियम, मैग्नीशियम, विटामिन सी, विटामिन बी6 और मैंगनीज आदि से भी भरपूर होता है। केला पूरे साल बाजार में मौजूद रहता है। हांलाकि लोग अलग-अलग तरीके से डाइट में शामिल करते हैं। आज हम आपको केले से बनी 5 आसान रेसिपीज के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनको आप अपनी डाइट में शामिल कर सकते हैं।

ओट्स और केले का दलिया

रात को सोने से पहले 40 ग्राम तक ओट्स को पानी में भिगोकर रख दें। फिर सुबह कुछ नट्स, बीज और ड्राई फ्रूट्स के साथ 1-2 केले, एक कप उबला हुआ गुनगुना दूध और एक चम्मच शहद डालें। फिर इन सबको अच्छे से मिक्स करें। इसका सेवन आप ब्रेकफास्ट में भी कर सकते हैं। बता दें कि यह प्रोटीन और फाइबर से भरपूर

ब्रेकफास्ट है। जो आपको पूरा दिन एनर्जेटिक बने रहने और लंबे समय तक आपका पेट भरा रखने में मदद करती है।

बनाना और पीनट बटर सैंडविच

बनाना और पीनट बटर सैंडविच बनाने के लिए 2 मीडियम साइज ब्राउन या सामान्य ब्रेड लेनी है। फिर ब्रेड पर 1-2 चम्मच पीनट बटर लगाएं। अब केले के टुकड़ों को काटकर ब्रेड की एक साइड पर रखें। फिर इस पर दूसरी ब्रेड रखें और सैंडविच का लुत्फ लें। आप चाहें तो इस सैंडविच के साथ एक कप दूध या हर्बल चाय भी ले सकते हैं। इस सैंडविच का सेवन कर आप छोटी भूख को शांत कर सकते हैं। ब्रेकफास्ट और लंच के बीच या शाम के स्नैक्स के तौर पर बनाना और पीनट बटर सैंडविच का सेवन कर सकते हैं।

केले की स्मूदी

एक मिक्सर जार या ब्लेंडर में 1-2 केले, कुछ नट्स, एक गिलास दूध, ड्राई फ्रूट्स के साथ ही आधा छोटी चम्मच दालचीनी का पाउडर डालकर अच्छे से ब्लेंड कर लें। आप चाहें तो 1 चम्मच पीनट बटर डाल सकते हैं। फिर इसको एक गिलास में निकाल लें और ऊपर से कुछ बीज डालकर इसका सेवन करें। आप इसको ब्रेकफास्ट, वर्कआउट के बाद या फिर शाम के समय केले की स्मूदी का सेवन कर सकते हैं।

बनाना मिल्क शेक

बानाना मिल्क शेक बनाने के लिए 1 कप दूध 1 केला और आधा छोटी चम्मच हल्दी पाउडर को ब्लेंड कर लें। आप चाहें तो इसमें एक चम्मच वनीला आइस्क्रीम डालकर लुत्फ ले सकते हैं। मील के बीच में या वर्कआउट के बाद आप बनाना मिल्क शेक का सेवन कर सकते हैं।

सर्दियों में गुलाबी निखार पाने के लिए लगाएं टमाटर के ये फेस पैक

सर्दियों में हमें न सिर्फ अपनी सेहत बल्कि त्वचा का भी खास ख्याल रखना चाहिए। क्योंकि सर्दियों में चलने वाली ठंडी हवाएं हमारी त्वचा को ड्राई बनाती हैं और स्किन के ग्लो को कम करती है। जिसके चलते सर्दियों में स्किन का कलर थोड़ी डार्क हो जाती है। हांलाकि सर्दियों में स्किन की देखभाल करने के लिए लोग कई तरह के ब्यूटी प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन यह महंगे प्रोडक्ट होने के बाद भी कई बार हमें मनमुताबिक रिजल्ट नहीं मिलता है। ऐसे में अगर आप भी सर्दियों में अपनी स्किन को ग्लोइंग और हेल्दी बनाना चाहते हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि किस तरह से सर्दियों में टमाटर का फेस पैक आपकी स्किन के लिए फायदेमंद साबित होगा। टमाटर में लाइकोपिन और एंटीऑक्सीडेंट्स मौजूद होता है, जो आपकी त्वचा को पोषण देने के साथ ही रंगत साफ करता है। वहीं यह फेस पैक ड्राई स्किन की समस्या को दूर करने से साथ सर्कुलेशन को बढ़ाता है।

टमाटर-हल्दी फेस पैक सामग्री-टमाटर और हल्दी का फेसपैक बनाने के लिए 1 मीडियम साइज का टमाटर लें। टमाटर को कद्दूकस कर इसमें थोड़ी सी हल्दी मिला लें। अब इन दोनों को अच्छे से मिक्स कर फेस और गर्दन पर अप्लाई करें। फिर इस फेसपैक को 20 मिनट तक लगाए रहें और समय पूरा होने के बाद हल्के गुनगुने पानी से चेहरा धो लें। यह फेसपैक रंगत निखारने के साथ ही पिंपल्स की समस्या हो भी कम करने में मददगार है। साथ ही इससे आपकी स्किन भी हाइड्रेट रहती है।

टमाटर और शहद के फेसपैक की सामग्री

इस फेसपैक को बनाने के लिए सबसे पहले एक टमाटर का रस निकाल लें। फिर टमाटर के रस में शहद को मिलाकर अच्छे से मिक्स कर लें। अब इस पेस्ट को 15 मिनट के लिए फेस पर अप्लाई करें। टाइम पूरा होने के बाद फेस को पानी से धो लें। इस फेसपैक से आपकी त्वचा को पोषण मिलता है और स्किन चमकदार बनती है। यह आपकी त्वचा को हाइड्रेट रखने में मदद करता है।

शादी से पहले हेल्दी और शाइनी बालों के लिए डाइट में शामिल करें ये चीजें, जल्द दिखेगा असर

काले, लंबे और घने बाल हर किसी को पसंद होते हैं। ऐसे में महिलाएं हो या फिर पुरुष सभी अपने बालों को हेल्दी और शाइनी बनाए रखने के तरीके खोजते हैं। वहीं शादियों के सीजन की भी शुरूआत हो चुकी है। ऐसे में लड़का हो या लड़की सभी अपने बालों, स्किन आदि को बेहतर बनाने के लिए कई तरह के उपाय करते हैं। बता दें कि हमारे खानपान का असर हमारी सेहत पर पड़ता है।

ऐसे में अगर आप भी लंबे, हेल्दी और शाइनी बाल पाना चाहती हैं, तो इसके लिए आपको अपनी लाइफस्टाइल में थोड़ा सा बदलाव करना होगा। हम आपको बताने जा रहे हैं कि आपको अपनी डाइट में किन चीजों को शामिल करना चाहिए। जिससे आपके बालों को पर्याप्त पोषण मिल सके।

तेल से करें मसाज

बालों को हेल्दी और शाइनी बनाने के लिए आप सिर पर तेल की मसाज जरूर करें। इसके लिए आप नारियल तेल, जैतून तेल और तिल के तेल का इस्तेमाल कर सकती हैं। इन तेलों में प्रर्याप्त मात्रा में विटामिन और मिनरल्स पाया जाता है। जो आपके बालों को हेल्दी और शाइनी बनाने में मदद करेंगे। बता दें कि तिल के तेल में आयरन, कॉपर, जिंक, कैल्शियम और मैग्नीशियम पाया जाता है। जो आपके बालों की हेल्थ के लिए अच्छे होते हैं। वहीं नारियल तेल में कैल्शियम, मैग्नीशियम, मिनरल्स और एंटी बैक्टीरियल गुण पाए जाते हैं।

बालों के लिए जरूरी है प्रोटीन

इसके साथ ही बालों को हेल्दी बनाने के लिए आप अपनी डाइट में प्रोटीन से भरपूर फूड्स को शामिल करना चाहिए। इसके लिए आप दही, अंडा, मूंगफली और सोयाबीन का सेवन कर सकती हैं। अगर आप प्रोटीन से भरपूर डाइट लेती हैं, तो इसका असर जल्द ही आपको सेहत और बालों दोनों पर देखने को मिलेगा।

हरी सब्जियों का करें सेवन

बालों को लंबा और घना बनाने के लिए आप फल और सब्जियों को अपनी डाइट में शामिल करें, जिससे आपके बालों की क्वालिटी में सुधार होता है। फल और सब्जियों में अच्छी मात्रा में मिनरल्स, विटामिन्स और एंटीऑक्सीडेंट्स पाया जाता है। जो आपके बालों को स्वस्थ रखने में मदद करते हैं और अच्छी ग्रोथ देते हैं। वहीं करी पत्ता जिसे मीठी नीम भी कहा जाता है, यह भी आपके बालों को बेहतर बनाने में मदद करता है।अगर आप भी बालों की ग्रोथ के साथ इनको शाइनी और हेल्दी बनाना चाहते हैं। तो तली भुनी और मीठी चीजों का कम से कम सेवन करें। बालों को धोने के फौरन बाद शैंपू न करें। साथ ही समय पर बालों में तेल जरूर डालेंरोजाना स्कैल्प की मसाज करें। इससे ब्लड फ्लो अच्छा होगा और बालों की ग्रोथ अच्छी होगी।

पंडित रविशंकर

आखिरी समय तक नहीं छूटा सितार से साथ

11 दिसंबर को मशहूर सितारवादक पंडित रविशंकर का निधन हो गया था। उन्होंने दुनिया के हर कोने में भारतीय शास्त्रीय संगीत को पहुंचाने का काम किया था। रविशंकर के चाहने वालों में नृत्य, संगीत और कला प्रेमी सैंकड़ों की संख्या में हैं। बता दें कि भारत रत्न से सम्मानित पंडित रविशंकर की जिंदगी काफी ज्यादा विवादित रही। उनकी जिंदगी में 4 महिलाएं आईं। जिसमें से दो के साथ वह लिव इन रिलेशनशिप में भी रहे। तो वहीं दो

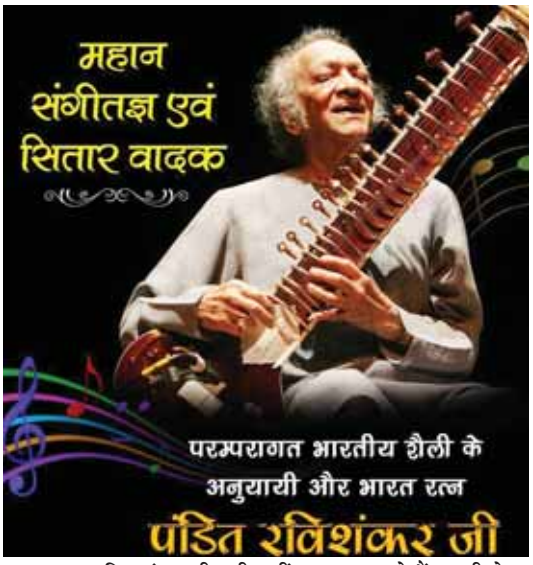

महिलाएं उनकी पत्नी बनीं। आइए जानते हैं उनकी डेथ एनिवर्सरी के मौके पर पंडित रविशंकर के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

जन्म, शिक्षा

उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले में 7 अप्रैल 1920 को पंडित रविशंकर का जन्म हुआ था। उनका बचपन अपने भाई उदयशंकर के नृत्य समूह के साथ भारत व यूरोप का दौर करते हुए बीता। वहीं साल 1938 में फेमस संगीतज्ञ अलाउद्दीन खान से उन्होंने सितार बजाने की शिक्षा लेने के लिए नृत्य करना छोड़ दिया था। सितार सीखने के लिए वह मैहर चले गए।

फिल्मों में संगीत

साल 1944 में अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने बतौर संगीतकार सत्यजीत रे के अपू ट्रिलॉजी और रिचर्ड एटनबर्ग के गांधी के लिए संगीत दिया। फिर साल 1983 में सर्वश्रेष्ठ मौलिक स्वरलिपि के लिए उनको जॉर्ज फेंटन के साथ ऑस्कर से पुरस्कृत किया गया। इसके बाद नई दिल्ली में साल 1949 से 1956 के बीच उन्होंने ऑल इंडिया रेडियो के संगीत निदेशक के रूप में काम किया।

शादी

उस दौरान वह अपने ही गुरु की बेटी अन्नपूर्णा देवी पर दिल हार बैठे और उनसे शादी कर ली। लेकिन 20 साल बाद दोनों के रास्ते अलग हो गए। अन्नपूर्णा देवी से अलग होने के बाद वह नृत्यांगना कमला शास्त्री के साथ रहे। इनके साथ पंडित रविशंकर लंबे समय तक लिव इन रिलेशनशिप में रहे। इसके बाद वह अमेरिका में सू जोन्स के साथ लिव इन में रहे। वहीं साल 1979 में एक बेटी नोराह जोन्स का जन्म हुआ। आपको बता दें कि पिता की तरह नोराह जोन्स भी फेमस सिंगर और सितारवादक हैं। फिर सू जोन्स से अलग होने के बाद साल 1981 में वह सुकन्या राजन के साथ लिव इन में आए। इसी दौरान एक बेटी अनुष्का का जन्म हुआ। बेटी के जन्म के बाद साल 1989 में पंडित रविशंकर और सुकन्या राजन से शादी की। अनुष्का भी एक फेमस सितारवादक हैं।

कई गाने हुए फेमस

पंडित रविशंकर के कई गाने इतने अधिक फेमस हुए कि लोग आज भी इन्हें गुनगुनाते हैं। जिनमें से मेरा यार बना दुल्हा, डोली चढ़ के दुल्हन ससुराल चली, आज मेरे यार की शादी है, और बाबुल की दुआएं लेती जा आदि हैं। चार दशक लंबे करियर में रविशंकर ने करीब 200 फिल्मों और गैर फिल्मी गानों में अपना संगीत दिया।

राज्यसभा के सांसद

वहीं साल 1986 से 1992 तक पंडित रविशंकर राज्यसभा के मनोनीत सदस्य रहे। साल 1999 में पंडित रविशंकर को देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया। इसके अलावा उन्होंने तीन ग्रैमी अवॉर्ड भी अपने नाम किए। साल 2000 तक वह लगातार अपनी प्रस्तुति देते रहे। पंडित रविशंकर ने कई बार अपनी बेटी अनुष्का शंकर से साथ भी प्रस्तुति दी।

मृत्यु

सैन डिएगो में 11 दिसंबर 2012 को 92 साल की उम्र में फेमस सितारवादक पंडित रविशंकर की मृत्यु हो गई।

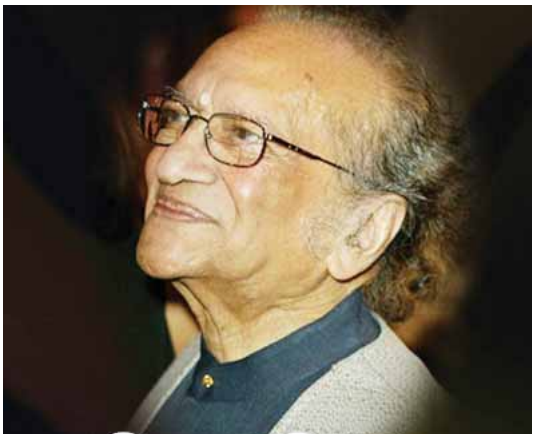

14 Dec. 1924 - 2 June 1988

RAJ KAPOOR

Greatest Showman of Hindi Cinema

He appeared for the first time on screen in 1935 in the film Inquilab, when he was just 10-years-old

हिंदी फिल्मों के शौमैन थे अभिनेता राज कपूर, कभी पिता के स्टूडियो में लगाते थे झाड़ू

जब बॉलीवुड के दिग्गज अभिनेताओं की बात हो और राज कपूर का जिक्र न हो। ऐसा तो हो ही नहीं सकता है। उन्हें भारतीय फिल्म इंडस्ट्री का शोमैन कहा जाता था। आज ही के दिन यानी की 14 दिसंबर को राज कपूर का जन्म हुआ था। भले ही आज राज कपूर हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन वह अपनी फिल्मों के जरिए आज भी अपने फैंस के दिलों में जिंदा है। न सिर्फ भारत बल्कि विदेशों में भी उन्होंने भारतीय फिल्मों का डंका बजाया। अभिनेता होने के साथ ही राज कपूर निर्माता, निर्देशन, पटकथा, संपादन, गीत, संगीत में भी अपना इंट्रेस्ट रखते थे। आइए जानते हैं उनके जन्मदिन के मौके पर राज कपूर के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

पाकिस्तान के पेशावर में 14 दिसंबर 1924 को राज कपूर का जन्म हुआ था। राज कपूर के पिता पृथ्वीराज कपूर थियेटर में काम करने के चलते साल 1930 में मुंबई आ घए। उनके पिता भारतीय सिनेमा के सफल और मशहूर रंगकर्मी होने के साथ अभिनेता भी थे।

फिल्मी दुनिया में एंट्री

बता दें कि साल 1935 में राज कपूर ने फिल्म %इंकलाब% से अपने फिल्मी सफर की शुरूआत की थी। लेकिन इस फिल्म में उन्होंने बाल कलाकार का किरदार निभाया था। फिल्म %नीलकमल% से बतौर हीरो राज कपूर की किस्मत खुली थी। जहां राज कपूर को फिल्म इंडस्ट्री में कदम रखे सिर्फ एक साल हुआ था, वहीं साल 1948 में उन्होंने महज 24 साल की उम्र में अपना स्टूडियो खोल दिया था। इस स्टूडियो का नाम उन्होंने आरके फिल्म्स रखा था।

राज कपूर की फिल्म्स

राज कपूर ने हिंदी सिनेमा को एक से बढ़कर एक फिल्में दी हैं। जिनमें तीसरी कसम, चोरी चोरी, अनाड़ी, छलिया, सत्यम शिवम सुंदरम, आवारा, श्री 420, मेरा नाम जोकर, बरसात जागते रहो, राम तेरी गंगा मैली, प्रेम रोग और बॉबी फिल्में शामिल हैं। यह फिल्में आज भी दर्शकों को उतनी ही पसंद आती हैं, जितनी की उस दौर में पसंद आती थीं।

लेखन में भी थे पारंगत

राज कपूर ने न सिर्फ अभिनय बल्कि डायरेक्शन के साथ ही उन्होंने लेखन से भी लोगों को दीवाना बनाया था। इस बारे में शायद बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि एक समय पर राज कपूर अपने पिता पृथ्वीराज कपूर के स्टूडियों में काफी कम सैलरी पर काम करते थे। क्योंकि पृथ्वीराज कपूर को अपने बेटे की क्षमता पर बहुत ज्यादा यकीन नहीं था। इसी वजह से उन्होंने राज कपूर को स्टूडियो में झाड़ू लगाने के काम पर रखा था। इस काम के लिए राज कपूर को सैलरी के तौर पर सिर्फ 1 रुपए महीने की सैलरी मिलती थी। हांलाकि बाद में केदार शर्मा ने राज कपूर की प्रतिभा और कला को पहचानते हुए उन्हें फिल्म नीलकमल में बतौर हीरो कास्ट किया था।

अफेयर

फिल्म इंडस्ट्री में राज कपूर और एक्ट्रेस नरगिस की मोहब्बत के किस्से आम हुआ करते थे। कहा जाता था कि राज कपूर नरगिस से बेइंतहा मोहब्बत करते थे। लेकिन यह प्रेम कहानी अपने मुकाम तक नहीं पहुंच सकी। नरगिस के अलावा राज कपूर का नाम वैजयंती माला और जीनत अमान के साथ भी जुड़ा। हिंदी सिनेमा को तमाम नायाब फिल्में देने वाले राज कपूर अपने आखिरी समय में अस्थमा की बीमारी से ग्रसित थे। वहीं 2 जून 1988 को 63 साल की उम्र में अस्थमा के अटैक से राज कपूर का निधन हो गया। जिसके बाद राज कपूर के बेटों ऋषि कपूर, रणधीर कपूर और राजीव कपूर ने उनकी सिनेमाई विरासत को आगे बढ़ाने का काम किया।

चमकी तृप्ति की किस्मत, रातों-रात बनीं स्टार

बॉलीवुड फिल्म एनिमलके बारे में जितनी चर्चा की जाए उतनी कम है। कमाई के मामले में एनिमल ने एक सप्ताह में बॉक्स ऑफिस पर ताबड़तोड़ कलेक्शन हर किसी को हैरान कर दिया है। इस मूवी में सुपरस्टार रणबीर कपूर और बॉबी देओल की एक्टिंग की काफी सराहना हो रही है। दूसरी तरफ इस फिल्म में एक इंटीमेट सीन देकर बी टाउन एक्ट्रेस तृप्ति डिमरी ने सनसनी मचा दी है। एनिमल की रिलीज के बाद तृप्ति के इंस्टाग्राम फॉलोअर्स में काफी तेजी से बढ़ोत्तरी हुई है। रणबीर कपूर स्टारर फिल्म एनिमल 1 दिसंबर को सिनेमाघरों में रिलीज हुई। ऐसे में अब फिल्म की रिलीज को करीब 8 दिन का समय बीत चुका है। इतने दिनों के बाद सिनेमाघरों में इस फिल्म को अच्छा रिस्पॉन्स मिल रहा है। बात करें तृप्ति डिमरी के इंस्टाग्राम फॉलोअर्स के बारे में तो इंस्टेट बॉलीवुड की रिपोर्ट के मुताबिक एनिमल की रिलीज से पहले एक्ट्रेस के इंस्टा फॉलोअर्स की संख्या करीब 711 के थी। लेकिन %एनिमल% की रिलीज के बाद से इस संख्या में काफी भारी उछाल आया है। पिछले एक सप्ताह में तृप्ति डिमरी के करीब 2 मिलियन से ज्यादा इंस्टाग्राम फॉलोअर्स बढ़े हैं। मौजूदा समय में तृप्ति डिमरी की टोटल इंस्टा फॉलोअर्स की संख्या करीब 2.8 मिलियन फॉलोअर्स हैं और ये नंबर्स हर पल तेजी से आगे बढ़ रहे हैं।बेशक एनिमल में तृप्ति डिमरी का छोटा सा रोल है, लेकिन जिस तरीके की सक्सेस उनको मिल रही है, वो चर्चा की विषय बन गई है।

एनिमल से कामयाबी का स्वाद चखने वालीं तृप्ति डिमरी की काफी आलोचना भी हो रही है। एनिमल में तृप्ति ने रणबीर कपूर के साथ एक जबरदस्त इंटीमेट सीन दिया है। इस वजह से एक्ट्रेस का नाम लगातार सुर्खियां बटोर रही हैं इस सीन को लेकर ट्रोल होने पर तृप्ति डिमरी ने कहा है- उनको नहीं लगता की इसमें उन्होंने कुछ गलत किया है। फिल्म में किरदार के हिसाब से उन्होंने बस अपना काम किया है।

एक बार फिर कार्तिक संग सारा

भूल भुलैया 2 की ऐतिहासिक सफलता के बाद, कार्तिक आर्यन, अनीस बज्मी और भूषण कुमार भूल भुलैया 3 के साथ फ्रेंचाइजी को आगे ले जाने के लिए फिर से एकजुट हो रहे हैं। हॉरर कॉमेडी फरवरी 2024 में फ्लोर पर जाने के लिए तैयार है। फिल्म के 2024 की दिवाली पर सिनेमाघरों में दस्तक देने की उम्मीद है। रिपोर्ट के अनुसार, भूषण कुमार और अनीस बज्मी ने फिल्म के लिए कास्टिंग शुरू कर दी है, और इस बार पर्दे पर कार्तिक आर्यन अपनी एक्स गर्लफ्रेंड के साथ धमाल मचाने वाले हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, भूल भुलैया 3 कार्तिक आर्यन और सारा अली खान के पर्दे पर पुनर्मिलन का प्रतीक होगी। रिपोर्ट में एक सूत्र के हवाले से कहा गया है, भूल भुलैया, भूषण कुमार और कार्तिक आर्यन की प्रिय फ्रेंचाइजी है और वे भाग तीन के साथ दांव को और बढ़ाना चाहते हैं। उन्होंने स्क्रिप्ट को लॉक करने के लिए बेहतरीन रूप से काम किया है और अब फरवरी 2024 से फिल्म को फ्लोर पर ले जाने के लिए सभी उत्साहित हैं। कार्तिक आर्यन और सारा अली खान भी दोबारा साथ आने और अगले वर्ष फिल्म की शूटिंग शुरू करने के लिए उत्साहित हैं। रिपोर्ट में आगे लिखा गया है, कार्तिक और सारा बहुत अच्छे दोस्त हैं और वे भूल भुलैया 3 के साथ इस दोस्ती को पेशेवर मोर्चे पर आगे बढ़ाना चाहते हैं।

90.8 FM GOONJ
आपकी अपनी आवाज़

EK MULAQAT

90.8 FM

आमजन के सहयोग से ग्वालियर की यातायात व्यवस्था होगी दुरुस्तः डीएसपी अजीत सिंह

लोग नियमों का पालन करें तभी रूकेंगी सड़क दुर्घटनाएं, ट्रैफिक व्यवस्था दुरुस्त करना प्राथमिकता

गूँज ट्रैफिक विशेष में इस बार हम अपने पाठकों को ग्वालियर की ट्रैफिक व्यवस्था, यातायात नियमों के पालन और इसमें किए जा रहे सुधार आदि विषयों पर ट्रैफिक डीएसपी अजीत सिंह से रूबरू करा रहे हैं। गूँज से विशेष बातचीत में यातायात सुधार आदि विषयों पर चर्चा हुई पेश है बातचीत के मुख्य अंश।

मध्यप्रदेश एक्सीडेंट में नम्बर 2 पर है इस पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

जी बिल्कुल सही बात है हमारे देश में सबसे ज्यादा एक्सीडेंट के मामले में हम लोग दूसरे स्थान पर हैं हमारे मध्य प्रदेश में लगभग प्रतिवर्ष 11000 लोग रोड एक्सीडेंट में मारे जाते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए कई सारे प्रयास किए जा रहे हैं। कई प्रोग्राम चलाए जा रहे हैं जिनसे लोग जागरूक हों और यातायात नियमों का पालन करें जिससे सड़क दुर्घटनाओं को रोका जा सके।

लोग नियमों का पालन नहीं करते जिससे दुर्घटनाएं हो रही हैं इस पर आप क्या कहना चाहेंगे?

जी बिल्कुल हेलमेट और सीट बेल्ट हमारे देश में ट्रैफिक कोई थोड़ा सा टेक एण्ड ग्रांड में लेते हैं बहुत हल्के में लेते हैं। इसकी वजह यह भी है कि पूरी दुनियाभर में रोड एक्सीडेंट में लगभग 11 लाख लोग प्रतिवर्ष में रोड एक्सीडेंट में मारे जाते हैं और यह आंकड़ा डेढ़ लाख का हो जाता है । जहां दुनिया में 10 लाख लोग मर रहे हैं हमारे हिंदुस्तान में उसमें से सिर्फ 1.5 लाख का हो जाता है उसमे हम लोगो को डीवियुट कर रहे हैं। और जबकि हमारा वाहनों का जो आंकड़ा है कंट्रीब्यूशन ही है वो सिर्फ 1प्रश का है। दुनियाभर में जितने वाहन चल रहे हैं उसमें हमारे हिंदुस्तान का आंकड़ा एक परसेंट है लेकिन डेथ का परसेंट 10 प्रश है तो इसकी गंभीरता को हमे समझना होगा। हमें नियमों का पालन करना होगा। सड़क पर गाड़ी चलाते समय सिर्फ पुलिस के डर से नियम नहीं मानना बल्कि हमें खुद और परिवार की सुरक्षा के लिए नियमों का पालन करना होगा। तब ही हम सड़क दुर्घटनाओं पर कमी जा सकते हैं इसमें सभी आमजन को सहयोग जरूरी है।

ओवर स्पीडिंग पर क्या कार्यवाही की जा सकती है?

मैं ऐसे लोगों से यही कहना चाहूंगा कि ट्रैफिक रूल्स फॉलो करें और सबसे सही बात है कि जो यह एक्सीडेंट हो रहा है यह ज्यादातर ओवर स्पीडिंग के कारण हो रहे हैं और यह ओवर स्पीडिंग 80प्रश लोग बहुत कम एक ग्रुप के मतलब 18 से लेकर 35 साल की इस ग्रुप के लोग 80प्रतिशत लोग 18 साल से 40-45 साल के लोगो के बीच का ही ग्रुप है और यही ही जो लोग रोड़ों पर यही लोग चल रहे हैं यही घर का एक सदस्य घर चलाने वाला भी हो सकता है तो इसे हमे देखना होगा अगर इसे परिवार का ऐसा सदस्य अगर चला जाए तो परिवार का क्या होता है तो इन सब से बचने के लिए हेलमेट जरूर लगाएं और अपने परिवार और खुद को मुसीबतों से बचाइए।

आपने ट्रैफिक अवेयरनेस के लिए कैंपिंग चलाएं हैं उनके बारे में भी कुछ बताएं?

किसी शहर की या देश की ट्रैफिक व्यवस्था टीम ईस्ट पर काम करती है जिसमें पहले एजुकेशन हो गया फिर उसे एनफोर्समेंट और इंजीनियरिंग तो इन चीजों पर सभी काम करते हैं लेकिन जो एजुकेशन वाला जो पार्ट है वह अक्सर देखा है कि वह पीछे जाता है लेकिन यदि चालान कर रहें है लेकिन अगर चालान सुधरती होती तो साफ मुझे लगता है कुछ तो व्यवस्था होना चाहिए था लेकिन एजुकेशन ऐसा चीज है उसको एजुकेशन और अवेयरनेस जितने ज्यादा बढ़ेगी लोगों मे तो इस्थित्या और बेहेतर होगी।

ग्वालियर शहर में ब्लैक स्पॉट्स कौन-कौन से हैं जिनमे एक्सीडेंट जैसी दुर्घटनाएं होती हैं?

हमारे शहर में अंदर शहर के अंदर तो ऐसा नहीं है लेकीन शहर के बाहर जाते हैं डबरा जाते ही तो सिगरोरा चौराहा है वो हमारे ब्लैक स्पॉट है जोराशी घाटी है नैनागिरी चौराहा है इसके अलावा झांसी रोड थाना है इसके आस पास का इलाका भी ब्लैक स्पॉट है। इन इलाकों में काफ़ी एक्सीडेंट होते हैं और काफी लोग इन एक्सीडेंट में मार भी जाते हैं। इन जगहों पर आप जाते ही तो इसका भी ध्यान रखिए अपनी गाड़ी ज्यादा ओवर स्पीड में मत चलाइए। मेरा सभी शहरवासियों से निवेदन है की इन जगहों पर जाए तो अपनी लिमिट में चलें वाहन धीरे चलाएं।

शहर के व्यस्ततम चौराहा हो जैसे माधवगंज और महाराज बाड़ा पर ट्रैफिक की क्या स्थिति है?

हमने कुछ प्रयास किया था की त्योहारों के समय जाम की समस्याएं थी तो उसके लिए हमने डाइवोसिव प्लान बनाया कि बाड़े के चारों ओर से हम हैवी ट्रैफिक को फोर व्हीलर की 1 जाम लगाने में महत्वपूर्ण भूमिका है और जो रोंग साइड गाडियां आ रही थीं इनको भी रोकने का भी प्रयास हम कर रहे हैं अभी आने वाले समय मे हम इसका सक्ति से इसका पालन करवाएंगे और साइड से आने वाले पर चालान बनाएंगे।

ग्वालियर वासियों को क्या संदेश देना चाहेंगे?

गूंज एफएम के माध्यम से ग्वालियर वासियो को यह अपील करूंगा कि हम सभी यातायात नियमों का पूरी तरह से पालन करें और सीट बेल्ट और हेलमेट जरूर लगाएं लेकिन पुलिस के चालान की वजह से न लगाएं अपनी सुरक्षा के लिए लगाएं अपने परिवार को देखते हुए लगाएं और अपने परिवार के भविष्य के लिए लगाएं।

ग्वालियर में स्मार्ट पुलिसिंग से अपराधों में आएगी कमीः एएसपी अमृत मीणा

पुलिस आमजन के लिए हमेशा तत्पर, यातायात सुधार के लिए निरंतर हो रहे प्रयास

● गूंज न्यूज नेटवर्क, ग्वालियर

गूँज पुलिस विशेष में इस बार हम अपने पाठकों को एएसपी ग्वालियर अमृत मीणा जी से रूबरू करा रहे हैं। गूँज को दिए साक्षात्कार में उन्होंने ग्वालियर पुलिस द्वारा अपराधों की रोकथाम, स्मार्ट पुलिसिंग, ट्रैफिक में किए जा रहे सुधार एवं अपनी निजी जिंदगी के के बारे में हमसे बातचीत की। श्री मीणा ने अपनी जिंदगी के कुछ विशेष पहलुओं को भी गूँज से साझा किया पेश है उनसे बातचीत के मुख्य अंश।

आपके सफर की शुरुआत कैसे हुई?

बेसिकली मैं 1997 बैच का डीएसपी 2011 का एडिशनल एसपी हूं। मैंनें 1994 में ग्रेजुएशन किया था और इसके बाद मेरा सपना प्रशासनिक सेवा का हिस्सा बनकर कार्य करने का रहा था। इसमें सभी का काफी सपोर्ट रहा और कड़ी मेहनत और ईश्वर की कृपा और माता पिता के आर्शीवाद से आज यह मुकाम हांसिल किया।

अपराधों को कम करने क्या प्रयास किए जा रहे हैं?

यह बात सही है कि आजकल जो मीडिया का युग है विशेष रूप से सोशल मीडिया जिसके माध्यम से कितनी ट्रांसपेरेंसी है कि अब कोई भी चीज जो है। वह बच नहीं सकती है। कुछ जो पुराने समय के अपराध उनके कमियां आई हैं। इसका एक सबसे बड़ा एडवांटेज हर हाथ में मोबाइल है जैसे कि ग्वालियर चंबल जो रीजन है इसमें पहले डकैती की घटनाएं होती थीं, की घटना होती थी, किडनैप की घटनाएं होती थी और कई सारे पदमा जिनको हम बागी कहते थे वो भी भी क्षेत्र में मूवमेंट करते थे लेकिन अब यह संभव नहीं है और हम बड़े फक्र के साथ रहते हैं कि सरकार ने इसको बहुत गंभीरता पूर्वक लिया और मिशन को मोड पर लेकर जितने भी टारगेट बाकी थे उन सब का सफाया किया। और आज की तारीख में पूरे ग्वालियर चंबल रीजन में एक भी ऐसा कोई बाघी मूवमेंट नहीं रहा है। लेकिन यहां तक जनरल कैटेगरी की बात है तो चाहे वो प्रॉपर्टी ओपेंस हो या बॉडी ओपंस हो उसमे कहीं न कहीं समय के साथ इजाफा पाया और विशेष रूव से सड़क पर जो वाहन चलाते वक्त यातायात नियमों का उलघन करने के परिणाम स्वरूप जो भी सड़क दुर्घटना होती हैं उसमे भी इजाफा हुआ है।

अपराधियों पर लगाम लगाने क्या प्रयास किये जा रहे हैं?

वरिष्ठ अधिकारी लगातार हमको मार्गदर्शन देते रहते हैं रेगुलर हम लोगों की मीटिंग होती है तो जिससे क्षेत्र में

अपराधों में इजाफा होता है फिर इसकी मॉनीटरिंग भी की जाती है और उसके साथ-साथ इस बात का पता लगाने का प्रयास किया जाता है। कि इस क्षेत्र में गत वर्ष की तुलना में यदि अपराध बड़े हैं तो उसका कारण क्या है क्या स्थिति आ रही है यदि हम प्रॉपर्टी ऑप्रिंस की बात करें तो यह बात सही है कि समय समय पर इस तरह की घटनाएं प्रकाश में आती हैं तो फिर हम लोग जिस क्षेत्र में वारदातें बढ़ती हैं उसे क्षेत्र में लोगों को भी अवेयर करते हैं। रहा सवाल बॉडी ओपनस का तो अक्सर दो-तीन कारण होते हैं जैसा कि हम सब जानते हैं की जोरू हो या जमीन जिसके कारण से की बॉडी ओपनस की घटनाएं होती है तो हमारा प्रयास यही रहता है कि यदि कोई घटना होने के पहले पुलिस के संज्ञान में दोनों पक्षों की या तो काउंसलिंग कर सकते हैं या हैवी बॉन्ड ओवर कर सकते हैं कि जिससे कोई ऐसी आफरी स्थिति न होने पाए।

महिला सुरक्षा पर पुलिस ने क्या कदम उठाए हैं?

सरकार ने इस विषय को बहुत ही गंभीरता पूर्वक लिया है और पिछले कुछ वर्षों में महिला सुरक्षा को लेकर तमाम ऐतिहासिक कदम उठाए गए हैं। जिनमें सभी जिलों में महिला थानों की स्थापना है और इसके अलावा सभी थानों में कम से कम एक महिला ऑफिसर या उससे अधिक रहता है और जब भी महिलाओं से संबंधित कोई रिपोट आती है तो सुनवाई भी महिला ऑफिसर के द्वारा ही की जाएगी। और एफआईआर भी उनके ही द्वारा दर्ज की जाएगी। इसके अलावा माननीय न्यायालय की भी निर्देश हैं जिसमें जब भी कभी कोई लैंगिक अपराध से रिलेटेड चाहे ,354 का या 376 का प्रथम दर्ज होता है तो उसमें फिर माननीय न्यायालय के समक्ष 164 के स्टेटमेंट भी दर्ज होते हैं। यदि कोई पीड़ित महिला ने पुलिस के समक्ष किसी प्रकार की रिपोर्ट ना कि हो या कोई कमी रह गई हो तो न्यायालय के समाचार अपनी जो है फरियाद दर्ज कर सकती है। अपना स्टेटमेंट दे सकती हो उसे आधार पर जो है। जरूरत पड़ने पर उसमें क्षेत्र का वीजा होता है और उपयोग की भी जो है और कहीं ना कहीं इसे इसको बहुत सीरियस लिया जा रहा है। और महिला संबंधित अपराधियों हमें इन्वेस्टिगेशन का टाइम लिमिट भी तय किया गया है जिसकी वजह से अति शीघ्र माननीय न्यायालय में चालान पेश हुआ है और इसी प्रकार कुछ केसो को हम सनसनी खेत की प्रवृत्ति में भी रखते हैं कि उनमें हम सजा करा सके शासन के यह भी प्रदेश है कि महिला संबंधी मामलों में न्यायालय से समान और वारंट जारी होते हैं उनको भी प्राथमिकता की आधार पर तामिल किया जाए की अति शीघ्र उन केसों का डिसएबल हो सके।

ट्रैफिक सुधार को किस तरह देखते हैं?

ट्रैफिक अपने आप में एक बड़ी जिम्मेदारी है पुलिस अधीक्षक महोदय के द्वारा के अधिकारी को इसका प्रभारी बनाया है एक डीएसपी रैंक के अधिकारी हैं और अगर

90.8 FM GOONJ
आपकी अपनी आवाज़

EK MULAQAT

हम शहर ग्वालियर की बात करें तो यहां तीन ट्रैफिक थाने और लगभग 200 का यूनिफॉर्म फोर्स जो है इन थानों में उपलब्ध कराया गया है। कहीं ना कहीं हम लोग यातायात के नियमों का पालन नहीं करते हैं कि जिनके पास ड्राइविंग लाइसेंस नहीं है या अभी वह ऐसे बच्चे भी जो है सड़कों पर फराटे के साथ वाहन चलाते हुए देखे जा सकते हैं। जब भी रोड पर हम निकलते हैं तो हम सोचते हैं अरे यह जा रहे हैं 25 किलो का सफर है उसमें हेलमेट लगाने की क्या जरूरत है अब बुरा वक्त कोई कह कर नहीं आता अचानक ऐसी स्थिति बनती है कि हमको मालूम ही नहीं चलता और अचानक हमारा जीवन संकट में पड़ जाता है इसी प्रकार वाहन चालक जो है और साइड में देखने वालासीट बेल्ट न लगाने वाला तो इससे जो नुकसान होता है और आफरी घटना होती है तो जान चली जाती है मीरा आपके माध्यम से सभी से यह अनुरोध है कि कृपया यातायात नियम आपकी जान की सुरक्षा के लिए बनाए गए हैं लिहाजा उनका पालन करें।

तैयारी कर रहे विद्यार्थियों को क्या कहना चाहेंगे?

बेसिकली हमने जो तैयारी की थी तब से वर्तमान परिपेक्ष में कई बार एमपीसी ने अपने शेड्यूल चेंज किए हैं तो आज का जो शेड्यूल है पुराने शेड्यूल से बहुत ज्यादा बदल चुका है। लेकिन जैसा मेरा अपना तजुर्बा है। क्योंकि मेरे बच्चे वर्तमान में तैयारी कर रहे हैं एक मैं खुद भी कोचिंग सेंटर खोल रखा है। विद्यार्थियों के लिए जो कंपटीशन की तैयारी कर रहे हैं तो जो मेरा अनुभव है उसके आधार पर तय करना चाहूंगा और उसके लिए विद्यार्थियों को यह बताना चाहूंगा कंपीटिशन का दौर तो है। और हर कोई जो है प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से प्रशासनिक सेवाओं में आना चाहता है वह कड़ी मेहनत और धैर्य से तैयारी करे। क्योंकि यह जरूरी नहीं है कि एक बार में अपने फार्म भर दिया और आपका सिलेक्शन हो जाए। बहुत कड़ी मेहनत की जरूरत होती है। मैं ऐसा भी मानता हूं कि जिन लोगों को कोचिंग की सुविधा मिल रही है वह तो ठीक है जरूर लें लेकिन नहीं मिल रही तब भी कई सारे ऐसे लोग होते हैं जिन्होंने इतिहास बनाया है

अभी रिसेंटली एक मूवी आई है जिसको आप सब ने भी शायद देखा होगा ट्वेल्थ आईपीएस जो हमारे डीआईजी श्री मनोज शर्मा साहब के जीवन पर आधारित है और हमारे ग्वालियर चंबल डिवीजन के ही है तो उसमें भी यह बात सिद्ध होती है कि अगर लगन मेहनत और ईमानदारी से हम प्रयास करें तो फिर रिजल्ट जरूर मिलता है।

ग्वालियर वासियों को क्या संदेश देना चाहेंगे?

मेरा सौभाग्य की मुझे ग्वालियर जिले में सेवाएं देने का अवसर मिला है या इससे पहले भी हम मुरैना और भिंड जिले में अपनी सेवाएं दे चुके हैं यहां के लोग अच्छे हैं और विशेष रूप से यहां अगर पुलिस की प्वाइंट टेबल से बात करें तो सोशल पुलिसिंग की बड़ी आवश्यकता केवल इंस्पेक्टर पुलिसिंग से काम करें तो तो शायद इतना सफल न हो पाएं। जितना कि हम इंस्पेक्टर पुलिसिंग का माध्यमअपनाएं यद्यपि जागरुक हैं। लेकिन मैं ऐसा महसूस करता हूं कि पहली बार कुछ घटनाएं ऐसी होती है कि जिम की बहुत से लोग विचार नहीं करते और घटना को अंजाम देने के बाद एहसास होता है। रिसेंटली अभी शहर में ही एक घटना हुई है कि जिसमें एक पति ने अपने पत्नी की हत्या कर दी और बात केवल इतनी थी कि पत्नी उसकी बात बात पर टोकता थी उसको ऐसा लगता था कि उसका पति कई कई दिन घर नहीं आता इसका आशय यह भी हो सकता है। कि वह कहीं और संपर्क में हो तो जब पत्नी दोस्तों टोका तो पत्नी ने उसकी हत्या कर दी मतलब गुस्से में जाकर उसका गला दबा दिया के जो बच्चे हैं वह अकेले हो गए और पति जेल चला गया तो मैं सबसे पहले लोगों से यही आग्रह करूंगा कि कृपया कुछ भी बड़ा निर्णय लेने के पहले चार बार विचार करें यदि आप खुद निर्णय लेने की स्थिति में ना हो तो अपने से अधिक अनुभवी शमिता जो हमारे शुभचिंतक होते हैं उनसे परामर्श करें तो मुझे लगता है कि जो क्षणिक आवेश में होने वाली घटनाओं को रोक सकते हैं। यह देश हमारा है प्रदेश हमारा है शहर हमारा है जिम्मेदारी भी हमारी ही बनती है इसको हम अधिक और बेहतर कैसे बना सके खूबसूरत कैसे बना सके हम अपने मन से वचन से कर्म से शहर हमारा सुर्खियों में आए और हम अपने व्यवहार से हैं सहजता का आचरण करें और जियो और जियो की नीति पर चले जिससे हम भी प्रसन्न रहेंगे और हमारा पड़ोसी भी प्रसन्न रहेगा।

90.8 FM GOONJ
आपकी अपनी आवाज़

EK MULAQAT

·90.8 FM·

मां बाप बच्चों को सही संस्कार दें, लेकिन संपत्ति नाम न करें वह स्वयं अपनी संपति अपने नाम ही रखें

एक दूसरे के प्रति प्यार, समर्पण, विश्वास रखें, तो कोई कारण नहीं है की उस परिवार में पारिवारिक विवाद पैदा होः एड.दूदावत

गूँज विशेष में हम अपने पाठकों को सीनियर एडवोकेट अरविंद दूतावत जी से रूबरू करा रहे हैं। जिन्होंने गूँज को दिए विशेष साक्षात्कार में कानून से जुड़े कई अहम पहलुओं पर हमसे बातचीत की और हमारे पाठकों का मार्गदर्शन किया पेश हैं उनसे बातचीत के मुख्य अंश।

फैमिली डिस्ट्रीब्यूशन में कौन-कौन से कैसे हैं जो आते हैं?

फैमिली डिस्ट्रीब्यूट में मुख्य रूप से पति-पत्नी के आपस में जो विवाद होते हैं वह आते हैं कई बार पारिवारिक संपत्ति के और आजकल एक नया विषय आ गया है विवादों का वह है यह देखें कि जो बच्चे हैं वयस्क हो जाने पर जब वह अपने नौकरी में अपने व्यवसाय में लग जाते हैं तो अपने बुजुर्ग मां को छोड़ देते हैं। या उन्हें अंदेखी करते हैं। या उनके साथ दुर्व्यवहार करते हैं। तो उसके लिए एक नया कानून आ गया है जिसमें वह सक्षम न्यायालय में जाकर अपने लिए जो भी उनको कष्ट होता है जो भी उनके साथ विवाद किए जाते हैं वहा जाकर उनके निर्वाचन कर सकते हैं।

पारिवारिक विवाद बढ़ने का कारण क्या है?

जहां तक मैं समझता हूं कि आज समाज कारण से परेशान है या उसमें एक सोच उत्पन्न हुई है वह पति-पत्नी

के विवादों में जो संख्या में इजाफा हो रहा है। बढ़ोतरी हो रही है वह एक ऐसा कारण है कि आपका जो रहना चाहिए ऐसे ही विवादों के बारे में ज्यादा चिंता चिंतन होना चाहिए। जो पति-पत्नी के बीच में होते हैं अगर ऐसे विवाहों से आपका मंतव्य है तो इन विवादों का बढ़ाने का कारण हिंदुस्तान में यह है कि पति-पत्नी का आपस में सामाजिक की कमी उनमें आपसी विश्वास की कमी उनमें समर्पण की भावना की कमी है। देखिए हम अपने भारत में रह रहे हैं भारत में जो हमारी सभ्यता है जो हमारी धार्मिक आस्था है उसमें विवाह को एक लड़के और लड़की के विवाह को केवल एक समझौता नहीं माना जाता एक ऐसा बंधन माना जाता है जो यह आज भी यह सब इसको विश्वास करते हैं यह विवाह संबंध या आप इसका एक दूसरे के प्रति जो वह है वह भगवान तय करता है। और उन्हें ही एक दूसरे को बनाया होता है। जब ऐसे संबंध हम मानते हैं तो इनको लाइफ लोन यह रहे इसका दायित्व पति-पत्नी के ऊपर होता है और आपसी सामाजिक एक दूसरे के प्रति समर्पण और एक दूसरे के प्रति विश्वास की भावना ऐसे हमारे हिंदू समाज के दांपत्य जीवन का आधार है इसमें कमी होने के कारण हो जाते हैं इन विवादों को की संख्या में बढ़ोतरी हो रही है जो चिंतनीय है।

क्या इसका समाधान हो सकता है कि पारिवारिक विवाद आए ही नहीं?

देखिए इसमें पति-पत्नी के साथ दोनों के मां-बाप का और समाज का काफी महत्वपूर्ण भूमिका रह सकती है तो सबसे पहली बात हम अपने बच्चों को ऐसे संस्कार दें। चाहे वह बेटा हो या बेटी अगर शादी होने के बाद उसकी बेटा है तो जो बेटी घर में आएगी उसको पूरा सम्मान वह दें पूरा समर्पण उसके पति रखें और पूरा विश्वास करें और ऐसा ही बेटी के मां-बाप को चाहिए। कि अपनी बेटी में वह ऐसे संस्कार दें चाहे उसको कितना ही पड़ा है इतना ही लिखा है लेकिन सामाजिक मूल्यों की उसमें प्रसूतन होना बहुत जरूरी है।

और यह केवल मां-बाप ही कर सकते हैं। पहले हमारे यहां एक जो परिवार होते थे संयुक्त परिवार होते थे कब बच्चे बड़े हो जाते थे जो परिवार होते थे संयुक्त परिवार होते थे कब बच्चे बड़े हो जाते थे तब उनके विवाह संस्कार हो जाते थे मालूम नहीं पड़ता था अब एकल परिवार हो गए हैं। भूमिका मां-बाप की हो गई है कि वह अपने बच्चों का कैसा लालन पालन करते हैं उनको क्या शिक्षा देते हैं स्कूलों में पहले ऐसी शिक्षा दी जाती थी जो बिल्कुल खत्म हो गई इसलिए मां-बाप का दायित्व बहुत बढ़ गया है वह अपने मां-बाप अपने बच्चों को ऐसे संस्कार दें कि वह अपना संस्कारित जीवन दे सके और आने वाले जीवन में जो उनके बच्चे पैदा हो उनको भी वह वैसा ही जीवन है। वैसा ही संस्कार दें तो संस्कार ही प्रमुखता से अगर अच्छे दिए जाएं वैसा ही संस्कार दें तो संस्कार ही प्रमुखता से अगर अच्छे दिए जाएं इन विभागों में कमी लाई जा सकती है।

कम समय में सम्पत्ति विवाद में केसे करेक्शन करे?

संपत्ति विभाग होने का भी यही कारण है कि आपस में सामाजिक नहीं होना इसमें सबसे पहले तो मैं यह सलाह देना चाहूंगा कि जो भी पेरेंट्स है जो संपत्ति के कर्ताधर्ता हैं या उनके नाम से संपत्ति है। अगर उनका एक से अधिक बेटा है बेटी है तो उनको चाहिए कि अपने जीवन काल में वह उसे संपत्ति का वसीयत कारण और जिसको जितना देना चाहिए उसको इस प्रकार से वसीयत करते हैं और नियम के अनुसार लिखी जाती है उसमें जो भी अपेक्षाएं कानूनी होती है उसकी पूर्ति की जाती है तो इस प्रकार के विवाद होने की जा सकता है कि अगर ऐसी संपत्ति जिनमें भारत की मृत्यु हो जाती है विवाद उसके बाद होता है तो उसमें भी जो उसके शेरहोल्डर्स है। उनको अपने आपसी समझ से बैठकर उसका बटवारा करना चाहिए इमानदारी के साथ पैसे विवाद उत्पन्न नहीं होंगे नोटिस देने की आवश्यकता होती है। और उसके बाद भी अगर निराकरण नहीं होता तो निश्चित रूप से न्यायलय में लग जाते हैं।

अगर कोई दंपत्ति म्युचुअल कंसल्ट के साथ तलाक लेता है तो उसे कितना समय लग जाता है और उसे कोन से कानूनी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है?

अपने हिंदू मैरिज एक्ट प्रचलित है और उसमें प्रावधान है कि अगर म्युचुअल कंसेंट से किसी को तलाक लेना है दंपति को तो उसके विवाह को कम से कम 12 मा अर्थात एक वर्ष हो गया हो वही मी कंसल्टेंसी सकते हैं इसके लिए दोनों को आवेदन देना होता है जो फैमिली कोर्स बनाए हुए हैं उसमें और आज जैसे वह प्रकरण पेश किया जाता है तो उसमें रजिस्टर होने के बाद 6 महीने का समय दिया जाता है दोनो दंपत्ति को सोचने के लिए अगर कुछ भी सुझाव हो तो वो उसे सुधारे।

तलाक के विवादों से बच्चो के मानसिक तौर पर प्रभावित होते ही इसे बच्चो के क्या अधिकार है?

यह कहना आपका बिल्कुल सही है कि तलाक से पति-पत्नी को अलग होते हैं कि हम स्वतंत्र होकर अच्छा जीवन यापन करेंगे लेकिन वह भूल जाते है अगर उनकी कोई औलाद है उनके कोई बच्चे हैं तो तलाक के बाद उनका क्या होगा तलाक के मुकदमे अधिकतर कितने होते हैं मैं कह सकता हूं कि हंड्रेड परसेंट एगो के कारण होते हैं पति का अपना ही इगो होता है पत्नी का अपना ही इगो होता हैवह ये नही सोचते कि हमारे आपसी संबंध से हमारे विवाह से जो बच्चे पैदा हुए हैं उनका क्या कसूर है कि वह इस यातना को झेले ।यातना शब्द में इस्तेमाल कर रहा हूं कुछ लोग इसे गलत ठहरा सकते हैं हम जिस समाज में रह रहे हैं जिस परिवेश में रह रहे हैं बच्चों का माता-पिता के बिना रहना की बहुत कठिन हो जाता हैं में पिता के बिना जीवन यापन करना पड़ेगा किसी बच्चे को अपने मां-बाप से अलग होकर रहना पड़े वह समझ सकता है जिसने उसको भोगा हो विशेष रूप से जब बिल्कुल बाल्यावस्था होती है तो कानून भी उसकी पूरी तरह से इसको सेफगार्ड नहीं कर पाया है यद्यपि यह प्रावधान है तो एक एज 5 साले लिए अगर बच्चे हैं तो उसकी मां की कस्टडी में दिया जाना चाहिए क्योंकि मां अच्छे से देखभाल कर सकती है एक मिडिल क्लास फैमिली भी है तो एक बच्चा भी है तो उसके लिए उसकी पढ़ाई के लिए 10 15000 रुपए महीना खर्च होना मामूली बात है तो यह सब साधन है या नहीं है इसपर निर्भर करता है अंत में सब बातो का निचोड़ यही है इसमें बच्चों की जो दुर्दसा होती है अगर मां-बाप को पहले से सोच ले तो शायद तलाक ना हो।

पारिवारिक विवादों में जो बच्चे अपने माता - पिता को अलग कर देते हैं तो ऐसे में उन माता - पिता के क्या अधिकार है?

जिस बच्चों के लिए मां-बाप अपने सारे शौक अपनी पूरी जिंदगी न्योछावर कर देते हैं अपनी सारी जमा पूंजी न्योछावर कर देते है और उनकी परवरिश करते है और जब वह बच्चे किसी लायक हो जाते हैं तो अपने अहंकार में या अपने गलत सोच के कारण अपने मां-बाप का तिरस्कार करते हैं और उनको डर-डर की ठोकर खाने के लिए मजबूर कर देते हैं तो ऐसी स्थिति को देखते हुए हमारे मध्य प्रदेश में भारत में एक कानून लाया गया है उसमें ऐसे बुजुर्ग दंपतियों के अधिकारों के संरक्षण के लिए सबसे पहले यह कहना चाहूंगा अगर मां-बाप बुजुर्ग है उनके बेटे हो गए हैं बेटी हो गई है जो उनके साथ रहते हैं या अलग रहते हैं सबसे पहले तो उनको उनके पास जो भी उनकी संपति है वह न देकर अपने ही नाम से रहना देना चाहिए अपने बच्चों के नाम से हस्तांतरित नहीं करना चाहिए तो ऐसे केसों में देखस गया हैं कि प्रॉपर्टी मां-बाप से अपने नाम से हस्तांतरित करी जाती है मां फिर वह बच्चे उनकी सेवा करना शुरू कर देते हैं जब तक प्रॉपर्टी मां-बाप के नाम से तब तक तो वह उनकी खूब सेवा करते ही यह एक जनरल बात है में भी इस बात को मानता हूं की मां बाप प्यार में अपने बच्चों को सही संस्कार दे जो आवश्यक संस्कार है लेकिन संपत्ति नाम न करे वह स्वम अपनी संपति अपने नाम ही रखें।

आप ग्वालियर वासियों को जाते-जाते क्या कहना चाहेंगे?

मैं बस इतना कहना चाहूंगा कि हम सनातन हिंदू धर्म के अनुयाई हैं। उसे सनातन हिंदू धर्म में समाज और परिवार में इन दोनों को महत्व दिया गया है परिवार का मतलब केवल एक या दो प्राणी से नहीं होता परिवार का मतलब होता है एक साथ उसने जितने भी बंदे रह रहे हैं उन सबका आपसी समाजस आपसी मेल मिलाप और एक दूसरे के लिए समर्पण अगर हम अपने परिवार को एक दूसरे के प्रति समर्पण रखेंगे एक दूसरे के प्रति अटूट विश्वास रखेंगे और एक दूसरे के लिए काम करेंगे तो कोई कारण नहीं है की उसे परिवार में पारिवारिक विवाद का कारण पैदा हो इसीलिए मेरा सभी से यह गुजारिश है कि हम अपने परिवार के साथ रहें अपने परिवार के साथ बंधे रहें और अपने परिवार के सदस्यों का मान सम्मान करें और इन सब का ध्यान रखें बिना किसी झगो के।

90.8 FM GOONJ
आपकी अपनी आवाज़

EK MULAQAT

90.8 FM

महिलाओं की सुरक्षा के लिए पुलिस हमेशा तत्पर: एडीशनल एसपी निरंजन शर्मा

आपके सफर की शुरूआत कैसे हुई

हां मेरे पुलिस की सफर की जानी है 1890 इंस्पेक्टर से भर्ती हुआ पुलिस में और मेरा इंस्पेक्टर का प्रमोशन और डीएसपी का प्रमोशन के बाद में अभी एडिशनल एसपी ग्वालियर पोस्टिंग हुई है मेरी।

महिला सुरक्षा पर क्या कहना चाहेंगे

महिलाओं-बेटियों की सुरक्षा के लिए हमेशा पुलिस तत्पर है। बच्ची कोई भी महिला अगर उसको रास्ते में कोई परेशान करता है तो ग्वालियर पुलिस की एक बहुत बढ़िया पहल की गई है बेटी की बेटी हमने जगह-जगह जितनी भी कोचिंग इंस्टिट्यूट है स्कूल कॉलेज और हर थाना क्षेत्र हमने बेटी की बेटी खोल रखी है वहां पर वह महिला अपना नाम भी नहीं देते और अपनी समस्या इसके अलावा 10-90 पुलिस हेल्पलाइन है मध्य प्रदेश पुलिस का उसे पर आप फोन लगाकर अपनी शिकायत दर्ज कर दे हमारी वह लगातार शहर में दो निर्भय पेट्रोलिंग है वह लगातार भ्रमण करती है आप उसमें टोटल महिला अधिकारी है

स्कूल कॉलेज, कोचिंग इंस्टिट्यूट, हर थाना क्षेत्र में लगाई गई बेटी की बेटी

आप महिला अधिकारी को अपनी कंप्लेंट कर सकते हैं हर थाने में हमारी ऊर्जा टेस्ट है उसमें सिर्फ महिलाओं द्वारा ही शिकायत सुनी जाती हैऔर कार्यवाही की जाती है जिस भी कोई भी बच्ची को या कोई भी महिला को अपनी बात बताने में कोई मतलब पहले चुकी थानों में महिला स्टाफ नहीं होता था तो बड़ी दिक्कत आती थी तो उसके लिए हमारे मध्य प्रदेश पुलिस द्वारा हमारे मध्य प्रदेश पुलिस की एप्लीकेशन है उसपर कंप्लेन कर सकते है।

ग्वालियर वासियों को क्या संदेश देना चाहेंगे?

ग्वालियर वासियों से मैं यही कहना चाहूंगा कि अपराधों को रोकने में पुलिस की मदद करें। अगर आपके आसपास कोई अपराध घटित होता है तो आप पुलिस को बताएं पुलिस आपकी मदद के लिए हमेशा तत्पर है।

विजयश्री पर हार्दिक शुभकामनाएं

ग्वालियर विधानसभा-15 से श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर, ग्वालियर पूर्व से डॉ. श्री सतीश सिंह सिकरवार
ग्वालियर दक्षिण से श्री नारायण सिंह कुशवाह, ग्वालियर डबरा से श्री सुरेश राजे,
भितरवार से श्री मोहन सिंह राठौर, ग्वालियर ग्रामीण श्री साहब सिंह गुर्जर को

विधानसभा चुनावों में ऐतिहासिक शानदार विजयश्री प्राप्त करने पर

गूँज मीडिया ग्रुप की ओर से

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

जन-जन तक पहुंची आपकी अपनी आवाज़

GOONJ

National News Magazine

सदस्यता फॉर्म

देश के सभी प्रदेशों एवं मध्य प्रदेश के सभी जिलों में प्रसारित ग्वालियर चम्बल अंचल की लोकप्रिय पत्रिका गूंज की वार्षिक सदस्यता ग्रहण करें

(मात्र 2500 रुपए में वार्षिक सदस्य बनें)

गूंज पत्रिका पढ़ें पूरे एक साल

पत्रिका में अपने संस्थान/संस्था/फर्म/बर्थ-डे/मैरिज एनीवर्सरी/पुण्यतिथि, अथवा कोई भी विज्ञापन पत्रिका में प्रकाशित करवाएं (साइज एक चौथाई) एक बार बिल्कुल फ्री

मैं गूंज नेशनल न्यूज मैगजीन की सदस्यता प्राप्त करने का इच्छुक हूं कृपया मुझे पत्रिका की सदस्यता प्रदान करें।

नाम.....जन्म तिथि.....व्यवसाय.....

राज्य.....शहर.....संपर्क/पता.....

.

हस्ताक्षर

website : www.goonjgwl.com, Email : goonjgwl@gmail.com

Address : E-69, Harishankarpuram, Gwalior (M.P.) Cont-7880075908 7880040908